संगीत राग-दर्शन

भाग १

(संशोधित तथा परिवर्धित संस्करण)

संपादक

श्री वसंत वामन ठकार

एम्० ए०, संगीत प्रभाकर

मंत्री, गांधर्व महाविद्यालय मंडल प्रकाशन, प्रयाग

प्रथम संस्करण के संपादक

स्व० पं० नारायण मोरेश्वर खरे

संशोधित तथा परिवर्धित चतुर्थ संस्करण ३०००
१९५१

मूल्य
दो रुपया आठ आना

प्रकाशक—गांधर्व महाविद्यालय मंडल प्रकाशन, प्रयाग
मुद्रक—रामप्रताप त्रिपाठी, सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

परमपूज्य स्वर्गीय पंडित विष्णु दिगम्बर जी पलुस्कर

जन्म—कुरुंदवाड	निधन—मिरज
तिथि—श्रावण शुद्ध १५, संवत् १९२९	तिथि—श्रावण शुद्ध अष्टमी
(राखी पूर्णिमा)	संवत् १९८८
रविवार, ता० १९ अगस्त, १८७२	शुक्रवार, ता० २१ अगस्त, १९३१

परमपूज्य गुरुवर्य स्वर्गीय पंडित विष्णु दिगम्बर
पलुस्कर जी के चरणकमलों में सविनय और
सादर समर्पित जिनकी तपस्या और साधना
से मृतप्राय संगीतकला का पुनरुद्धार
हुआ है और जिनकी शिक्षा एवं शुभा-
शीषों के फलस्वरूप हमें इस अमर
कला का कुछ परिचय प्राप्त हो
सका है तथा जिनकी प्रेरणा
एवं कृपा से ही प्रस्तुत
कार्य भी संपन्न हो
रहा है।

उद्देश्य

आधुनिक तथा प्राचीन संगीत साहित्य को प्रकाशित करना तथा संगीत की क्रमिक पुस्तकें शुद्ध और शास्त्रीय सिद्धांतों के अनुसार तय्यार करके प्रकाशित करना।

भूमिका

"संगीत राग दर्शन" के प्रथम भाग का चतुर्थ संस्करण संशोधित और परिवर्द्धित रूप में संगीत प्रेमियों एवं विद्यार्थियों की सेवा में उपस्थित करते हुए, आज हमें अत्यंत हर्ष होता है। इधर बहुत दिनों से इस पुस्तक के पुनर्मुद्रण की मांग थी, परन्तु कुछ विशेष कठिनाइयों के कारण हम इस पुस्तक को इसके पूर्व प्रकाशित करने में असमर्थ रहे। आशा है, पाठक हमें इस विलंब के लिए क्षमा करेंगे।

इस संस्करण में हमने उत्तर प्रदेश के हाईस्कूल के संगीत-पाठ्यक्रम, प्रयाग संगीत समिति के द्वितीय वर्ष (ज्यूनियर डिप्लोमा) तथा संगीत की अन्य समकक्ष परीक्षाओं के पाठ्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए, कुछ आवश्यक संशोधन किए हैं। कुल १९ रागों में हमने करीब-करीब १२० गीत दिए हैं जिनमें सरगम, राग लक्षण, विलंबित ख्याल, द्रुत ख्याल (तीन ताल, एक ताल, इ०), ध्रुपद, धमार, होली, ठुमरी, भजन आदि का समावेश है। हर राग के साथ उसका विवरण, स्वरविस्तार और तानों सहित दिया गया है। साथ ही साथ विषय-प्रवेश में कुछ रागों का तुलनात्मक विवरण भी है। कुछ अलंकार भी दिए गये हैं जिनके अभ्यास से तानें बनाना तथा गाना सुगम हो सकता है।

सर्वश्री शंकरराव व्यास, बी आर० देवधर, वि० ना० पटवधन, डी० व्ही० पलुस्कर, विनय चन्द्र मौद्गल्य, स० द० आपटे

ने अपनी कुछ अमूल्य स्वर रचनाएं तथा गीत देकर हमे अत्यंत अनुग्रहीत किया है। गीत इस प्रकार हैं :—

(१) श्याम सुंदर—राग तिलंग—श्री शंकर राव व्यास कृत
(२) नयना बसी—राग बिलावल— " " "
(३) गावत सखी—राग कालिंगड़ा— " " "
(४) काहे सजत अंग—राग कालिंगड़ा— " " "
(५) अरेमन मान—राग कालिंगड़ा—श्री० विनयचन्द्र मौद्गल्य कृत (श्री० वि०ना०पटवर्धन कृत "राग विज्ञान")
(६) मूरख छांड़—राग कालिंगड़ा—श्री० वि० ना० पटवर्धन कृत "राग-विज्ञान"
(७) जोगी मतजा—राग भैरवी—श्री० वि० ना० पटवर्धन कृत "राग-विज्ञान"
(८) कान्ह मुरली वाले—राग तिलंग—श्री० बी० आर० देवधर कृत "राग बोध"
(९) आज कैसी ब्रिज में—राग काफी—श्री० बी० आर० देव-धर कृत "राग बोध"
(१०) कैसे रहूँ घर आज—राग काफी—श्री० बी० आर० देवधर कृत "राग बोध"
(११) टेर टेर रसना—राग काफी—श्री० डी० व्ही० पलुस्कर कृत
(१२) प्रेम नदी के तीरा—राग भीमपलासी—शब्दकार—पं० बालकृष्ण राव, स्वरकार-श्री० स० द० आपटे

इस पुस्तक में छपे सभी राग लक्षण, इस पुस्तक के प्रथम संस्करण के संपादक स्वर्गीय पंडित नारायण मोरेश्वर खरे द्वारा रचित हैं।

हम श्री रामनरेश त्रिपाठी तथा पं० बालकृष्ण राव को, जिन्होंने अपनी अमूल्य रचनाओं को छापने की हमें अनुमति दी है, विशेष धन्यवाद देते हैं।

श्री महेश नारायण सक्सेना, तथा गांधर्व महाविद्यालय मंडल, प्रयाग के सदस्यों की विविध प्रकार की सहायता के लिए हम उनके भी आभारी हैं।

इस पुस्तक को शीघ्र छपवाने का प्रबंध करने में, और छपाई तथा कागज संबधी अन्य कार्यों में, जो सहायता और सहयोग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन मुद्रणालय के व्यवस्थापक श्री सीतारामजी गुंठे, तथा उनके सहकारियों द्वारा प्राप्त हुआ है उसके लिए हम उन्हें जितना धन्यवाद दें वह कम ही होगा।

पुस्तक की आकार-वृद्धि तथा महँगाई के कारण हमें लाचारी से इस पुस्तक का मूल्य बढ़ाना पड़ा है। इस पुस्तक से संगीत-प्रेमी तथा विद्यार्थी पूरा लाभ उठा सकेंगे, ऐसी हमें आशा है और यदि इसके द्वारा उनकी कुछ भी सेवा हो सकी, तो मैं अपने परिश्रम को सार्थक और सफल समझूँगा।

शुक्रवार, २४ अगस्त, १९५१
श्रावण कृष्ण अष्टमी सं० २००८,
१०७, बाई का बाग, अलाहाबाद

वसंत वामन ठकार
मन्त्री, गांधर्व महाविद्यालय
मंडल प्रकाशन, प्रयाग

सांकेतिक चिह्नों का परिचय

` विकृत स्वर (तीव्र, कोमल) जैसे—रे॒ ग॒ ध॒ नी॒ म॑

. मंद्र सप्तक जैसे—प़ ध़ नी़

। तार सप्तक जैसे—सां रें गं मं

ऽ उच्चारण (स्वरों का) जैसे—सा ऽ रे ऽ

. उच्चारण (अक्षरों का) जैसे—सा ऽ नि
रा . म

⌒ मींड जैसे—प ग
म म॑

कणस्वर स्वरों के ऊपर दिये गये हैं जैसे—ग प

~ गुरू = २ मात्रा जैसे—सा रे

— लघु = १ मात्रा जैसे—सा रे ग

० द्रुत = ½ मात्रा जैसे—सा रे ग म

◡ अणुद्रुत = ¼ मात्रा जैसे—सारेगम

◡◡ अणुअणुद्रुत = ⅛ मात्रा जैसे—सारेगमपधनीसां

’ विश्रांति जैसे—सा ’ रे

१ सम जैसे—सा ऽ रे
रा . म
१

+ खाली जैसे—सा ऽ रे
रा . म
+

(अन्य तालियों के लिए मात्रा के क्रमांक का उपयोग इसी प्रकार होगा)

। एक आवर्त पूर्ण।

॥ गीत के विभाग की समाप्ति।

इस पुस्तक में आए हुए तालों का परिचय

(१) तीनताल—मात्रा १६ विभाग ४ (४-४ मात्रा के) ताली १-५-१३ और खाली ९ पर

मात्रा :—१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ |
बोल :—धा धिं धिं धा धा धिं धिं धा धा तिं तिं ता ता धिं धिं धा |
१ ५ + १३

(२) झपताल—मात्रा १०, विभाग ४ (२-३-२-३ मात्रा के) ताली १-३-८ पर और खाली ६ पर

मात्रा :—१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० |
बोल :—धी ना धी धी ना ती ना धी धी ना |
१ ३ + ८

(३) चारताल (पखावज का ताल)—मात्रा १२, विभाग ६ (२-२ मात्रा के) ताली १-५-९-११ पर और खाली ३-७ पर

मात्रा :—१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ |
बोल :—धा धा दिं ता किट धा दिं ता किट तक गदि गन |
१ + ५ + ९ ११

(४) एकताल मध्यलय—मात्रा १२, विभाग ६ (२-२ मात्रा के) ताली १-५-९-११ पर और खाली ३-७ पर

मात्रा :—१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ |
बोल :—धिं धिं धा त्रक तू ना क त्ता धिं त्रक धी ना |
१ + ५ + ९ ११

(५) एकताल विलंबित—मात्रा १२, विभाग ६ (२-२ मात्रा के) १-५-९-११ पर और खाली ३-७ पर

मात्राः—१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ |
बोलः—धिंधिं धागि तिरिकिट तूना कत्ता धागि तिरिकिट धीना |
१ + ५ + ९ ११

(६) तीव्रा (पखावज का ताल)—मात्रा ७, विभाग ३ (३-२-२ मात्रा के) ताली १-४-६ पर, खाली नहीं होगी

मात्राः—१ २ ३ ४ ५ ६ ७ |
बोलः—धा दिं ता किट तक गदि गन |
१ ४ ६

(७) रूपक—मात्रा ७, विभाग ३ (३-२-२ मात्रा के) सम और खाली पहली मात्रा पर और ताली ४-६ पर

मात्राः—१ २ ३ ४ ५ ६ ७ |
बोलः—ती ती ना धी ना धी ना |
+ ४ ६

(८) दादरा मात्रा ६, विभाग २ (३-३ के) ताली १ और खाली ४ पर

मात्राः—१ २ ३ ४ ५ ६ |
बोलः—धा धीना धा ती ना |
१ +

(९) कहरवा मात्रा ४, विभाग ४ ताली १-२-४ पर और खाली ३ पर

मात्राः—१ २ ३ ४ |
बोलः—धागि नति नक धिन |
१ २ + ४

(१०) दीपचंदी मात्रा १४, विभाग ४ (३-४-३-४ मात्रा के) ताली १-४-११ पर और खाली ८ पर

मात्राः—	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोलः—	धा	धिं	ऽ	धा	गे	तिं	ऽ	ता	तिं	ऽ	धा	गे	धिं	ऽ
	१			४				+			११			

(११) सूलताल/या सूरफ़ाक (पखावज का ताल) मात्रा १०, विभाग ५ (२-२ मात्रा के) ताली १-५-७ पर और खाली ३-९ पर

मात्राः—	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
बोलः—	धा	धा	दिं	ता	किट	धा	किट	तक	गदि	गन
	१		+		५		७		+	

(१२) धमार (पखावाज का ताल) मात्रा १४, विभाग ४ (५-२-३-४ मात्रा के) ताली १-६-११ पर और खाली ८ पर

मात्राः—	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोलः—	क	धि	ट	धि	ट	धा	ऽ	क	ति	ट	ति	ट	ता	ऽ
	१					६		+			११			

(१३) विलंबित तीनताल (तिलवाड़ा) मात्रा १६, विभाग ४ (४-४ मात्रा के) ताली १-५-१३ पर खाली ९ पर

मात्राः—	१	२	३ ४	५	६	७	८	९	१०	११ १२
बोलः—	धा	तिरिकिट	धिंऽधि	ना	ना	तिं	तिं	ता	तिरिकिट	धिंऽधि
	१			५				+		

१३	१४	१५	१६
ना	ना	धिं	धिं
१३			

(१४) पंजाबी त्रिताल—मात्रा १६, विभाग ४ (४-४ मात्रा के) ताली १-५-१३ पर और खाली ९ पर

मात्राः—१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११
बोलः—धा गधि ऽग धा धागिन धिऽ ग धा ता कतिऽग
१ ५ +

मात्राः—१२ १३ १४ १५ १६
बोलः—धा धागिनधिऽग धा |
१३

(१५) भूमरा—मात्रा १४, विभाग ४ (३-४-३-४ मात्रा के) ताली १-४-११ पर और खाली ८ पर

१ ला प्रकार

मात्राः—१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
बोलः—धिं ऽधा तिरिकिट धिं धिं धागि तिरिकिट तिं
१ ४ +

मात्राः—९ १० ११ १२ १३ १४
बोलः—ऽता तिरिकिट धिं धिं धागि तिरिकिट |
११

२ रा प्रकार

मात्राः—१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
बोलः—धिं धा तिरिकिट धिं धिं धागि तिरिकिट तिं ता
१ ४ +

मात्राः—१० ११ १२ १३ १४
बोलः—तिरिकिट धिं धिं धागि तिरिकिट |
११

अलंकार अभ्यास

१. सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनी, धनीसां।
सांनीध, नीधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा।

२. सारेगम, रेगमप, गमपध, मपधनी, पधनीसां।
सांनीधप, नीधपम, धपमग, पमगरे, मगरेसा।

३. सारेगग, रेगमम, गमपप, मपधध, पधनीनी, धनीसांसां।
सांनीधध, नीधपप, धपमम, पमगग, मगरेरे, गरेसासा।

४. सासारेग, रेरेगम, गगमप, ममपध, पपधनी, धधनीसां।
सांसांनीध, नीनीधप, धधपम, पपमग, ममगरे, गगरेसा।

५. साग, रेम, गप, मध, पनी, धसां।
सांध, नीप, धम, पग, मरे, गसा।

६. सारेसाग, रेगरेम, गमगप, मपमध, पधपनी, धनीधसां।
सांनीसांध, नीधनीप, धपधम, पमपग, मगमरे, गरेगसा।

७. सारेगसा, रेगमरे, गमपग, मपधम, पधनीप, धनीसांध।
धसांनीध, पनीधप, मधपम, गपमग, रेमगरे, सागरेसा।

८. सागरेसा, रेमगरे, गपमग, मधपम, पनीधप, धसांनीध।
धनीसांध, पधनीप, मपधम, गमपग, रेगमरे, सारेगसा।

९. सारेगरेग, रेगमगम, गमपमप, मपधपध, पधनीधनी, धनीसांनीसां।
सांनीधनीध, नीधपधप, धपमपम, पमगमग, मगरेगरे, गरेसारेसा।

१०. सागरेग, रेमगम, गपमप, मधपध, पनीधनी, धसांनीसां।
सांनीसांध, नीधनीप, धपधम, पमपग, मगमरे, गरेगसा।

अनुक्रमणिका

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	६	सा ऽ गऽ पऽ	सा ऽग ऽ पऽ
३७	७	सांसां	सांसां
४६	५	पपसां	पपसां
१०३	१२	सांरेंगं	सांरेंगं
१३३	१८	निनिसां	निनिसां
१३३	१८	निंनिंसां	निंनिंसां
१४५	१४	रेसारे	रेसारे
१४५	१९	रेसारे	रेसारे
१५०	५	निनिनि	निनिनि
१७०	७	धऽपऽधम	धऽपऽधम
१७७	१०	सासारे	सासारे

विभिन्नता —(१) खमाज षाडव-सम्पूर्ण राग है (आरोह मे रे वर्जित है)। तिलंग ओड़व ओड़व राग है (रे और ध वर्जित हैं)। (२) खमाज में धैवतका प्रयोग आरोहावरोह में होता है। तिलंग में धैवत वर्ज्य है। (३) खमाज में ध-म की संगति और तिलंग में नी-प की संगति है। (४) दोनों निषादों का प्रयोग खमाज में 'सांनिनि्ध, मप धमग' इस प्रकार, तथा तिलंग में "गमपनिनि् पम"।(५) तिलंग में मध्यम का न्यास है, खमाज में नहीं है। (६) तिलंग में ऋषभ का विवादी-प्रयोग है, परंतु खमाज में ऋषभ का अनुवादी के नाते आवश्यक प्रयोग है। (७) खमाजका मूख्य अंग "ग म प ध नि् ध, म प ध, म ग" है, और तिलंग का "ग म प नि् प म ग" है।

(२) देश और तिलक-कामोद

समता —(१) दोनों खमाज थाट के राग हैं (२) दोनों ओडव-संपूर्ण हैं (गँधार-धैवत आरोह में वर्ज्य हैं)। (३) आरोह में शुद्ध निषाद और अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग दोनों में है। (४) पंचम स्वर का महत्त्व दोनों रागों में वादी या संवादी के नाते हैं। (५) दोनों रागों के पूर्वांग के उठाव में "सारे मप" यह स्वर-क्रम है। (६) उत्तरांग में दोनों में "पनि सां रें सां" "सां, नि् ध प" यह स्वर-प्रयोग हो सकता है (यद्यपि तिलक कामोद में सां, नी धप कम होता है)। (७) ध-म की संगति दोनों में है। (८) दोनों में रे वक्र है। (९) दोनों चंचल प्रकृति के राग हैं।

विभिन्नता —(१) तिलक-कामोद का चलन देश की अपेक्षा अधिक वक्र है। (२) तिलक-कामोद में गंधार और षड्ज

का महत्त्व, तथा देश मे ऋषभ का महत्त्व है। (३) निषाद कोमल का प्रयोग देश का आवश्यक अंग है परन्तु तिलक कामोद में यह विवादी प्रयोग है (४) शुद्ध निषाद का प्रयोग तिलक कामोद में विशेष रूप से होता है—"पंनिसारेग, सा" या "मग, सारेग, सानि"। परंतु बाकी विस्तार निषाद को छोडकर "पधमपसंप ध मग" इस प्रकार होता है। किन्तु देश में शुद्ध निषाद का आरोह में अभ्यास-मूलक बहुत्त्व है (५) गंधार कोमल का विवादी प्रयोग देश की विशेषता है। तिलक-कामोद में यह प्रयोग नहीं है। (६) "पसां" "सांप" और "रेप" की स्वर-संगति का तिलक-कामोद में विशेष महत्त्व है। (७) देश का मुख्य अंग "ध, म, गरे, गनिसा" है और तिलक कामोद का—सारेप, मग, सारेग, सानीं, पंनि सारेग, सा" यह मुख्य अंग है।

(३) देश—सारंग

समता—(१) दोनों के आरोह ओडव हैं (गंधार और धैवत वर्ज्य हैं)। (२) आरोह में शुद्ध निषाद और अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग है। (३) दोनों रागों में ऋषभ और पंचम का वादी या संवादी के नाते महत्त्व है। (४) "मरे मपनि सां;" "रे म प नि सां;" "म प नि सां;" "म प नि सां रे मं रें" इन स्वर समुदायों का प्रयोग दोनों ही रागों में होता है।

विभिन्नता—(१) देश खमाज थाट और सारंग काफी थाट का राग है। (२) देश ओडव-संपूर्ण राग है परन्तु सारंग ओडव-ओडव जाति का राग है। (३) सारंग में प-रे की संगति, किंतु देश में ध-म की संगति है। (४) सारंग का गाने का समय दोपहर का, और देश का रात का है (५) कोमल गंधार का

विवादि-प्रयोग देश में है। किन्तु गंधार स्वर सारंग में वर्ज्य है। (६) देश चंचल प्रकृति का राग है; सारंग अपेक्षाकृत गंभीर है। (७) देश का मुख्य अंग, "ध, म, गरे, ग नि सा" और सारंग का " नि सा रे, मरे, प म नि् प, मरे, नि सा" है।

(४) बागेश्री-भीमपलासी

समता—(१) दोनों काफी थाट के राग है। (२) दोनों ओडव-संपूर्ण हैं (भीमपलासी के आरोह में ऋषभ और धैवत, तथा बागेश्री के आरोह में ऋषभ और पंचम वर्जित हैं)। (३) दोनों में मध्यम वादी और षड्ज संवादी हैं (४) दोनों में सा-म की संगति है। (५) दोनो में "ग् रे सा;" "म ग् रे सा;" "ग् म ग् रे सा;। "नीं् सा म, ग् म ग् रे सा" ये स्वरप्रयोग होते हैं।

विभिन्नता—(१) भीमपलासी काफी थाट के धनाश्री अंग का राग है, किन्तु बागेश्री कानडा अंग का है। (२) बागेश्री में मध्यम-धैवत तथा मध्यम-निषाद की संगति और भीमपलासी में पंचम-निषाद की संगति है। (३) भीमपलासी के आरोह में "ग् म प नी् सां" और बागेश्री में "ग् म ध नी् सां" ऐसा होता है। (४) भीमपलासी में पंचम स्वर आवश्यक है। बागेश्री पंचम के बिना गाई जा सकती है। और उसमें कभी कभी पंचम स्वर का प्रयोग वक्र रूप से होता है:—"सां नी् ध, म प ध म ग्"। (५) बागेश्री को कुछ लोग षाड़व संपूर्ण और कुछ संपूर्ण-संपूर्ण मानते हैं, किन्तु भीमपलासी ओडव संपूर्ण है। (६) बागेश्री में कभी कभी "मग्, रे ग् म" यह होता है (अर्थात् आरोह में ऋषभ का प्रयोग) भीमपलासी में नहीं। (७) भीमपलासी की अपेक्षा बागेश्री में गंधार का महत्त्व अधिक है। (८) बागेश्री का मुख्य

अंग "म ध, नि् ध, म, ग् रे सा" और भीमपलासी का मुख्य अंग "ग् म प, ग् म ग् रे सा" है।

(५) राग भैरव और कालिंगड़ा

समता—(१) ये दोनों राग भैरव थाट के हैं। (२) दोनों ही संपूर्ण जाति के हैं। (३) दोनों में ही ऋषभ और धैवत के कोमल होने से तथा दोनों के संपूर्ण जाति के होने के कारण राग चलन में जरासी असावधानी करने पर एक राग दूसरे के क्षेत्र में प्रवेश कर सकता है। (४) पंचम और मध्यम यह दोनों स्वर इन रागों में महत्त्व रखते हैं। (५) आरोह में "निसागम" यह स्वर प्रयोग दोनों ही में हो सकता है।

विभिन्नता—(१) भैरव का चलन मंद्र सप्तक में अधिक है, और कालिंगड़े का मध्य सप्तक में है। (२) भैरव गंभीर प्रकृति का राग है, कालिंगड़ा के राग-चलन में चपलता अधिक होती है। (३) भैरव में धैवत वादी तथा ऋषभ संवादी हैं, परन्तु कालिंगडे में पंचम वादी तथा षड्ज संवादी हैं। (४) भैरव का चलन सरल तथा विलंबित भाव का है परन्तु कालिंगड़ा की गति वक्र है (५) भैरव में धैवत और ऋषभ आंदोलित हैं, परन्तु कालिंगड़े में ऐसा नहीं है। (६) कालिंगड़े में पंचम के न्यास का एक विशेष महत्त्व है। (७) कालिंगड़े में आलाप के अंत में गंधार पर न्यास एक विशेष रूप से होता है :—"पध् पध् मपध्प, मग, रे्सा" परन्तु भैरव में गंधार पर न्यास नहीं होता है। कुछ विद्वानों के मत में कालिंगड़ा में "नि, सारे्ग" और "ध् प,
नी
गमग" स्वर-समुदाय महत्त्व रखते हैं। (८) भैरव में "सा, ध् ध् प"

ग ग
"म रे् रे्सा" इस प्रकार सा से ध तथा म से रे तक मींड से आते हैं, परंतु कालिंगड़े में मींड का प्रयोग नहीं है (९) कालिंगड़ा चंचल प्रकृति का राग होंने से इसमें मध्यम तीव्र और निषाद् कोमल का विवादी-प्रयोग होता है। तथा इस राग का परज राग से मिश्रण भी करते हैं। (१०) कालिंगड़ा राग के अंतिम प्रहर में गाया जाता है और भैरव प्रातःकाल के प्रथम प्रहर में गाया

निनि ग ग
जाता है। (११) भैरव का मुख्य अंग, "गमध्ध्प, ग म रे् रे् सा" और कालिंगड़े का मूख्य अंग—"पध्मप गमप, ध्प"।

(६) आसावरी और जौनपुरी

समता—(१) ये दोनों राग आसावरी थाट के हैं। (२) दोनों में "रेमप, नि्ध्प" "सारेमप" "सानि्ध्, प, नि्ध्, प" "मप-ध्मप, ग्, रेसा" यह स्वर प्रयोग होते हैं। (३) दोनोंही रागों का वादी स्वर धैवत है। (४) दोनोंही के अवरोह संपूर्ण हैं। (५) तानों में दोनों रागों में "मपध्नी्सां" यह स्वर क्रम हो सकता है।

विभिन्नता—(१) आसावरी ओडव-संपूर्ण, किन्तु जौनपुरी षाडव-संपूर्ण है (जौनपुरी में आरोह में निषाद है)। (२) आसावरी में निषाद का प्रयोग आरोह में केवल तानों में होता है, किन्तु जौनपुरी में यह प्रयोग राग वाचक है। (३) जौनपुरी में आसावरी की अपेक्षा धैवत का महत्त्व कम है, किन्तु पंचम का

म सा
महत्त्व अधिक है। (४) "मपग्, रे, मप" (गंधार पर रुककर

सा
रे, मप द्वारा फिरसे पंचम पर पहुँचकर पंचम का महत्त्व

दिखलाया जाता है) यह स्वर प्रयोग जौनपुरी का आवश्यक अंग है। आसावरी में भी इसका प्रयोग है, परन्तु वह आवश्यक नहीं है। (५) कुछ लोग जौनपुरी में पंचम वादी तथा ऋषभ संवादी मानते हैं। (६) जौनपुरी का मुख्य अंग "मप धृनिधृप, मपधृनीसां,

म सा
निधृप, मपग, रे, मप, नीधृप" है, और आसावरी का मुख्य अंग—मपधृमप, ग,रेसा, रेमपधृ, मपधृसां, रेंनीधृप, मपधृमप, गरेसा"

(ब) रागों में छाया

(१) राग पीलू

यह काफी थाट का संकीर्ण प्रकृति का राग है और इसमें विवादी और अनुवादी के नाते बारहों स्वरों का प्रयोग होता है। इसलिए स्वाभाविक रूपसे इस राग में अन्य रागों की छाया आती है। पीलू राग का चलन विभिन्न रागों के स्वर समुदायों को मिलाकर बनता है। परंतु एक विशिष्ट स्वर समुदाय का प्रयोग पीलू अंग को कायम रखता है:—"निंसाग, रेसा, रेसा, पं, धृं, निंसा"। पीलू में जिन रागों की छाया आती है उनमें से कुछ का वर्णन नीचे किया जा रहा है:—

खमाज की छाया— पीलू में निम्नलिखित स्वर समुदाय गाते समय खमाज राग की छाया आती है:—"निंसागमप, गमप, धप, निधप, गमग; गमपनिसां, निधप, गमग।" परंतु इसके बाद तुरंत "सागमप, धृप, सांप, ग, ग, रेमग, रेसानिं, धृपं, धृं, निंसा" इस स्वर समुदाय द्वारा राग का आविर्भाव होता है।

भीमपलासी की छाया—"मग, प ग म ग रेसा; नि़धप मग" इन स्वर समुदायों में भीमपलासी की छाया दिखती है, परंतु ऐसे स्वर समुदाय अधिक देर तक न गाते हुए इनके बाद "मग रेसानि, प निसाग, निसा, ध, मंप नि, सा" इन स्वर समुदाय द्वारा पीलू प्रकट होता है।

भैरवी की छाया—भैरवी की छाया "ग, मग; पमग; धपमग; नीधप, मग, रेग, सारे सा" इन स्वर समुदायों में आती है किन्तु बाद में "सा रे सानि, ध, मंप, निसा, ग, निसा।"

तिलंग की छाया—"नि सा ग म प, ग म प, म ग; ग म, सा ग म प, म ग, ग म प नि सां" इन स्वर समुदायों में राग तिलंग की छाया पीलू में दिखती है। फिर पीलू का आविर्भाव "नि ध प, ग म ग, ग म प, ग, रे सा नि, सा।"

काफी की छाया—ठुमरी गाते समय पीलू में कुछ स्वर समुदायों का उपयोग काफी की छाया उत्पन्न करता है :—"म प नि सां, नी ध प" "म प, ग म ग, रे सा रे नि सा।" किन्तु बाद में पीलू के विशेष स्वर समुदाय "निं धं पं, मं पं नि सा, ग, निं सा" द्वारा पीलू का आविर्भाव होता है।

(२) राग भैरवी

राग भैरवी में निम्नलिखित रागों की छाया आती है :—

सां सां

मालकंस की छाया— "ग म, ध नी सां, नी ध" "नी, नी नीं सांध; नी ध म ग" इन स्वर समुहों में मालकंस का आभास उत्पन्न होता है किन्तु इन स्वर समुहों के बाद पंचम स्वर का स्पष्ट प्रयोग

करके अथवा " नी ध् म ग्, रे ग्, सा रे् सा, नीं ध्ं सा" इस प्रकार भैरवी को फिर से प्रकट करते हैं।

भीमपलासी की छाया— भीमपलासी की छाया भैरवी के निम्नलिखित स्वर समुदायों में आती है :—"नीं सा ग् म प, प म, ग् म ग् प म, सा ग् म प ग् म प म।" किन्तु इसके बाद भैरवी का आविर्भाव " ग्, रे ग्, सा रे् सा, ध्ं, निं सा रे ग्, रे्, सा" इन स्वर समुदायों द्वारा होगा।

आसावरी की छाया— सा रे म प, ध् प ग्,"(म) "म प नी ध् प, म प ग्" (म) "नी ध् प, म प ध् प म प ग्" इन स्वर समुदायों में भैरवी में आसावरी की छाया आती है। इसके बाद "रे ग्, सा रे म ग्, सा रे् सा ध्ं, (नीं,) नीं सा रे् सा" इन स्वरों को गाने से भैरवी का रूप फिर से उपस्थित हो जाता है।

संगीत राग-दर्शन

राग अल्हैया विलावल

यह राग विलावल थाट से उत्पन्न होता है। इसमें दोनों निषाद का प्रयोग होता है और शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। शुद्ध निषाद का प्रयोग आरोह अवरोह दोनों में होता है, पर कोमल निषाद का प्रयोग अवरोह में धैवत के साथ होता है—'धनि्धप'। इस राग की जाति षाडव-संपूर्ण मानी जाती है। आरोह में मध्यम वर्ज्य होता है। बहुधा आरोह में निषाद और अवरोह में गंधार वक्र होता है। वादी स्वर धैवत और संवादी गंधार। गाने का समय प्रातः काल का प्रथम प्रहर। शुद्ध विलावल में सब स्वर शुद्ध लगते हैं। कोमल निषाद के प्रयोग से ही अल्हैया बिलावल होता है। प्रचार में अल्हैया विलावल ही अधिक गाया जाता है।

आरोह :— सा, गरेगप, ध नि सां।
अवरोह :— सां नि ध प, ध नि् ध प, म ग म रे, सा।
पकड़ :— म ग म रे, गप, ध, नि सां।

आलाप

(१) सा, साग, मरे, गप, मगमरे, ग, निंसा।
(२) साग, गरे, गप; गपमग, मरे गपध, धनि्धप; पध, पमग, मरे, ग, निंसा; सा, निंधंनिंसा।

(३) गप, गपध, धप; मगमरे, गपधनि सां; सांनिधनिसां; सां, धनि्धप; पध, पधनि्, धप; गपधनि् धप; मगमरे, गप; मगमरे, गनिसा ।

(४) पपधनिसां; सां; निधनिसां; सांरें, सां; सां, गंरें, गं; नि सां; सांनिधनि्धप, गप, निध, निसां; निधनि्धप; गपधप, मगमरे; गप, मगमरे ग, निसा ।

(५) गरे, गप, ध, निसां; सांरेंसां, सांगं, गंमंरें, गंपं, मंगंमंरें, गंनिसां; सांरेंनिसां, धनि्धप; गपधनिसांनिधनि्धप; धप, मगमरे, सा, ग, प, धनिसां; धनि्धप, मगमरे, ग, निसा ।

तानें

(१) सागरेगपपमगरेसा, गपधनि्धपमगरेसा, गपधनि सांनिधप धनि्धप मगरेसा ।

(२) गगरेग पप मगरे सा, धध पधनि्धपमगरेसा, निनिधनि सांरें सांनि धप मगरेसा ।

(३) सांनिधप मगरेसा, सांरेंसां निधपमगरेसा, गंरेंसांनिधप धनि्धप मगरेसा ।

(४) सारेगपमगरेग पधनि्धपमगरे, गपधनिसांरेंसांनिध निसां गंरेंसांनिधपमगरेसा ।

(५) गपपगपपमगरेसा, धनिनिधनिनिधप मगरेसा, सां रें रें सां रें रें सांनिधपमगरेसा, मंपंपंगंपंपंमंगंरेंसां निध-पमगरेसा ।

(६) पमगरे गपमगरेसा, धनि्धपमग रेगपमगरेसा, सांरें-सांनिधप धनि्धपमग रेगपमगरेसा, मंगंरेंगंपंमंगंरें सांनिधपमगरेसा ।

(७) गपधनिसां, सांनिधपमग रेगपधनिसां, सांरें सांनिधप मगरेग पधनि सां, सांसांगरेंसांनिधप धनिसांनिधप मग रेगपधनिसां, गंरेंसांनिधपमगरेसा।

राग अल्हैया बिलावल–तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

सा ऽ ग ऽ	प ऽ ध नि	सां नि ध प	म ग म रे
+	१३	१	५
ग प म ग	म रे ग प	ध नि ध प	म ग रे सा ‖
+	१३	१	५

अंतरा

प प ध नि	सां ऽ सां सां	ध नि सां रें	सां नि ध प
+	१३	१	५
गं रें सां नि	ध नि रें सां	ध नि ध प	म ग रे सा ‖
+	१३	१	५

राग अल्हैया बिलावल–तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

कहत बिलावल भेद अल्हैया। प्रांत समय गुनि गावत जेहि को। ध-ग सम्वाद करैया॥ संपूरन सुध सुर लेवैया। आरोहन मध्यम तज दैया संग धैवत मृदु नी बिचरैया। गप धनि सानि धप धनि धप मग मरे सुर लेवैया॥

स्थायी

सां नि ध प	म ग म रे	ग प म ग	म रे सा ऽ
क ह त बि	ला · व ल	भे · द अ	ल्है · या ·
+	१३	१	५

ग ऽ ग रे   ग प प ध | प ध निधप   धप म ग म रे
झा ·त स   म य गु नि | गा · · व त   जे हि को · · ·
+   १३ | १   ५

ग ग ग रे   ग पध नि | धनि रें सां   सांनिध प म ग म रे ||
ध ग सं ·   बा · द क | रै · · ·   या . . . .
+   १३ | १   ५

अंतरा

ग ऽ ग रे   ग प ध नि   सां सां सां ऽ   सां रें सां ऽ |
स · न्दू ·   र न सु ध   सु र ले ·   वै · या ·
१   ५   +   १३

ध ऽ ध ऽ   नि सां सां ऽ   सां रें सां नि   ध नि ध प |
आ · गे ·   ह न म ·   ध्य म त ज   दै · या ·
१   ५   +   १३

प ध प ध नी   ध प म ग   ग प म ग   म रे सा ऽ |
सं ग धै · ·   च त सृ द्ध   नी · बि च   रै · या ·
१   ५   +   १३

ग प ध नि   सां नि ध प   ध नि ध प   म ग म रे |
ग प धनि   सा नि ध प   ध नि ध प   म ग म रे
१   ५   +   १३

ग प म ग   म रे सा ऽ ||
सु र ले ·   वै · या ·
१   ५

राग अल्हैया बिलावल—तिलवाडा (विलंबित ख्याल)

दैया कहां गयेलो बृज के बसैया ॥
ना मोरे पंख न पायल और बल, ना कोउ सुध को लेवैया ॥

स्थायी

धपग ऽम | गऽऽरे सा ऽ ऽ ऽ सा ग म रे ऽ ग म प
हैया . . क | हां . . . . ग ये . . . . . .
१३ | १ ५ +

सां

प ऽ प सां नि | सां ऽ ऽ ऽ सां धनि धप ऽ ध ग ऽ म रे ग ऽ ||
लो. वृ ज के | ब . . . सै . . या. . . . . ||
१३ | १ ५ + ||

अंतरा

गं सां

प धनि सां ऽ सां | सां ऽ ऽ सां रें गं ऽ मं रें गं रें सां धनिधपपधपध
ना मोरे पं . ख | ना . . पा य ल . . और ब ल . . . . ना . . .
१३ | १ ५ +

सां

नीधपमग मरे ऽ गप धनि | सां ऽ ऽ सां ध निधप ऽ धग ऽ मरेग ऽ ||
. को . उ . . . . सुधको | ले . . . बै . . या. . . . . ||
१३ | १ ५ + ||

राग अल्हैया बिलावल-झपताल

प्रवल ही श्याम अब दुर्बल ही देख जन झटहि पट झपट कर गज वचायो ॥ गोपही ग्वाल को राख लियो गिरिधर इन्द्र को मान छिन में घटायो ॥ नरहरी रूपधर वरहि सब परिहरो दास प्रह्लाद पर यों नमायो ॥ चक्रधर दास हरि प्रेम के वश भये गोपिधर चोर के दूध पायो ॥

स्थायी

ध ध	रें सां ऽ	ध नि॒	प म ग
प्र व	ल ही .	श्या .	म अ ब
१	३	+	८
रे॒ ग	प म ग	रे॒ ऽ	सा सा सा
हु .	बे ल ही	दे .	ख ज न
१	३	+	८
सा सा	ध ध ध	नी॒ प	ध नि सां
झ ट	हि प ट	झ प	ट क र
१	३	+	८
गं गं	रें सां ऽ	प ऽ	ध नि सां
ग ज	ब चा .	यो .	. . .
१	३	+	८

अंतरा

प ऽ	प ध नि	सां ऽ	सां सां ऽ
गो .	प ही .	ग्वा .	ल को .
१	३	+	८
सां ऽ	गं गं मं	गं रें	ध नि॒ प
रा .	ख लि यो	गि रि	ध . र
१	३	+	८
प ऽ	ध ग प	ध नि	सां सां सां
इ .	न्द्र को .	मा .	न छि न
१	३	+	८
मं ऽ	रें सां ऽ	प ऽ	ध नि सां
में .	घ टा .	यो .	. . .
१	३	+	८

राग अल्हैया बिलावल—चार ताल

तूंहि आद नाद ब्रह्म विष्णु तूंहि महादेव तूंहि गुरु तूंहि चेला।
तूंहि खड्ग तूंहि कपर्द तूंहि आवला कर तूंहि आकर अकेला॥

स्थायी

सां ऽ	सां ध	नी प	ध नि	ध प	म प
आ .	द ना	. द	ब्र .	म्ह वि	. ष्णु
१	+	५	+	९	११
ग म	रे ग	म प	म ग	रे सा	रे सा
तूं .	. ही	. म	हा .	. दे	. व
१	+	५	+	९	११
सा ऽ	ऽ ग	प प	प ऽ	ऽ ध	नि रें
तूं .	. ही	. गु	रू .	. तूं	ही .
१	+	५	+	९	११
सां ऽ	ध नि प	नि ध	प म	रे ग प	ऽ ध नि
चे .	. . .	. ला	. .	. . तूं	. ही .
१	+	५	+	९	११

अंतरा

ग प	प नि ध	सां सां	मां ऽ	सा रें	सां सां
तूं .	हि ख .	. ड्ग	तूं .	हि क	प र्द
१	+	५	+	९	११
सां गं रें	गं मं	गं रें गं रें	सा रें	सां ऽ	ऽ ध
तूं . .	हि .	आ . . .	व .	ला .	. क
१	+	५	+	९	११

नि ध   प ऽ   ग प   ध ऽ   नि प   प ऽ
. र   . .   तूं ही   आ .   . क   र .
१   +   ५   +   ९   ११

ध नि   रें सा   धनिप नि   ध प म   रे ग प   ऽ ध नि
अ .   . के   . . .   . ला .   . . तूं   . ही .
१   +   ५   +   ९   ११

राग अल्हैया बिलावल–तीनताल (मध्यलय)

सुमीरन कर मन राम नाम को, जो कुछ होवे भला होवे बंदे ।
एक दिन वो घर जाना होगा, सोच समझ कर रहना बंदे ॥

स्थायी

ध नि ध प   म ग रे ग प म | ग ऽ रे सा रे ग   म प म ग रे ग
सु मी र न   क . र . म न | रा . म . ना .   . . म को . .
+   १३   १   ५

ग ऽ म रे   ग प नि ध नि | सां सां ऽ ध नि   सां रें नि सां ध प म ग
जो . कुछ हो   . वे . . | भ ला . हो .   . . वे . बं . दे .
+   १३   १   ५

अंतरा

ग प प प   प नि ध नि नि | सां ऽ सां ऽ ध   नि सां रें नि सां
ए क दि न   वो . . घ र | जा . ना . हो   . . . गा .
+   १३   १   ५

सां गं रें मं   गं रें सां सां | ध नि ध प   प ध नि ध प म ग
सो . च स   म झ क र | र ह ना .   बं . . . दे . .
+   १३   १   ५

राग अल्हैया बिलावल—तीनताल (मध्यलय)

नयना बसी मोरी साँवरी, तोरी शाम मूरत सुखमा भरी, नहि देखुं औरन को श्रीहरी ॥ मोर मुगुट पीतांबर सोहे, कानन कुंडल जन मन मोहे. प्रीत करत नित हम तुम पर सखी री ॥

—व्यासकृति

स्थायी

गप ध नि सा नि | सा ऽऽ नि ध प ध नि सां नि ध प म ग रे नी
○ ○ | ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○
नय ना . . व | सी . . . मो रे साँ . . . व . री . . तो
१३ ९ ५ +

ध प म | ग म रे ग प ग म रे सा ग ग ग म रे | ग प ध
री शा म | मू र त सु ख मा ' भ री न हीं दे ' खुं | औ र न
१३ ९ ५ — १३ ९

ध नि सां रें सा नि ध प म ग ||
○ ○ ○ ○ ○ ○ ||
को ' श्री ' ह ' री ' ' ' ||
५ +

अंतरा

ग म रे ग प निध | सां सां सां नी धनी सा धनी धनी सां सां सा |
○ ○
मो र मु गु ट पी ' | तां व र सो ' ' हे का ' न न कुं ड ल |
— १३ ९ ५ + १३

सा रे नि सां ध नि धप ग म रे ग प ध नि | सां सां गं रें सां नि ध प
ज न म न सो ' हे ' प्रीत क र त नि त | ह म तु म प र स खी
९ ५ + १३ ९ ५

सा नि ध प म ग ||
○ ○ ○ ○ ○ ○ ||
री . . . . . ||
+

राग-बिहाग

बिहाग को प्रचार में बिलावल थाट का मानते हैं। इसको अधिकतर दो मध्यम और अन्य स्वर शुद्ध लगाकर गाया जाता है। कुछ गुणीजन बिहाग सब शुद्ध स्वरों से भी गाते हैं। तीव्र मध्यम का प्रयोग पहले तो विवादी के नाते से आरंभ हुआ है, परंतु अब वह राग का एक आवश्यक अंग बन गया है। और इसीलिये कुछ लोग इसे कल्याण थाट का मानने लगे हैं। आरोह में रिषभ और धैवत स्वर वर्जित है। अवरोह संपूर्ण है। जाति ओडव-संपूर्ण। अवरोह में भी ऋषभ और धैवत का प्रमाण अल्प है। तीव्र मध्यम का प्रयोग विशिष्ट प्रकार से होता है, जैसे—'प,म्ग,मग;' 'धप म्पग, मग'। शुद्ध मध्यम का प्रयोग आरोहावरोह में है। वादी स्वर गंधार और संवादी निषाद है। आरोह निषाद से आरंभ करते हैं. जैसे :—'निं साग, मग'। गाने का समय रात का दूसरा प्रहर है।

आरोहः—निं साग म प नि सां।

अवरोहः—सांनिधपम्प गमग, रेनिंसा।

पकड़ः—प, म्प, गमग, रे निं सा।

आलाप

(१) सा, निं सा, ग, रे निं सा, सा ग, म ग, निं सा मग, प म् ग म ग, रे निं सा।

(२) निं सा, निं सा ग, म ग, प म् ग म ग, सा ग प म् ग म ग, ध प म् प ग म ग, ग प म् ग म ग, सा ग प ध ग म ग, रे निं सा, निं, पं निं सा।

(३) सा म ग प, प, ध म् प, ग म ग, ध प म् ग म ग, नि, प ध म् प म् ग म ग, निं सा ग म प म् ग म ग, ग म प नि, ध प म् प, ग म ग, प, ग म ग, म ग, रे निं सा, निं, पं निं सा।

(४) पं निं सा ग, म ग, सा ग, प, ध प, ग म प नि, नि, ध प, प नि, सां नि, ध म् प, नि, ध म् प, ग म ग, निं सा ग म ध प ग म ग, प, ग म ग, ग, निं सा, पं निं सा।

(५) निं सा ग म प नि, ध म् प, प सां नि सां, सां रें नि सां, नि, ध म् प, ग म प नि सां, नि सां. नि, ध म् प प नि सां रें नि सां, नि, ध म् प, सां, नि, ध म् प, प, म्, म्, म्, ग म ग, सा म ग प ध, ग म ग, रे निं सा।

(६) ग म प नि सां, सां नि, प नि सां, सां, रें सां, सां गं, रें नि सां, नि सां गं, मं गं, रें नि सां, नि सां रें नि सां, नि, नि, नि, ध म् प, प नि, प ध म् प, ग म ग, नि सां नि, गं मं गं, नि सां नि, प, ग म ग, सा ग प ध ग म ग, रे निं सा।

(७) ग म प नि सां गं, रें नि सां, सां गं, सां गं मं गं, सां गं पं मं् गं मं गं, गं पं मं् गं मं गं, म गं, रें नि सां, सां नि, ध म् प, ग म प सां नि, ध म् प, नि ध म् प, ध म् प, प म् ग म ग, सा म ग प, प नि, सां, ग म ग, रे निं सा, निं, पं निं सा।

तानें

(१) निं सा रे निं सा, निं सा ग रे निं सा, निं सा ग म ग रे सा निं सा, निं सा ग म प म ग रे सा निं सा, निं सा ग म प नि ध प म ग रे सा, निं सा ग म प नि सां नि ध प म ग रे सा, निं सा ग म प नि सां रें सां नि ध प म ग रे सा, निं सा ग म प नि सां गं रें सां नि ध प म ग रे सा, निं सा ग म प नि सां गं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा, निं सा ग म प नि सां गं मं पं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा।

(२) निं सा रे निं सा ग म ग रे निं सा, निं सा ग म प ग म प म ग रे सा निं सा, निं सा ग म प ग म प नि ध प म ग रे सा, निं सा ग म प ध ग म प नि सां नि ध प म ग रे सा, निं सा ग म प ध ग म प नि सां रें सां नि ध प म ग रे सा, निं सा ग म प नि प नि सां गं रें सां नि ध प म ग रे सा, निं सा ग म प नि प नि सां गं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा, निं सा ग म प नि प नि सां गं मं पं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा।

(३) सां नि ध प म ग रे सा, सां रें सां नि ध प म ग रे सा, सां गं रें सां नि ध प म ग रे सा, सां गं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा, सां गं मं पं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा, पं— मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा, मं—गं रें सां नि ध प म ग रे सा, गं—रें सां नि ध प म ग रे सा, रें—सां नि ध प म ग रे सा, सां—नि ध प म ग रे सा।

(४) निं सा ग म प म ग म प नि ध प म् प ग म प नि सां नि ध प म् प ग म ग रे सा, ग म प म् ग म प नि ध प म् प प नि सां रें सां नि ध प म् प ग म ग रे सा, प नि सां नि प

नि सां रें नि सां गं मं गं रें सां नि ध प म् प ग म ग रे सा, निं सा ग म प ध ग म प नि सां रें नि सां गं मं पं मं गं रें सां नि ध प म् प ग म ग रे सा ।

(५) ग म ग रे सा, प ध म् प ग म ग म ग रे सा, नि नि ध प प ध म् प ग म ग रे सा, सां रें सां नि प ध म् प ग म ग रे सा, गं गं रें सां सा रें सां नि प ध म् प ग म ग रे सा, गं पं मं गं सां रें सां नि प ध म् प ग म ग रे सा ।

(६) ग म म ग म म ग म म ग रे सा, म प प म प प म प प म ग रे सा, प नि नि प नि नि प नि नि ध प म ग रे सा, नि सां सां नि सां सां नि सां सां नि ध प म ग रे सा, सां रें रें सां रें रें सां रें रें सां नि ध प म ग रे सा, सां गं गं सां गं गं सां गं गं रें सां नि ध प म ग रे सा, गं मं मं गं मं मं गं मं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा, मं पं पं मं पं पं मं पं पं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा ।

(७) निं सा ग म प नि सां नि ध प म ग रे सा, निं सा ग म प ग म प नि सां रें सां नि ध प म ग रे सा, सां गं रें सां नि ध प म ग रे सा, निं सा ग म ग सा ग म प नि ध प प नि सां गं रें सां सां गं मं पं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा, म म ग म ग रे सा, प प म प प म प प म ग रे सा, नि नि ध नि ध प म ग रे सा, सां सां नि सां सां नि सां सां नि ध प म ग रे सा, गं गं रें गं रें सां नि ध प म ग रे सा, मं मं गं मं मं गं मं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा, निं सा ग म प ग म प नि सां प नि सां गं मं सां गं मं पं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा ।

राग-बिहाग-तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

नि सा ग म प म् ग म | ग ऽ म ग रे नि सा
+ १३ | १ ५
प नि सा ग रे सा नि सा | प म् ग म ग रे सा ||
+ १३ | १ ५

अंतरा

ग म प नि सां नि सां | प नि सां गं रें नि सां
+ १३ | १ ५
सां रें सां नि ध प म् प | ग म प म ग रे सा ||
+ १३ | १ ५

राग बिहाग–तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

गावत मधुर बिहाग राग गुनि, द्वितीय प्रहर निस।
सुध सुर मेल जनित मध्यम मृदु तीवर अरु सो ॥
आरोहन में रि-ध न लगावत, संपूरन प्रतिलोम कहावत ॥
ग- नि वादी संवादी संमत उलट पुलट सुर संगत साधत।
औडव षाडव अरु संपूरन भेद बतावत ॥

पं० खरे शास्त्री

स्थायी

सा ग म प प नि नि | सां रें नि सां नि ध नि सां नि ध म् प ग म ग रे
गा व त म धु र बि | हा ऽ ऽ ऽ ग रा ऽ ऽ ग गु नि द्वि ति य प्र
+ १३ | १ ५ +

ग म नि ध म् प | ग म ग रे नि सा सा नि प प नि सा सा सा सा |
ह ॰ र ॰ नि स | सु ध सु र मे ॰ ल ज नि त म ध्य म मृ दु |
१३ १ ५ + १३

ग म प ध ग म ग रे सा रे नि सा ||
ती ॰ ॰ ॰ व र अ रु सो ॰ ॰ ॰ ||
१ ५

अंतरा

गम गम पप निध नि सां सां सां सां रें सां सां | नि नि नि सां ध नि
आ रो ह्न मे रि ध न ल गा ॰ व त | स म्पू र न प्र ति
१ ५ + १३ १ ५

ध नि सां नि सां नि ध नि म् प | गनि धमप ग म ग रे ग म प ध
लो . म क हा . . व त | ग नि वा . . दी . सं . वा . . .
+ १३ १ ५ +

ग म ग रे नि सा | नि प नि नि सा सा ग रे ग म प ध ग म ग रे नि सा |
दी स म्म त | उ ल ट पु ल ट सु र सं . . . ग त सा . ध त |
१३ १ ५ + १३

सा म ग प प प प नि ध नि सां नि ध नि म् प | ग म प ध
औ ड व षा ड व अ रू सं . . पू . . र न | भे . . .
१ ५ + १३ १

ग म ग रे नि सा ||
इ ब ता . व त ||
५

राग विहाग—धमार ताल

जय राम रूप अनूप निर्गुण सगुण गुण प्रेरक वही ।
दश शीश बाहु प्रचंड खंडन चाप शर मंडन मही ॥

पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं ।
नित नौमि राम कृपालु बाहु विशाल भव भय मोचनं ॥

स्थायी

ग म | ग निं सा सा ऽ रे सा निं ऽ म निं
ज य | रा . म रू . प अ नू . प नि
१ ६ + ११

सा सा सा | निं सा सा ग ग ग प प नि
र गु ण | स गु ण गु ण प्रे . र क
१ ६ +

ध ध
प म ऽ ग म | प नि नि सां ऽ सां सां नि ऽ
व ही . द श | शी . श बा . हु प्र चं .
११ १ ६ +

प ध म प म ग | ग ऽ ग ग म नि ध म
ड खं . . ड न | चा . प श . र मं .
११ १ ६

प प म ग रे निं सा ||
. ड न म ही . . ||
+ ११

अन्तरा

रें
ग म | प नि नि सां ऽ सां सां सां ऽ सां सां
पा . | थो . द गा . त स रो . ज मु
१ ६ + ११

नि ग म | प नि नि सां ऽ गं मं गं नि सां
ख रा . | जी . व आ . य त लो . च
१ ६ +

नि ऽ सां पं मं | गं नि सां सां ऽ रें सां
नं . नि त . | नौ . मि रा . म क्र
११ १ ६

नि म प ध म प ग म | ग ऽ ग ग म नि
पा . लु वा . . हु वि | शा . ल भ . व
+ ११ १

ध म प ग म ग रे निं सा ||
भ . य मो . च नं . . ||
६ + ११

राग विहाग–झपताल

सखी आज नंद नंद सुख कंद मुखचंद
हसत आनंद सो मची होरी ॥
एक संग ग्वालन श्याम सो बात कर
ऋत बृज नार मिल राधा गोरी ॥

स्थायी

प नि | सां ऽ सां नि ध नि ध म प प ध प |
स खी | आ . ज नं . द नं . . द सु ख |
१ ३ + ८

ग ऽ म प म ग ऽ रे निं सा सा | निं सा प
कं . द मु ख चं . . . द | ह स त
१ ३ + ८ १ ३

प ऽ ध म प म ग ऽ | ग ग म प ध ग म
आ . नं . . द सो . | म ची . . . . .
+ ८ | १ ३

ग सा ग म ||
हो . री . ||
+ ८

अन्तरा

प ऽ प नि नि सां ऽ सां सां ऽ | सां ऽ सां
ए . क सं ग ग्वा . ल न . | श्या . म
१ ३ + ८ | १ ३

रें नि सां नि ध म प प सां नि | सां गं मं
सो . . वा . . . त क र | ऋ त .
+ ८ | १ ३

प मं गं रें नि सां सां रें सां | नि ऽ ध म प ऽ
बृ ज ना . . . र मि ल | रा . धा . . .
+ ८ | १ ३

ऽ म ग म ||
. गो री . ||
+ ८

राग बिहाग—विलम्बित तीनताल

ख्याल

कैसे सुख सोवे नींदरिया, श्याम मूरत चित चढ़ी ॥
सोच सोच सदारंग अकुलाय, या विध गांठ परी ॥

स्थायी

ग रे नि सा नि सा नि सा म | ग ऽ रे नि सा
कै से . . . . . . सु ख | सो . . . .
\+ १३ १

सा ऽ ऽ ऽ सा ऽ नि सा ऽ सा रे नि सा नि ऽ |
ब . . . नीं . . . . द . रि . या . |
५ + १३

ऽ ऽ प धं म् पं ऽ ऽ ऽ ऽ सा म ग म म
. . . . श्या म मू र त
१ ५ + १३

म ग रे ग म | प ऽ नि ध नि ध म प
. . . . चि | त . च . . ढि . .
१ ५

ऽ म् ग म ||
. . . . ||

अन्तरा

प ऽ सां सां ऽ ऽ नि सां ऽ | सां ऽ ऽ ऽ
सो . च सो . . . . . | च . .
\+ १३ १

सां नि सां नि ध नि नि सां रें नि सां नि
स दा . . . . र
५ +

ध म प ऽ म् ग म प म | ग ऽ रे नि सा ऽ सा
ग . . . . . . अ कु | ला . . . . . ये
१३ १ ५

ऽ ऽ ऽ सा म ग ऽ ग म प सां | नि ऽ
. . . या वि ध . गा . ठ प | री .
+ १३ १

ध म प ऽ ऽ म ग म ||
. . . . ||
५

राग बिहाग–तीनताल (मध्यलय)

सकल भुवन उसके गुण गावे ।
जाके मुख पर तेज विराजे, जो सबके सुख में सुख पावे ।।
सुन्दर यौवन रूप वृथा सब, जो न चरित अति दिव्य दिखावे ।
प्रेम निकेतन सरल सचेतन, जन्म सफल कर सुयश कमावे ।।

पं० रामनरेश त्रिपाठी

स्थायी

साम गम पप निध | सां रें नि सां नि सां नि धनि म प गम ग रे
स क ल भु व न उ स | क . . . गु ण गा . . वे . जा . के .
+ १३ १ ५ +

ग म नि ध म प | ग म ग रे नि सा सा नि प नि नि सा ग रे |
मु . ख . प र | ते . ज वि रा . जे जो . स ब के सु ख |
१३ १ ५ + १३

ग म प ध ग-म ग रे ग नि सा ||
मे . . . सु ख पा . . वे . ||
१ ५

अंतरा

ग म ग म प नि ध | नि सां सां सां सां रें सां नि नि सां
सु ंन्द र यौ व न | रू . प वृ था स ब जो न च
\+ १३ १ ५ +

नि ध म् प | प नि नि ध नि सां नि नि सां रें सां नि ध प ध
रि त अ ति | दि व्य दि खा . . वे प्रे . म नि के . त .
१३ १ ५ + १३

म् प | ग म प म ग रे सा रे निं सा ऽ सा ग म प प नि नि |
न . | स र ल स चे . त . न . . ज न्म स फ ल क र |
१ ५ + १३

प नि सां गं गं रें सां नि ध प म ग ||
सु य श क मा . . . वे . . . ||
१ ५

राग विहाग—तीनताल (मध्यलय)

जय रामचन्द्र कमला विहार। जय कौशलेश करुणावतार ॥
रघुवंश कमल कानन दिनेश। कंदर्प कोटि कमनीय वेश ॥

स्थायी

सा निं सा म ग प ऽ प नि ध | सां रें नि सां नि ध म् प प ग म
ज य रा . म चं . द्र कम | ला . . . वि हा . . र जय
\+ १३ १ ५

ग ग ग ऽ म ग रे | ग म प ध म ग रे निं सा ||
कौ श ले . श करु | णा . . . व ता . . र ||
\+ १३ १ ५

अंतरा

ग म प नि नि नि सां सां नि ध | नि सां सां सां ऽ सां सां नि
र घु वं . श क म ल का . | न न दि ने . श कं .
+ १३ १ ५

सां मं गं सां रें नि सां नि प ध म् प | ग प म ग रे निं सा सा ||
द . प को . . . टि क . म . | नी . . य वे . . श ||
+ १३ १ ५

राग विहाग—तीनताल (मध्यलय)

अपनो कबहूँ कर जानि हो। राम गरीब निवाज राज मनि।
विरुद लाज उरझानी हो॥
शील सिन्धु सुन्दर सब लायक। समरथ सदगुण खानी हो।
पाले हो पालक पुनि पालउ, प्रणत प्रेम पहिचान हो॥

स्थायी

निं सा ग ग म प नि ध | सां रें नि सां ऽ नि नि ध म् प ग म
अ प नो क ब हूँ क र | जा . . . . नि हो . . . रा .
+ १३ १ ५ +

ग रे ग म प ध म् प | ग म ग रे सा निं रे सा सा निं पं पं निं सा
म ग री . व . नि . | वा . ज . रा . ज म नि वि र द ला .
१३ १ ५ + १३

सा ग म | ग म प ध ग म ग रे सा ||
ज उ र | झा . . . . नी हो . . ||
१ ५

अंतरा

ग म प नि नि नि सां सां सां सां नि ध सां नि | ध म प ऽ
शी ल सि . न्धू सुं द र स व ला . . य | क . . .
१ ५ + १३ १

ग म ग ग ग म प सां नि ध म प | सां नि सां ऽ ऽ
स म र थ स द गु णी खा . . . | . नी हो . .
५ + १३ १ ५

नि सां गं रें सां नि | ध नि रें सां नि ध म प ग म ग ग
पा ले हो . पा . | ल क पु नि पा ल . हू प्र ण त मे
+ १३ १ ५ +

ऽ ग ग रे | ग म प ध ग म ग रे सा ||
. म प हि | चा . . . . नी हो . . ||
१३ १ ५

राग कल्याण

यह कल्याण थाट का आश्रय राग है। इसमें मध्यम तीव्र लगता है और अन्य सब स्वर शुद्ध। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। वादी स्वर गंधार और संवादी निषाद है। इस राग के आरोह में षड्ज और पंचम को वर्ज्य करने का प्रचार है, जैसे:—'निंरेगम्प; म् धनिसां'। जब दो गंधारों के बीच शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है, तब इसे जैमिनी-कल्याण अथवा यमन कल्याण कहते हैं, जैसे:—'प, म्, गमग, रेगरे, निंरेसा'। गाने का समय रात का पहला प्रहर है।

आरोह:—नींरेग म्धनिसां।

या, सा रे ग म् प ध नि सां।

अवरोह:—सांनिधप म्गरेसा।

पकड:—निंरेग, रे, पम्ग, रेग, निंरे, सा।

आलाप

(१) सा, निंधंनिंरे, सा, निंरेग, गरे, निंरे, सा।

(२) निंरेग, ग, रे, म्ग, गम्प, म्ग, गरे, निंरेगरे, निंरे, सा।

(३) निंरेगम्प, प, म्ग, गम्प, म्ध, प, म्धनि, धप, धपम्ग, रेग निंरेनिंग, निंरेसा।

(४) निंरेगम्धनि, धप, म्धनिसां, सां, निध, निरें, निरेंगंरेंसां, सांनिधपम्धनि, ध, म्ध, प, म्ग, गरे, म्ग, प, रे, सा।

(५) गग म्ध, प, म्धनिसां, निरें, निरेंगं, गंरें, मंगं, परेंगं, रें, निरें, सां, सांनिध, प, गम्ध, प, म्ग, रेगप, रेग, निंरेनिंग, रे, निरे, धनिरे, धनिसा ।

तानें

(६) निरेगरेनिसा, निरेगम्पम्गरेसा, निरेगम्धनिधपम्गरेसा, निरेगम्धनिसांनिधपम्गरेसा ।

(७) गम्पम्गरेसा, गम्पधपम्गरेगम्पम्गरेसा, गम्पधनिधपम्-गम् पधनिसांनिधपम्गरेसा,ग म्पधनिसांनिधपम्गम्पधनि-सारेंसांनिधपम्गरेसा ।

(८) गगरेसा, म्म्गरे, धधपम्, निनिधप, सांनिधपम्गरेसा, निरेगम्प, गम्पधनि म्धनिरें, गंरेंसांनिधपम्गरेसा ।

(९) सांनिधनिसांनिधपम्गरेसा, सांनिधनिसारेंसांनि धनिसांनि धपम्गरेसा, निरेगरेसानिधनिरेंसांनिधपम्गरेसा ।

(१०) गगरेगगरेगगरेसासा, धधपधधपधधपम्, रेंरेंसांरेंरेंसांरेंरें सांनि,गंगंरेंगंगंरेंगंगंरेंसांनिधपम्गरेसा ।

(११) निरेगम्पम्गरे, गम्पधपम्गरे, गम्पधनिधपम्गरे, गम्-पधनिसांनिधपम्गरे, गम्पधनिरेंगंरेंसांनिधपम्गरे, गम्धनि रेंगंमंपंमंगंरेंसांनिधपम्गरेसा ।

(१२) निरेगम्प, पम्गरेगम्प, म्धपम्गरेगम्प, म्धनिधपम्गरेग म्प, म्धनिरेंसांनिधपम्गरेगम्प, म्धनिरेंगंमंपंमंगंरेंसांनिधप म्गरेगम्प, म्धनिधपम्गरेगम्पम्गरेनिसा ।

राग कल्याण—तीन ताल (मध्यलय)

स्थायी

नि	ध	ऽ	प	म्	प	ग	म्	प	ऽ	म्	ऽ	ग	ऽ	रे	ऽ
+				१३				९				५			

सा निं सा ग रे म ग रे | सा ग रे सा सा निं धं ऽ
+ १३ १ ५

सा रे ऽ रे ग ऽ प म् | ध प ऽ म् ग म प ध
+ १३ १ ५

अन्तरा

नि नि ध ध प म् ग रे
१ ५

ग प ऽ ग ग म ऽ ध | सां ऽ ऽ रें सां नि ध ऽ
+ १३ १ ५

गं रें सां नि ध ऽ सां ऽ | नि ध प म् ग रे सा ऽ
+ १३ १ ५

ग ग ग प प प ध नि | प ऽ ध प म् ग रे सा
+ १३ १ ५

सा सा रे रे ग ग म् म् | प ध प म् ग म् प ध ||
+ १३ १ ५

राग यमन कल्याण—तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

गावत गुनि शुभ कल्याण राग, निस प्रथम याम, सब तीवर सुर सों, लेत मधुर आलाप तान ॥ सुर ग नी वादी संवादी, शेष अनुवादी, सरल सम्पूरन रूप सुहाग बतावत, अरु कोमल मध्यम लव युत, मधुर करत जैमिनी भेद आन ॥

स्थायी

सा निं धं निरे ग रे निं रे सा निं | धनि धं पं ऽ पं निं धं
गा . . व त गु नि शु भ क . | ल्या . ण रा . ग नि स
\+ १३ १ ५

सा सा सा सा निं रे सा निं | सा ऽ ग रे ग म प म ग म ग रे
प्र थ म या . म स व | ती . व र सु र सो . ले . त म
\+ १३ १ ५ +

ग रे निं रे | ग म प म रे ग रे ||
धु र आ . | ला . . प ता . न ||
१३ १ ५

अंतरा

म ध
प ग | प प ऽ प म ध ध ऽ नि ध प ग ऽ नि म प | ग म ग रे
सु र | ग नी . वा . दि सं . वा . दी शे . प अ नु | वा . दि स
१ ५ + १३ १

ग प म ग रे ग रे सा सा निं ऽ रे ग रे | निं सा निं धं निं धं पं पं
र ल . सं . पू . र न रू . प सु . | हा . ग व ता . व त
५ + १३ १ ५

सा निं रे ऽ ग म ग रे | ग म प म प प सा नि धनि ध प
अ रु को . म ल म . | ध्यम लव यु त म धु र क र त
\+ १३ १ ५ +

प
म प ग रे | ग म प म रे ग रे ||
जै . मिनी | भी . . द आ . न ||
१३ १ ५

राग यमन कल्याण–चारताल

पारब्रह्म परमेश्वर पुरुषोत्तम परमानन्द, नन्द नन्दन आनन्दकन्द जसोदानन्द श्री गोविन्द ॥ दीनानाथ दुख भंजन पद्मनाभ मधुसुदन, वासुदेव बनवारी बृजपति यदुनन्द नन्दन ॥

स्थायी

प म्	ग ग	रे ग	ध प म्	ग म	ग रे
पा .	र ब्र	. म्ह	प र .	मे .	श्व र
१	+	५	+	९	११

ग म्	प ऽ	ध प म्	ग म	ग रे ग	रे सा
पु रु	षो .	त्त म .	प र	मा . न	. न्द
१	+	५	+	९	११

निं	ऽ	धं	निं	सा	सा	सा	ग	रे	ग	ऽ	ग
न	.	न्द	न	न्द	न	आ	न	न्द	क	.	न्द
१		+		५		+		९		११	

सा	नि	ध	नि	ध	प	प	ऽ	म	ग	रे	ग
ज	शो	दा	न	.	न्द	श्री	.	गो	वि	.	न्द
१		+		५		+		९		११	

अन्तरा

ग	म्	ध	सां	ऽ	सां	सां	सां	सां	ऽ	सां	सां
दी	ना	.	ना	.	थ	दु	ख	भं	.	ज	न
१		+		५		+		९		११	

नि	ऽ	ध	नि	सां	सां	सां	रें	सां	नि	ध	प
प	.	द्म	ना	.	भ	म	धु	सू	.	द	न
१		+		५		+		९		११	

सां गं गं मं रें सां नि सां ध ऽ प ऽ |
वा . सु दे . व ब न वा . री . |
१ + ५ + ९ ११

ग म प ध नि ध म ध प म ग रे ग ||
ब्र ज प ति य दु नं . द . नं द न ||
१ + ५ + ९ ११

राग कल्याण-वि० एकताल (ख्याल)

कह सखी कैसेके करिये, भरिये दिन ऐसे लालन के संग ॥
सुनरी सखी मैं का कहूँ तोसे, उनही के जानत ढंग ॥

स्थायी

ग रे ग नीं रे नीं सा ऽ नीं धं | सा सा नीं धं निं ऽ ऽ
कै स खी कै . . . . से के | क . . . . . .
९ ११ १

धं पं ऽ नीं धं निं सा ऽ निं सा ऽ ऽ सा ऽ रे ऽ | नीं रे
री ये . . . भ री . . . . . ये . दी . | न .
+ ५ + ९ ११ १

निं सा ऽ नीं धं निं ऽ निं ऽ ग ऽ रे रे ग ग ऽ ग ऽ रे |
. . . . . ऐ . से . . . ला ल . न . के . . |
+ ५ + ९ ११

म ग प ध म प ऽ रे ऽ ग ऽ रे ऽ धं ऽ नीं ऽ सा ||
. . . . सौं . . . . . ग . . . . ||
१ + ५ + ९

अंतरा

नि
ग ग म् ध सां ऽ नि सां ऽ | सां ऽ सां रें नि सां ऽ नि ध ऽ
सु न री स खी . . . . | मैं . का . . . . . क हूं .
९ ११ | १ + ५

सा
सां सां नि ध नि ऽ ऽ ध प प ऽ ऽ प ऽ ग ऽ प ऽ रे ऽ ऽ | प प
तो . . . . . . से . . . . उ . न . ही . कैं . . | जा .
+ ९ ११ १

नि रें
ध नि नि प प ध नि सां ऽ ऽ ध प रे ऽ ग ऽ रे ऽ ध ऽ नि ऽ सा ||
. . . . न त ह . . . . . ग . . . . ||
+ ५ + ९

राग-कल्याण—तीनताल (मध्यलय)

अँखिया रामरूप अनुरागी।
श्याम वरन मन हरन माधुरी, मूरत अति प्रिय लागी॥
सुन्दर वदन मदन शत शोभा, निरख निरख रस पागी।
रत्नहरि पल टरत न टारी, परम प्रेम रंग रागी॥

स्थायी

नि ध नि ध प म् प ग म् | प प रे रे सा सा नि ध नि
रा . . म रू . प अ नु | रा गी अँ खि या श्या म व र
+ १३ | १ ५ + १३

रे ग ग | रे ग प रे ग रे सा नि रे ग रे ग म् ध प |
न म न | ह र न मा . धु री मू . र त अ ति प्रि य |
१ ५ + १३

म ध नि सां नि ध प रे रे सा ||
० ० ० ० ० ०
ला . . . . . गी अँ खि या ||
१ ५

अंतरा

प प प प प ध प प | सा सा सा सा सां नि रें सां नि ध
० ०
सु . द र व द न म | द न श न शो . . भा नि र
\+ १२ १ ५ +

नि सां नि ध म प | म ध नि सां नि ध प नि रें गं रें
ख नि र ख र स | धा . . . . . गी र . त्न ह
१३ १ ५ +

सां नि ध नि ध प | रें रें ग प रें सा नि रें ग म ध नि म प |
० ० ० ०
रि . . . प ल | ट र त न टा री प र स प्रे . म रं ग |
१३ १ ५ + १३

ग म प ध नि ध प रे रे सा ||
० ० ० ० ० ०
रा . . . . . गी अ खि या ||
१ ५

राग यमन कल्याण—तीन ताल (मध्य)

अवगुण न कीजिये गुनि सन, का जाने गुन
की सार औगुनी, गुनी जाने गुन की सार ॥
बड़ी बेर समझे नही समझत, बेर बेर
कौन कहे एक बेर कह दीन्ही, कौन कहे यह बार बार ॥

स्थायी

नि सा
अ व

रे	ग	प	रे	ग	रे	सा	ऽ	ग	रे	ग	ग	प	म्	ग	म
गु	न	न	की	.	जि	ये	.	गु	नि	स	न	का	.	जा	.
+			१३					१				५			
ग	रे	सा	नि	धं	पं	ऽ	पं	ग	ऽ	ग	ग	ऽ	रे	नि	रे
ने	.	गु	न	की	सा	.	र	औ	.	गु	नी	.	गु	नी	.
+				१३				१				५			
ग	रे	ऽ	सा	नि	रे	ग	रे	ग	म्	प	ऽ	रे	ग	रे	
.	जा	.	ने	गु	न	की	.	.	.	.	.	सा	.	र	
+				१३				१				५			

अंतरा

ग	ग	ऽ	प	ऽ	प	सां	ध
व	डी	.	बे	.	र	स	म
१				५			

सां	ऽ	सां	सां	सां	रें	सां	सां	ध	नि	ध	नि	सां	सां	ध	नि
झे	.	न	ही	स	म	झ	त	बे	.	र	बे	.	र	कौ	.
+			१३					१				५			
ध	प	प	म्	ग	ऽ	रे	ग	ऽ	रे	नि	सा	रे	ऽ	सा	ऽ
न	क	हे	.	ए	.	क	बे	.	र	क	हे	दी	.	न्ही	.
+				१३				१				५			
धं	नि	धं	नि	सा	ऽ	नि	रे	ग	ऽ	प	रे	ग	रे		
कौ	.	न	क	हे	.	य	ह	बा	.	र	बा	.	र		
+				१३				१				५			

राग भूपाली

यह राग कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। इसके आरोहावरोह में मध्यम और निषाद वर्ज्य हैं। इसलिए इसकी जाति ओडव-ओडव है। सब स्वर शुद्ध लगते हैं। गाने का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। वादी स्वर गंधार और संवादी धैवत है। विश्रांति स्थान षड्ज, गंधार और पंचम हैं। धैवत पर अधिक न्यास नहीं होना चाहिए। पूर्वाङ्गवादी राग होने से पूर्वाङ्ग में ही स्पष्ट होता है।

आरोहः—सा रे ग प ध सां।

अवरोहः—सां ध प ग रे सा।

पकड़ः—ग, रे, सा धं, पं धं सा रे ग, ध, प ग, रे, सा।

आलाप

(१) सा, सा रे, सा रे ग, गरे, सा रे, सा धं, पं धं सा।

(२) सा रे ग, ग रे, ग प, ग रे, ग प ध, प ग, रे, ग प, ग रे, ग रे, सा रे ग, रे, सा रे सा धं, पं धं सा।

(३) सा रे ग प, ग रे, ग प ध, ध प, प ग रे, ग प ध सां, सां, ध प, प ग, ध प, ग प, ग रे, ग रे सा धं, पं धं सा।

(४) ग रे, ग प ध प, ग रे, ग प ध सां, सां रें, सां ध, प ध सां, ध प, प ध, प ग रे, प, ग रे, ग, रे, सा रे सा धं, पं धं, सा।

(५) सा रे ग प ध सां, ध सां रें, सां रें, सां ध, प ध सां रें गं, गं

रें, सां रें सां ध, सां, ध प, ग प ध, प ध, प ग रे, सा रे ग प, ग रे, सा धं, पं धं सा ।

जलद तानें

(६) सा रे ग रे सा, सा रे ग पग रेसा, सा रे ग पं ध प ग रे सा, सा रे ग प ध सां ध प ग रे सा ।

(७) ग रे ग प ग रे सा, ग प ध प ग प ग रे सा, ध सां रें सां ध सां ध प ग रे सा, सां रें गं रें सां रें सां ध प ग रे सा ।

(८) ध प ग प ध प ग रे सा, सां ध प ध सां ध प ग रे सा, रें सां ध सां रें सां ध प ग रे सा, गं रें सां रें गं रें सां ध प ग रे सा ।

(९) सा रे ग प ग रे, ग प ध सां ध प, ध सां रें गं रें सां, ध सां रें सां ध प, ग प ध सां ध प, रे ग प ध प ग, सा रे ग प ग रे, सा रे सा धं सा ।

(१०) ग ग रे ग प प ग रे सा, ध ध प ध सां सां ध प ग रे सा, रें रें सां रें गं रें सां ध प ग रे सा, ग ग रे रे, प प ग ग, ध ध प प, सां सां ध ध, रें रें सां सां, गं गं रें रें, पं पं गं रें, सां सां ध प ग रे सा ।

(११) सारेगरे, गपगरे, गपधपगरे, गपधसांधपगरे, गपधसांरें सांधपगरे, गपधसांरेंगं रेंसांधपगरे, गपधसां रेंगंपंपंगंरें सां सां ध प गरे सा ।

राग भूपाली—तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

ग	प	ग	रे	गरे	सारे	प	ऽ	ग	ऽ	ग	ऽ	रे	रे
+				१३		१				५			

ग ऽ प प ध ऽ सा ऽ | सा ध प ग ध प ग रे ||
+ १३ १ ५

अंतरा

ग ग ग प प प साध | सा ऽ सां सा सा रें सां सां
+ १३ १ ५
सारें गंरें सारें सा ध | प सा ध प ध प ग रे ||
+ १३ १ ५

राग भूपाली—तीनताल

राग लक्षण

गावत सुन्दर मेल सुसंगत बरज म-नी भूपाली रुचिर सुर।
मंगलमय कल्याण मेल युत ग-ध वादी संवादी सोहत ॥
प्रथम याम निस गेय सुसंमत पंचम तृतीय सुरन की संगत।
उलट पुलट सुर की गुनि साधत रचना प्रभाव शाली सुसंगत ॥

पं० खरे शास्त्री

स्थायी

ग प ध सां ध प ग रे सा रे | प ग ग रे ग प ध प
ग‌ा . . . व त सु . न्द र | मे . ल सु सं . ग त
+ १३ १ ५

ग ग ग रे ग प प ग | ग प ध प प रे रे सा सा
ब र ज म नी . भु . | पा . . ली रु चि र सु र
+ १३ १ ५

अंतरा

ग ऽ ग ग प प सां ध | सां ऽ सां सां ऽ रें सां सां
मं . ग ल म य क . | ल्या . ण मे . ल यु त
+ १३ | १ ५

ध सां ध सां सां ऽ रें ऽ | सां रें गं रें सां ध ऽ प प
(० under सां and रें)
ग ध वा . दी . सं . | वा . . दी . सो . ह त
+ १३ | १ ५

ध गं गं रें ऽ सां ध ध | ध सां रें सां ध ऽ प प
प्र थ म या . म नि स | गे . य सु सं . म त
+ १३ | १ ५

प ऽ ग ग प प ध प | ग रें ग रे सा ऽ सा सा
पं . च म तृ ति य सु | र न की . सं . ग त
+ १३ | १ ५

सा सा रे रे ग ग प प | ध ऽ ध ध सां ध सां सां
उ ल ट पु ल ट सु र | की . गु नी सा . ध त
+ १३ | १ ५

ध प ग रे ग सा ऽ रे | प ग ग रे ग प ध प ‖
र च ना . प्र भा . व | शा . ली सु सं . ग त ‖
+ १३ | १ ५

राग भूपाली—तीनताल (मध्यलय)

अयि भुवन मन मोहिनी ।
निर्मल सूर्य करोज्वल धारिनि । जनक जननी जननी ॥
नील सिन्धुजल धौत चरण तल । अनिल विकम्पित श्यामल अंचल
अम्बर चुम्बित भाल हिमाचल । शुभ्र तुषार किरिटिनि ॥

प्रथम प्रभात उदित तव गगने । प्रथम साम रव तव तपोवने ॥
प्रथम प्रचारित तव वन भवने । ज्ञान धर्म कत काव्य काहिनी ॥
चिर कल्याण मयी तुमि धन्य । देश विदेशे वितरिछ अन्न ॥
जान्हवी जमुना विगलित करुना । पुण्य पीयूष स्तन्य वाहिनी ॥

स्थायी

, , सां सां
. . अ यी

५

ध प ग ग	रे सा ऽ रे	प ऽ ग ऽ	रे ग ऽ ऽ
भु व न म	न मो . हि	नी . . .	. . . .
+	१३	१	५
ग ऽ प प	प ऽ प प	ध ऽ प प (ग)	रे ऽ सा सा
नि . र्म ल	सू . र्य क	रो . ज्व ल	धा . रि नी
—	१३	१	५
ग ग ग रे	ग प ध ध	प ध सां सां	ध प ‖ सां सां
ज न क ज	न नि ज न	नी . . .	. . ‖ अ यि
—	१३	१	५

अन्तरा

ग ऽ ग प	ऽ प सां ध	सां ऽ सां सां	सां रें सां सां
नी . ल सि	. न्धु ज ल	धौ . त च	र ण त ल
+	१३	१	५
ध सां ध सां	सां ऽ रें रें	सांरें गं रें सा	ध ऽ प प
अ नि ल वि	क . म्पि त	श्या . . म ल	अं . च ल
+	१३	१	५

ग ऽ रें सां	रें ऽ सां ध	सां ऽ ध प	ध ऽ प ग
अ . म्ब र	चु . म्बि त	भा . ल हि	मा . च ल
+	१३	१	५
ग ऽ ग रे	ग प ध सां	पध सांरें गंरें सां ध प	सां सां
शु . भ्र तु	घा . र कि	रि . . . . . टि नी .	अ यी
+	१३	१	५

राग भूपाली—तेवरताल

ध्रुपद

अपनो निज पद देत बली को,
दान मांगत बाल हो को ।
बटु कपट जब समझ कवी को,
मांगे सो मत दे तोय लहि रख वाको ॥
भूव तीन पद की मांगे वामन
हँस के नृप बोले और ले धन
भयो त्रिविक्रम कियो पद क्रम,
एक मही पर वीजे को अम्बर ।
वैजु के प्रभु तीजे को शिर पर ॥

स्थायी

ध सां ध प	ग ग प	सा रे ग सा	रे सा ऽ
अ प नो नि	ज प द	दे . त ब	ली को .
१	४ ६	१	४ ६
		ग	
ग ऽ ग प	ऽ प प	ध ऽ प रे	ऽ सा ऽ
दा . न मां	. ग त	वा . ल हो	. को .
१	४ ६	१	४ ६

ग	प	ध	सां	सां	सां	रें	ग	ग	रें	सां	रें	सां	ऽ
ब	टु	क	प	ट	ज	ब	स	म	झे	क	बी	को	.
१			४		६		१			४		६	

ध	रें	रें	रें	ध	सा	प	सां	ध	प	ग	रे	सा	सा
मां	गे	सो	म	त	दे	तो	य	ल	हि	र	ख	वा	को
१			४		६		१			४		६	

अन्तरा

ध	सां	ध	प	ग	ग	प	सा	रें	ग	सा	रे	सा	सा
भू	व	ती	न	प	द	की	मां	.	गे	बा	.	म	न
१			४		६		१			४		६	

ध	रें	रें	रें	ध	सां	सां	प	सां	ध	प	ग रे	ऽ	सा	सा
हं	स	के	नू	प	बो	ले	औ	.	र	.	ले	.	ध	न
१			४		६		१				४		६	

रें	सां	रें	ध	ऽ	सां	सां	प	प	ध	ग	ऽ	प	प
भ	यो	त्रि	वि	.	क्र	म	कि	यो	प	द	.	क्र	म
१			४		६		१			४		६	

ग	प	ध	सां	सां	सां	रें	गं	गं	रें	सां	रें	सां	सां
ए	.	क	म	ही	प	र	बी	जे	को	अ	.	म्ब	र
१			४		६		१			४		६	

ध	ऽ	रें	ध	ऽ	सां	सां	प	सां	ध	प	ग	रे	सा
बै	.	जु	के	.	प्र	भु	ती	जे	को	शि	र	प	र
१			४		६		१			४		६	

राग भूपाली–तिलवाडा (वि० ख्याल)

ख्याल

सूधे बोलत ना रूप की गरूरं ।
कर रही मान मान न प्यारी कीन्हे जतन करोर ॥

स्थायी

सां ध ध रे सा ग
ध सां ऽ प ग प | ग ऽ रे ऽ सा ऽ धं सा ऽ रेग ऽ
सू . . धे . . | बो . . . ल . त . . ना . .
१३ १ ५

ग सां
ध ऽ प ध पप ऽ ग रे ग प ऽ | ध सां ऽ सां सांरें ऽ सांरेंसांसां ऽ
रू . प . . . . . की . . | ग . . . . . . रू . . . .
+ १३ १ ५

सां ध ध
ध प पध ऽ गप ध सां ऽ प गप ||
र . . . . . . सू . . धे . . ||
+ १३

अन्तरा

ध ध
सां ध सां सां ऽ सां | सां ऽ सां सां ऽ सां रें रें ऽ सा
क र र ही . . | मा . . न . मा . न . न
१३ १ ५

प सां
सांरें सांसां ऽ ध प प सां ऽ ध प ग रे ऽ ग प ध | ध सां ऽ
प्या . . . री . की . न्हें . . . . ज त न | क . .
+ १३ १

ध . सां सां ध ध
सां सां रें ऽ सांरें सांसां ऽ ध प पध ऽ गप ध सां ऽ प ग प
. . . . रो . . . . र . . . . . . सू . . धे . .
५ + १३

राग भूपाली–तीनताल (मध्यलय)

जबसे तुमीसन लागरी प्रीत नवेलरी प्यारे बल्मा मोरे ॥
जोनन देखो तोहे कल न पावे मोहे चरचा करे सब सहेलरी ॥

स्थायी

गरे गरे सारे साधं | सा ऽ सारे ऽ रे ग ऽ ग प ग |
जब से . तु मी स न | ला . . . . ग री . प्री त न |
+ १३ १ ५ + १३

प ध प प ग रे सा ’ ग प ध सां | प ध सां सां ध प ||
वे . . . ल . री प्या रे ब . | ल्मा . . . मो रे ||
१ ५ + १३ १ ५

अंतरा

’ ’ प ऽ सां ध सां सां ऽ ऽ ध | सां ऽ धध सांसांसां रें ऽ सांरें सांध |
. . जो . न न दे खो . . तो | हे . क ल नपा . . . वे . मो हे |
१ ५ + १३ १ ५ + १३

प ऽ ध सांध प ग रे ऽ ग पध सां | धरें सांसां धप ||
. . च . र्चा क . . . रे सब स | हे . . . लरी ||
१ ५ + १३ १ ५

राग हमीर

यह कल्याण थाट का राग है। इससे दो मध्यमों का प्रयोग है। कोमल नी का प्रयोग कभी कभी विवादी के नाते होता है। बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में पंचम का अल्प प्रयोग है। आरोह मे बहुधा रे, प, और नी वक्र होते हैं और अवरोह में गंधार वक्र है। इसलिए इसकी जाति वक्र संपूर्ण है। कुछ लोग पंचम को आरोह में वर्ज्य मानकर जाति षाडव-संपूर्ण मानते हैं। शुद्ध मध्यम का प्रयोग आरोहावरोह में बराबर है। पर तीव्र मध्यम का प्रयोग पंचम के साथ होता है, जैसे :--'म़प, गमध,' या 'म़प, गमरे, गमध'। वादी स्वर धैवत और संवादी गंधार है। कुछ लोग पंचम वादी मानते हैं और कुछ लोग गंधार भी वादी मानते हैं। गानेका समय रात का दूसरा प्रहर है।

आरोह :—सारेगमध, निसां।

अवरोह :—सांनिधप म़ प, गमरेसा।

पकड़ :—गमध, म़प, गम रेसा।

आलाप

(१) सा, सा रे, सा, ग म रे सा, सा रे ग म, रे सा, सा रे ग म, रे, ग म प, ग म, रे सा।

(२) सा रे सा, सा रे ग म, रे, ग म प, प, ग म रे, ग म प, ग म रे, म रे, रे ग म प ग म रे, ग म ध, म़ प, ग म रे, प, ग म रे, निं सा।

(३) सा रे ग म प, प, ध म् प, ग म रे, ग म ध, ध, ध, म् प, प ध म् प, ग म रे, रे ग म ध, म् प, ध म् प, ग म रे, रे सा, म रे, सा, प, ग म रे सा, ध, म् प, ग म प, ग म, रे सा ।

(४) सा निं धं, निं सा, सा रे, सा, सा रे ग म ध, म् प, ग म ध, नि ध नि सां, नि ध म् प, सां नि ध प, प ध म् प, ग म ध, ध, प, म् प ध, प, ग म प, ग म रे, सा, प, ग म रे, म रे, निं सा ।

(५) ग म ध, नि ध, नि सां, सां नि ध, प म् प, ध प, ग म ध, सां, सां रें, सां, रें, सां नि ध, प, म् प ध प, नि ध नि सां, नि ध, प, प ध म् प, ग म रे, ध, ग म रे, सा रे ग म प, ग म रे, निं सा ।

(६) सा रे ग म ध, नि सां, सां रें, सां, सां रें गं मं रें, सां, मं रें, सां, रें सां, सां रें सां नि ध प म् प, ग म ध, ध नि सां रें, सां नि ध प, नि ध, म् प, ध प, प, ध म् प, ग म रे, म रे, ध म् प, ग म रे, रें, सां नि ध प, म् प, ग म रे, ग म ध, म् प, ग म प, ग म रे, निं सा ।

(७) ग म ध, नि सां, सां नि ध नि रें सां, सां रें गं मं रें सां, सां रें गं मं पं, गं मं पं, गं मं रें सां, सां रें, सां, ग म ध, सां, नि ध नि सां, म् प ग म ध, नि सां, सां नि, ध म् प, प ध म् प, ग म रे, रे, ग म ध, रे, प, ग म रे, सा म ग प, म् ध म् प, नि ध नि सां नि ध म् प ग म रे, प, ग म, रे, सा रे निं सा ।

तानें

(१) सा रे सा, सा रे ग म रे सा, सा रे ग म प ग म रे सा, सा रे ग म ध प ग म रे सा, सा रे ग म नि ध म् प ग म रे सा,

सा रे ग म ध नि सां नि ध प म् प ग म रे सा, सा रे ग म
ध नि सां रें सां नि ध प म् प ग म रे सा, सा रे ग म ध नि
सां रें गं मं रें सां नि ध म् प ग म रे सा, सा रे ग म ध नि सां
रें गं मं पं गं मं रें सां नि ध प म् प ग म रे सा ।

(२) सा रे निं सा ग म रे सा, सा रे निं सा ग म प ग म रे सा,
सा रे निं सा ग म ध प म् प ग म रे सा, सा रे निं सा ग म
नि ध म् प ग म रे सा, सा रे निं सा ग म ध नि सां नि ध
प म् प ग म रे सा, सा रे निं सा ग म ध नि सां रें सां नि
ध प म् प ग म रे सा, सा रे निं सा ग म ध नि सां रें गं मं
रें सां नि ध प म् प ग म रे सा, सा रे निं सा ग म ध नि
सां रें गं मं पं गं मं रें सां नि ध प म् प ग म रे सा ।

(३) सां नि ध प म् प ग म रे सा, सां रें सां नि ध प म् प ग म
रे सा, सां रें गं मं रें सां नि ध प म् प ग म रे सा, सां रें गं
मं पं गं मं रें सां नि ध प म् प ग म रे सा, पं—गं मं रें सां
नि ध प म् प ग म रे सा, मं—गं मं रें सां नि ध प म् प ग
म रे सा, रें—सां नि ध प म् प ग म रे सा, सां—नि ध प
म् प ग म रे सा ।

(४) सा रे ग म प ग म ध ध म् प ध नि सां नि ध प म् प
ग म रे सा, ग म ध ध म् प ध नि सां नि ध प म् प ध
नि सां रें सां नि ध प म् प ग म रे सा, म् प ध नि
सां नि ध प म् प ध नि सां रें सां नि सां रें गं मं रें सां
नि ध प म् प ग म रे सा, ध नि सां रें सां नि सां रें गं
मं रें सां सां रें गं मं पं गं मं रें सां नि ध प म् प ग म रे सा ।

(५) ग म रे सा, प ध म् प ग म रे सा, ध ध म् प ग म प
ग म रे सा, नि नि ध प म् प ग म प ग म रे सा, सां नि

ध प म् प ग म प ग म रे सा, सां रें सां नि ध प प ध
म् प ग म प ग म रे सा, गं मं रें सां सां रें सां नि ध प
प ध म् प ग म प ग म रे सा, मं पं गं मं रें सां सां रें
सां नि ध प प ध म् प ग म प ग म रे सा।

(६) ग म म ग म म ग म म रे सा, म प प म प प म प प
ग म रे सा, प ध ध प ध ध प ध ध म् प ग म रे सा,
नि सां सां नि सां सां नि सां सां ध प म् प ग म रे सा, सां
रें रें सां रें रें सां रें रें सां नि ध प म् प ग म रे सा, गं मं मं
गं मं मं गं मं मं रें सां नि ध प म् प ग म रे सा, मं पं पं मं
पं पं मं पं पं गं मं रें सां नि ध प म् प ग म रे सा।

(७) सा रे ग म ध नि सां नि ध प म् प ग म रे सा, सा रे ग म
ध म् प ध नि सां रें सां नि ध प म् प ग म रे सा, सां रें गं
मं रें सां नि ध म् प ग म रे सा; सा रे ग म रे सा रे ग म
ध म् प ध नि सां रें नि सां रें गं मं पं गं मं रें सां नि ध प
म् प ग म रे सा, म म ग म रे सा, प प म प प म प प ग म
रे सा, ध ध प ध म् प ग म रे सा, सां सां नि सां सां नि सां
सां नि ध प म् प ग म रे सा, रें रें सां रें सां नि ध प म्
प ग म रे सा. मं मं गं मं मं गं मं मं रें सां नि ध प म् प ग म
रे सा, सा रे ग म ध ग म ध नि सां म् प ध नि सां रें सां
रें गं मं पं गं मं रें सां नि ध प म् प ग म रे सा।

राग हमीर—तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

ध	ऽ	नि	सानि	धप	म्प	गम	धध	म्प	
१			५		+		१३		

गमरेसा सारेगम रे रे सा सा प मपगम ||
१ ५ + १३

अन्तरा

प प सां सांसांसां धनि सारें सांनिधप |
१ ५ + १३

सांरें गंमं रें रें सांसां सांनिधप म प ग म ||
१ ५ + १३

राग हमीर—तेवरा ताल

राग लक्षण

यह सुखद राग हमीर निशि प्रति प्रहर पहले गाईये ।
रखि सुर समस्त पुनीत निर्मल तीव्र मध्यम लाइये ॥
सुर वादि धैवत करत अरु संवादि सुर गंधार को ।
आरोह पंचम हीन विलसत वक्र नी अनुलोम को ॥१॥
प्रति लोम सोहत मधुर वक्र गंधार सुर इस राग में ।
अस मधुर रचना प्रगट होवत वीर अरु श्रृंगार में ॥२॥
पं० खरे शास्त्री

स्थायी

नि
सा सा | प प प प ध म प ग म | ध ऽ रें
य ह | सु ख द रा . . . ग ह | मी . र
६ १ ४ ६ १

सां नि ध प | म प ध म प प ऽ | ग ऽ
नि शि प्र ति | प्र ह र प ह ले . | गा .
४ ६ १ ४ ६ १

निं
म ध ऽ म् प | ध ध प म् प प प | ध
इ ये . र खि | सु र स म . स्त पु | नी
४ ६ १ ४ ६ १

ऽ प म् प प प | ग म रे ग म ध प |
. त नि . मैं ल | ती . ख म . ध्य म |
४ ६ १ ४ ६

प
ग म रे सा ऽ ||
ला . इ ये . ||
१ ४

अन्तरा

प प | सां ऽ सां सां ऽ सां सां | सां सां सां
सु र | वा . दि धै . व त | क र त
६ १ ४ ६ १

सां सां सां ऽ | ध नि ध सां सां सां ऽ | सां रें
अ रु सं . | वा . दि सु र गं . | धा .
४ ६ १ ४ ६ १

नि सां सां ध ऽ सां ऽ | गं मं रें नि सां सां सां | ध ऽ प
. . र को . आ . | रो . ह पं . च म | ही . न
४ ६ १ ४ ६ १

म् प प प | ग म रे ग म ध प | ग म रे सा ऽ ||
वि ल स त | व . क्र नी . अ नु | लो . म को . ||
४ ६ १ ४ ६ १ ४

राग हमीर–चारताल ध्रुपद

चंचल चपला की गत तैसो कमल वदनी अनुपम ।
कामिनि सुन्दर करन फूल राजत माने मंगल गावो ॥
मुख मूरत छबि सुन्दर परम काम विश्राम धाम ।
दृग विशाल अधर पर विद्रुम बार बार डार ॥

स्थायी

सां ऽ ऽ सां ध ऽ | नि ध ऽ म् प प ध प ऽ म् प प |
चं . . च ल . | च प . ला . की ग त . तै . सो |
+ ९ ११ १ + ५ + ९ ११

ग म रे ग म ध म् प ग म ऽ रे सा ऽ | रे सा रे ऽ सा सा रे
क म ल व द् नी अ नु . . . प म . | का . . . मि नी सु
१ + ५ + ९ ११ १ + ५

सा रे ऽ सा सा सा रे धं सा | ऽ रे सा ऽ
. . . न्द् र क र न फू | . ल रा .
+ ९ ११ १ +

सा ध प ऽ ऽ ग ऽ म | ध नि रें सां ध नि ||
ज त मा . . ने . मं | . ग ल गा . वो ||
५ + ९ ११ १ + ५

अंतरा

ग म ध ऽ नि सां सां सां सां सां ऽ सां सां | ध ध ध सां
मु . ख . मू र त छ बि सु . न्द् र | प र म का
१ + ५ + ९ ११ १ +

ऽ सां सां रें सां ऽ ऽ नि | ध ऽ प म् प प ऽ ध प म् प प ||
. म वि स रा . . म | धा . म द्द ग वि . शा . . . ल ||
५ + ९ ११ १ + ५ + ९ ११

सा सा सा ध ध प ऽ ध नि सां ऽ नि | ध ऽ प ध नि रें ||
अ ध र प र वि . द्रु म वा . र | वा . र डा . र ||
१ + ५ + ९ ११ १ + ५

राग हमीर—एकताल (ख्याल)

करन चहूँ रघुपति गुण गाहा। लघुमति मोरि चरित अवगाहा॥
सूझन एको अंग उपाऊ। मनुमति रंक मनोरथ राऊ॥

स्थायी

नि नि
नि सां नि ध नि ध म् प ग म | ध ध ऽ ध ध
क र न . च हूँ . . र घु | प ति . गु ण
९ ११ १ +

नि नि नि म्
ध नि ध म् प ध नि सां ध प ग म | ध ऽ प
गा . . हा . . . . . . ल घु | म . ति
५ + ९ ११ १ +

ऽ प ध म् प ऽ ग म ऽ रे ऽ रे ग म ध म् प |
. मो . . . . री . च रि त . अ व |
५ + ९ ११

ध म् प ऽ ग म प ऽ ग म रे सा रे निं सा ऽ ||
गा . . . . हा . . . . . ||
१ + ५ +

अंतरा

नि
प सां सां सां ऽ सां | सां ऽ सां सां सां सां ऽ नि रें
सू झ न ए . . | को . अं ग उ पा . . .
९ ११ १ + ५ +

सां ऽ सां ग म प ग म रें | सां ऽ सां रें नि सां
ऊ . म नु . . . . म | ती . रं . . .
९ ११ १ +

नि नि नि
ऽ ध म प प ऽ ग म ध ऽ ध ध | ध नि ध ऽ म प ध नि
. . . . क . म नो . . र थ | रा . . . .
५ + ९ ११ १ + ५

सां नि ध ऽ म प ||
. . . . ऊ . ||
+

राग हमीर—तीनताल (मध्यलय)

गुरु बिन कौन बतावे बाट, बड़ा विकट यमघाट ॥
भ्रांति की पहाड़ी नदिया बिचमों, अहंकार की लाट ॥
मद मत्सर का मेह बरसत, माया पवन बहै दाट ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, क्यों तरना यह घाट ॥

स्थायी

नि
प ध नि सां नि ध प म प ध प ध म प ग म | ध ऽ ध प ध
गु रु . . बि न कौ . न ब ता . . . वे . | बा . ट गु रु
५ + १३ १ ५

नि सां नि ध ग ग म ध म् प म रें | ग म ध म् प म || ग म रे सा
. . बिन ब डा. वि क ट य म | घा. . . . ट || गुरु बि न
+ १३ १ ५

अंतरा

प सां सां सां सां सां | ध नि सां रें सां नि ध म् प म् प ऽ प ध
आंति की प हा ड़ी | न दि या. बि च मो. . अ ह्. का.
+ १३ १ ५ +

नि
म् प प ग म | ध ऽ ध ||
. . र की . | ला . ट ||
१३ १

राग हमीर—तीनताल (मध्यलय)

ढोट लंगरवा कैसे घर जाऊँ,
सुन पावे मोरी सास ननंदिया छांड दे मोहे ।।
मैं चली पनघटवा ठाढ़ो, कौन बहाने प्यारे बल्मा ।
छीन ली मोरी शीश गगरिया बरजोरी पी आवे सुंदरवा ।।

स्थायी

म् प प ध पध म् प ग म | ध ऽ नि ध नि सां सां सां सांरें
ढो. ट लं ग . र . वा . | कै . . से . . घ र जा .
+ १३ १ ५ +

सां नि ध प म् प गमरेसा नि सा सा | सा सा म ग प म् ध
. . . . ऊँ | सु न पा . वे . मो
१३ १ ५

प नि नि प ध प ध म प ग म | ध ऽ नि ध नि सां रें सां नि ध ||
री सा . स न नं . दि . या . | छां . ड़ दे . . . मो हे . ||
+ १३ | १ ५

अंतरा

प ऽ सां सां सां सां ध नि ध नि सां रें ऽ सां ऽ सां | धनि धनि
मैं . च ली प न घ ट वा . . . . ठा . ढो | कौ. न ब
१ ५ + १३ | १

सां सां ऽ सां रें नि सां ऽ ध प | मं गं मं रें सां रें सां सां धनि
हा ने . प्या . रे . . बल्मा | छी . न ल ई . मो री शी .
५ + १३ | १ ५ +

सां रें नि सां ध प | म म प धनि सां रें सां निध म पध पध म प
श ग ग रि या . | ब र जोरी . . . पी . . आवे सुंद . र .
१३ | १ ५ + १३

ग म | ध ऽ नि ध नि सां रें सां नि ध ||
वां . | कै . . से . . . घ र . ||
| १ ५

राग खमाज

यह खमाज थाट का आश्रय राग है। इसमें दो निषाद लगते हैं। आरोह में शुद्ध और अवरोह में कोमल निषाद। आरोह में रिषभ वर्ज्य है। इसलिये इसकी जाति षाडव-संपूर्ण है। इसके अवरोह में धैवत-स्वर का महत्व नहीं है। अवरोह में भी पंचम को वक्र करते हैं, जैसे;—'नि॒ध, मपध,मग'। ध-म की संगति है। वादी स्वर गंधार और संवादी निषाद है। पूर्वांगवादी राग है। राग रात के दूसरे प्रहर में गाया जाता है। क्षुद्र प्रकृति का राग है। इसमें ठुमरी आदि गीत गाये जाते हैं। अवरोह में दोनों निषादों का साथ साथ प्रयोग भी होता है।

आरोहः—सागमपधनिसां।

अवरोहः—सांनि॒धपमगरेसा।

पकड़ः—गमपधनि॒ध, मपध, मग।

आलाप

(१) सा, निं सा, ग म ग, सा ग म ग, सा ग म प, ग म ग, प, म, ग, रे, सा।

(२) सा ग, ग म प, ग म ग, प ध, ग म ग, म ध, प ध नि, ध प, प ध, ग म ग, सा ग म प, म ग रे सा।

(३) निं सा ग म प, ग म प, ग म ध प, नि॒ ध प, सां नि॒ ध प, प नि॒ ध प, धं, ग म ग, नि सां नि॒ ध, म प ध, म ग, प म ग रे सा।

(४) ग म प, ग म ध, ग म प ध नि, सां, सां, रें नि सां नि॒ ध, म प नि॒ ध, म प, ग म ग, सा ग म प, ग म ग, प नि सां, नि॒ ध, म प, ग म ग, म ग, प म, ध, ग म ग, म ग, रे सा।

(५) ग म ध नि सां, नि सां, पनि सां रें, नि सां नि॒ ध, सां गं, मं गं रें सां, नि नि सां रें, नि सां नि ध, सां नि नि॒ ध, म प ध, म ग, सा म, ग म, प ध नि सां, प सां नि॒ ध, ग म नि॒ ध, प ध म ग, ग प, म ग रे सा।

जलद तानें

(६) सा ग म ग रेसा, सा ग म प म ग रे सा, सा ग म प नि॒ ध प म ग रे सा, सा ग म प ध नि सां नि॒ ध प म ग रे सा।

(७) निं सा ग म प ग म ध प म ग रे सा, निं सा ग म प ग म प ध नि सां नि॒ ध प म ग रे सा, निं सा ग म प ग म प नि सां रें सां नि॒ ध प म ग रे सा।

(८) सां नि॒ ध प म ग रे सा, सां नि सां रें सां नि॒ ध प म ग रे सा, सां गं मं गं रें सां नि॒ ध प म ग रे सा।

(९) ग म प ग म प ध नि॒ ध प म ग म प ध नि सां नि॒ ध प म ग रे सा, प नि सां प नि सां रें सां नि॒ ध प म प नि॒ ध प म ग प म ग रे सा, सा ग म प ग म प ध नि सां नि सां गं मं गं रें सां नि॒ ध प म ग रे सा।

(१०) प प म ग रे सा, ध ध प ध प म ग प म ग रे सा, नि नि प नि सां रें सां नि॒ ध प म ग रे सा, गं गं रें गं मं गं रें सां नि॒ ध प म ग रे सा, नि सां गं मं पं पं मं गं रें सां नि॒ ध प म ग रे सा।

राग खमाज–तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

सां नि ध सां नि ध म ग | म प ध म ग रे सा
+ १३ १ ५
सा सा ग म प ग म | नी ध सां नी ध प म ग ||
+ १३ १ ५

अंतरा

ग म ध नी सां नी सां | सां गं गं मं गं रें सां
+ १३ १ ५
सां रें सां नी ध प म ग | म प म ग म ग रे सा
+ १३ १ ५
सा सा ग म प ग म | नी ध सां नी ध प म ग ||
+ १३ १ ५

राग खमाज–एक ताल

राग लक्षण

सोहत मधुर खमाज, सुध सुर युत दोऊ निषाद ।
समय द्वितीय प्रहर रात, षाडव संपूरन यात ॥
आरोहन ऋषभ छुटत, सब सुर अवरोह करत ।
गनी नृप मंत्री सम्मत, संगत सुर धमकी लसत ॥

स्थायी

प
सा गग गम पध गम गग | गम पप पधसां निध पम गग |
सो हत मधु रख मा . . ज | सुध सुर यु . त दोऊ निपा . द |
१ + ५ + ९ ११ १ + ५ + ९ ११

म नि् धनि् पध नि सां नि सां ऽ सां | पनि सांरें निसां नि्ध
स म य द्वि तीय प्र ह र रा ऽ त | पा. . . ड व सं .
१ + ५ + ९ ११ १ + ५

म प ध म ग ग ||
पू र न या . त ||
+ ९ ११

अंतरा

ग म नि् ध नि सां नि सां सां सां | नि सां नि सां सां रें नि सां
आ रो ह न ऋ ष भ छु ट त | स ब सु र अ व रो .
१ + ५ + ९ ११ १ + ५ +

नि् ध ध ध | ग नि् ध नि् पध नि सां सां सां | गं रें सां नि
ह क र त | ग नि नृ प मं. त्री सं म त | सं . ग त
९ ११ १ + ५ + ९ ११ १ +

ध प ध म प ध म ग ||
सु र ध म की ल स त ||
५ + ९ ११

राग खमाज—चारताल

राजत रघुवीर धीर भंजन भव भीर पीर
हरन सकल सरयू तीर, निरखहुँ सखी सोहे ।
अनुज मनुज निकर संग करन दनुज बलही भंग
अंग अंग छबि अनंग अगणित मन मोहे ॥

स्थायी

नि ऽ सां सां प नि सां रें सां नि् ध प ध |
रा . ज त र घु वी . र धी . . र |
१ + ५ + ९ ११

म ऽ प प नि॒ ध म प म ग ऽ ग |
भं . ज न भ व भी . र पी . र |
१ + ५ + ९ ११

सा म ग म प ध नि सां नि सां ऽ सां |
ह र न स क ल स र यू ती . र |
१ + ५ + ९ ११

ग रें सां नि सां रें नि सां नि॒ ध नि॒ प ध ||
नि र ख हुँ स खी सो . हे . . . . ||
१ + ५ + ९ ११

अंतरा

म ग म नि॒ ध नि नि सां नि सां ऽ सां |
अ नु ज म नु ज नि क र सं . ग |
१ + ५ + ९ ११

नि सां नि सां सां रें नि सां नि॒ ध ऽ ध |
क र न द नु ज ब ल हि भं ऽ ग |
१ + ५ + ९ ११

म ग म प ऽ ध नि सां नि सां ऽ सां |
अं . ग अं . ग छ वि अ नं . ग |
१ + ५ + ९ ११

ग रें सां नि सां रें नि सां नि॒ ध नि॒ प ध ||
अ ग णि त म न मो . हे . . . . ||
१ + ५ + ९ ११

राग खमाज–झपताल

जयति नव नागरी, सकल गुण सागरी
कृष्ण गुण आगरी दिनन भोरी ॥
जयति हरि भामिनी कृष्ण घन दामिनी
मत्त गज गामिनी नव किशोरी ॥

स्थायी

नि सां	नि सां रें	ध सां	नि ध प
ज य	ति न व	ना .	ग री .
१	३	+	८
ग म	प नि ध प	ग प	म ग ऽ
	० ०		
स क	ल गु ण .	सा .	ग री .
१	३	+	८
नि सा	सा ग म	प ध	नि सां ऽ
कृ .	ष्ण गु ण	आ .	ग री .
१	३	+	८
प नि	सां ऽ रें	ध सां	नि ध प ध
			० ०
दि न	न . .	भो .	री . . .
१	३	+	८

अन्तरा

ग म	म नि ध	नि सां	नि सां ऽ
ज य	ति ह रि	भा .	मि नी .
१	३	+	८
नि सां	नि सां रें	नि सां	नि ध ऽ
कृ .	ष्ण घ न	दा .	मि नी .
१	३	+	८

सां ऽ　गं गं मं　गं रें　सां नि ध
म .　न्त ग ज　ना .　मि नी .
१　३　+　८
प नि　नि सां रें　ध मां　नि ध प ध
न व　कि शो .　री .　८ . . .
१　३　+　.

राग खमाज—तीनताल (मध्यलय)

ऐसो को उदार जग माहीं। विनु सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोऊ नाही ॥ध्रु॥ जो गति जोग विराग जतन करि, नहि पावत मुनि ग्यानी। सो गती देत गीध शवरी कहँ, प्रभु न वहुत जिय जानी ॥१॥ जो संपति दशशीश अर्पि कर रावण शिव पहँ लीन्ही। सो संपदा विभीषण कहँ अति, सकुच सहित प्रभु दीन्ही ॥२॥ तुलसीदास सव भांति सकल सुख, जो चाहसि मन मेरो। तो भजु राम काम सव पूरन, करहिं कृपानिधि तेरो ॥३॥

स्थायी

प ध पधनिसां नि धप धम ग म पध | नि सांनि सां निधपध
ऐ . सो . . . को . . उ दा . र ज ग | मा हीं . . ऐ . . .
५　१३　१　५

पधनिसां नि नि नि ऽ सां नि सां ऽ | प नि सां रें ध सां नि ध ध
सो . . . वि नु से . वा . जो . | द्र वै . . दी . न प र
१३　१　५

ग सा ग म ग म प ध | नि सां नि सां
रा . म स रि स को ऊ | ना हीं . .
+　१३　१

अंतरा

ग म ध नि सां सां नि | सां नि रें नि सां नि् ध धनि् धप गम
जो . ग ति जो ग वि | रा ग ज त न क रि न हि पा . वत
+ १३ १ ५ + १३

पध | ग म पध नि सां ऽ सां ऽ सां गंगं गं गंमं | गंमंरेंगं नि
मुनि | ग्या . . . . . . नी . सो गति दे तगी | . धशब री
१ ५ + १३ १ ५

सांसां नि सां नि सां नि सांसांरें | निसां नि्ध ||
क हँ प्र भु न ब हु त जिय | जा . नी . ||
+ १३ १

राग खमाज—दादरा

जानकि जीवन दुःख हरन रघुवीर जानकी ।।धृ।। कनक मुकुट त्रिकुटि विवट, तिलक रेख रेणु रुचिर। मकराकृति कुंडल छवि धनुष बाण की ।।

—सं० बाल प्रकाश

स्थायी

सां नि् ध प म ग | ग म प प ध | सां नि् ध ध नि |
जा न की जी व न | दु ख ह र न | जा न की र घु |
१ + १ + १ +

सां नि सां रें | सां नि सां नि् ध प ध ||
वी र जा न | की . . . . . ||
१ + १ +

अंतरा

म ग म नि् ध नि | नि सां नि सां सां सां | नि सां नि
क न क मु कु ट | त्रि कु टि वि व ट | ति ल क
१ + १ + १

सां रें | सां नि सां नि् ध ध ध | नि सां रें रें गं | रें गं
रे ख | रे . . गु रु चि र | म क रा कृ ति | कुं .
+ १ + १ + १

मं गं रें नि सां | नि सां नि सां रें | सां नि सां नि् ध प ध ||
. ड ल छ बि | ध नु ष बा ण | की . . . . . . ||
+ १ + १ +

राग खमाज—तीनताल (मध्यलय)

क्यों मन जीवन सार बिसारा ॥ध्रु॥
विषय परायन होय जगत में, फिरे अंध मतवारा ॥१॥
जिस जग में तू भूल रहा है, दो दिन का है गुजारा ॥२॥
धन दारा सुत काम आवे, जिन पर कियो सहारा ॥३॥
जीवन पथ तू त्याग करे नहिं, जिससे हो निस्तारा ॥४॥

स्थायी

प ध नी रें नी सां नी ध प ध म ग ग म प ध | नी सां
क्यों . म . न जी . . . व न सा . र बि | सा रा
५ + १३ १

अंतरा

ग म ध नी सां नी सां सां | नी सां रें सां नी सां नी ध
वि ष य प रा . य न | हो य ज ग . त में .
\+ १३ | १ ५

सां गं ऽ गं ऽ मं गं रें गं | नी सां नी सां ||
फि रे . अं . ध . म त | वा रा . . ||
\+ १३ | १

राग देश

यह खमाज थाट से उत्पन्न ओडव-संपूर्ण राग है। इस राग में दोनों निषादों का प्रयोग होता है। आरोह में शुद्ध निषाद और अवरोह में कोमल निषाद का उपयोग होता है। तार सप्तक में कभी कभी कोमल गंधार का विवादी के नाते से प्रयोग होता है, उदाहरणार्थ :—सां, रें गं रें सां। आरोह में गंधार और धैवत वर्जित हैं और अवरोह में सब स्वर लगते हैं। कभी कभी आरोह में गंधार और धैवत का अल्प प्रयोग होता है, इसलिए कुछ लोग इन स्वरों का अल्पत्व मानते हुए देश राग को संपूर्ण-संपूर्ण जाति का मानते हैं। इसमें वादी स्वर पंचम और संवादी ऋषभ है। कुछ लोग ऋषभ वादी और पंचम संवादी भी मानते हैं। अवरोह में ऋषभ वक्र होता है :—प ध प म ग रे, ग सा (ग नि सा)। ध-म की संगति इस राग में है। गाने का समय रात का दुसरा प्रहर है।

आरोह :—नि सा रे म प नि सां।
अवरोह :—सां नि ध प म ग रे, ग नि सा।
पकड :—ध, म, ग रे, ग नि सा।

आलाप

(१) सा, नि सा, नि सा रे म ग रे, रे म ग रे, म, ग रे, ग, नि सा।

(२) निं सा रे म, ग रे, म प, म प ध, म, ग रे, रे प, म ग रे, सा रे म, ग रे, निं सा रे, नि॒ धं पं, निं सा ।

(३) नि सा रे म प, म प नि॒ ध प, नि॒ ध प, रे म प नि॒ ध प, प ध म ग रे, रे ग रे प, म ग रे, रे म, ग रे, ग निं सा ।

(४) सा रे म प नि॒ ध प, म प नि सां नि॒ ध प, म प नि॒ ध प, म प ध म ग रे, रे म प ध म ग रे, नि॒ ध प, म प ध म ग रे, प, म ग रे, म, ग रे, ग निं सा ।

(५) म रे म प नि सां, प नि सां रें, नि॒ ध प, म प सां, नि॒ ध प, म प नि॒ ध प, ध, म ग रे, रे म प नि सां, प नि॒ ध प, ध, म प ध, म ग रे, रे प, म ग रे, रे ग सा रे म, ग रे ग निं सा ।

(६) म प नि, सां, नि सां, सां, नि सां रें, मं गं रें, नि सां रें मं गं रें, गं नि सां, नि सां, नि सां रें, नि॒ ध प, रे म प नि॒ ध प, प, म प ध, म ग रे, ग रे, प, म ग रे, रे रे म प नि॒ ध प, म प ध, म ग रे, ग निं सा ।

(७) सा रे म प नि, सां, प नि सां रें, रें गं सां रें मं गं रें, रें पं, रें मं, गं रें, मं, गं रें, गं, नि सां, सां, प नि सां रें, नि॒ ध प, नि, सां, नि सां रें, नि॒ ध प, सां, नि॒ ध प, म प नि॒, ध प, ध म प ध, म ग रे, प, रे म, ग रे ग, निं सा ।

तानें

(१) सा रे म ग रे सा, सा रे म प म ग रे सा, निं सा रे म प ध प म ग रे सा, निं सा रे म प नि॒ ध प म ग रे सा, निं सा रे म प नि सां नि॒ ध प म ग रे सा, निं सा रे म प नि सां रें सां नि॒ ध प म ग रे सा, निं सा रे म प नि सां रें मं गं

रें सां नि् ध प म ग रे सा, निं सा रे म प नि सां रें मं पं मं गं रें सां नि् ध प म ग रे सा।

(२) निं सा रे ग सा रे म ग रे सा, निं सा रे म रे म प म ग रे सा, निं सा रे म प ध म प ध प म ग रे सा, निं सा रे म पनि् म प नि् ध प म ग रे सा, निं सा रे म प नि् म प नि सां नि् ध प म ग रे सा, निं सा रे म प नि् म प नि सां रें सां नि् ध प म ग रे सा, निं सा रे म प नि् म प नि सां रें मं गं रें सां नि् ध प म ग रे सा, निं सा रे म प नि् म प नि सां रें मं पं मं गं रें सां नि् ध प म ग रे सा।

(३) सां नि् ध प म ग रे सा, सां रें सां नि् ध प म ग रे सा, सां रें मं गं रें सां नि् ध प म ग रे सा, सां रें मं पं मं गं रें सां नि् ध प म ग रे सा, पं—मं गं रें सां नि् ध प म ग रे सा, मं—गं रें सां नि् ध प म ग रे सा, रें—सां नि् ध प म ग रे सा, सां—नि् ध प म ग रे सा।

(४) निं सा रे म ग रे सा रे म प नि् ध म प नि सां नि् ध प म ग रे सा, रे म प नि् ध प म प नि सां रें सां नि सां रें मं गं रें सां नि् ध प म ग रे सा, म प नि सां नि् ध प म प नि सां रें नि सां रें मं पं मं गं रें सां नि् ध प म ग रे सा।

(५) म म ग रे सा, प प म प म ग रे सा, नि् नि् ध नि् ध प म ग रे सा, सां सां नि सां नि् ध प म ग रे सा, रें रें सां रें सां नि् ध प म ग रे सा, मं मं गं रें सां नि् ध प म ग रे सा, पं पं मं पं मं गं रें सां नि् ध प म ग रे सा।

(६) रे म म रे म म रे म म रे सा, म प प म प प म प प म ग रे सा, प नि् नि् प नि् नि् प नि् नि् ध प म ग रे सा, नि सां सां नि सां सां नि सां सां नि् ध प म ग रे सा, सां रें रें सां

रें रें सां रें रें सां नि॒ ध प म ग रे सा, रें मं मं रें मं मं रें मं मं गं रें सां नि॒ ध प म ग रे सा, मं पं पं मं पं पं मं पं पं मं गं रें सां नि॒ ध प म ग रे सा।

(७) निं सा रे म प नि सां नि॒ ध प म ग रे सा, निं सा रे म प रे म प नि सां रें सां नि॒ ध प म ग रे सा, सां रें मं गं रें सां नि॒ ध प म ग रे सा, निं सा रे म ग रे सा रे म प नि॒ ध प म प नि सां रें नि सां रें मं पं मं गं रें सां नि॒ ध प म ग रे सा, म म रे म ग रे सा, प प म प प म प प म ग रे सा, नि॒ नि॒ प नि॒ ध प म ग रे सा, सां सां नि सां सां नि सां सां नि॒ ध प म ग रे सा, रें रें सां रें सां नि॒ ध प म ग रे सा, मं मं रें मं मं गं रें सां नि॒ ध प म ग रे सा, निं सा रे म प रे म प नि सां म प नि सां रें नि सां रें मं पं मं गं रें सां नि॒ ध प म ग रे सा।

राग देश—तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

रे	म	ऽ	म	प	नि	ऽ	नि	सां	ऽ	रें	सां	नि॒	ध	प
+				१३				१			५			
म	प	नि॒	ध	प	म	ग	रे	प	म	ग	रे	ग	निं	सा	सा
+				१३				१				५			

अंतरा

म	म	म	प	प	नि	नि	सां	सां	सां	नि	सां	सां	सां
+			१३				१			५			
नि	सां	रें	मं	गं	रें	नि	सां	रें	सां	नि॒	ध	प	म	ग	रे
+				१३				१				५			

नि् ध नि् प ध म प | सां नि् ध प म ग रे सा ||
\+ १३ | १ ५ ||

राग देश—तेवरा ताल

राग लक्षण

गुनी देस गावत अति मधुर, दूसर प्रहर नित रात को ।
अरु सकल सुध सुर मृदुल नी युत, सोरटी सम रूप को ॥
सुर वादी पंचम रिषभ सहचर, अल्प ध-ग आरोह को ।
अरु तनिक मृदु गन्धार सोहे, देत चित आनन्द को ॥

पं० खरे शास्त्री

स्थायी

रे
म ग | सा रे ग म ग निं सा सा सा |
गु नी | दे . . . स गा . व त |
६ १ ४ ६

म
रे म म प प नि सां | नि सां रें बि् नि्
अ ति म धु र दू . | स र प्र ह र
१ ४ ६ १ ४

ध म | प ध नि् ध प ऽ म प | नि सां नि
नि त | रा . . त को . अ रु | स क ल
६ १ ४ ६ १

सां सां सां रें | सां नि सां नि् ध ऽ प प |
सु ध सु र | मृ . दु ल नी . यु त |
४ ६ १ ४ ६

म
रे म रे म प नि॒ ध | प ध म रे ऽ ||
सो . र टी . स म | रू . प को . ||
१ ४ ६ | १ ४

अन्तरा

म प | नि ऽ नि सां ऽ सां सां | नि सां नि
सु र | वा . दि पं . च म | रि ष भ
६ | १ ४ ६ | १

सां सां सां सां | नि सां नि सां सां सां ऽ |
स ह च र | अ . ल्प ध्व ग आ . |
४ ६ | १ ४ ६

रें
नि सां रें सां रें ऽ नि सां | रें मं गं नि सां
रो . . ह को . अ रु | त नि क मृ दु
१ ४ ६ | १ ४

नि
सां ऽ | प नि सां रें रें नि॒ ऽ ध प | रे म रे
गं . | धा . . . र सो . हे . | दे . त
६ | १ ४ ६ | १

ग
म प नि॒ ध | प ध म रे ऽ ||
चि त आ . | न . न्द को . ||
४ ६ | १ ४

राग देश–झपताल

प्रभो तुम बिन कवन मोरी नैया करे पार ।
पड़ी आन मँझधार, डोल रही ॥
बोझी विषय भार, केवट मतवार ।
आवो करो पार, किरपा घनी ॥
मेरी सुनो पीर, देओ मुझे धीर ।
है नीर गंभीर, पार करो ॥

स्थायी

प नि सां रें नि | ध प ध ग म प ध म ग रे |
प्र भो . . . | तु म बि न क व न मो . री |
८ | १ ३ + ८

नि सा ग रे ऽ ग म ग रे ग नि सा सा | नि सा रे म रे
नै . या . . . क रे . . पा . र | प डी आ . न
१ ३ + ८ | १ ३

म प नि सां सां | प रें सां रें नि सां नि ध प म प ||
मँ झ धा . र | डो . . ल . र ही . . . . ||
+ ८ | १ ३ +

अंतरा

म प नि सां नि सां सां नि सां सां | नि सां सां ऽ रें नि
बो . झी . वि ष य भा . र | के . व . ट म
१ ३ + ८ | १ ३ +

सां
सां नि् ध प | प रें रें ऽ मं गं रें गं नि सां सां | प नि सां ऽ
त वा . र | आ . वो . क रो . . पा . र | कि र पा .
८ १ ३ + ८ . १ ३
रें सां नि ध प म प ऽ ||
घ नी . . . . . . ||
+

राग देश—तीनताल (मध्यलय)

नेक चाल चलिये हे मनुवा । घड़ि घड़ि पल पल हरि से डरिये ॥
आप आपना स्वतंत्रता से । कर विचार उसको अनुसरिये ।
किंतु देख कर निज दोषों को । दूर क्यौं न करिये ॥

स्थायी

रे म रे म प प सां नि | सां निसांरें नि्नि्धप मम पप सांनि्धप |
ने. क चा. ल चलि | ये . . . म नु वा. घड़ि घड़ि पल पल |
+ १३ १ ५ + १३

रे
पध म ग रे ग निंसा ||
ह रि से. ड रि ये . ||
१ ५

अन्तरा

म म प ऽ प नि | सां सांऽसां निसांसां निनिनि सांऽ सांसांसां |
आ प आ. प ना | स्व तं . त्र ता . से क र वि चा. र उ स |
+ १३ १ ५ + १३
पनिसांरें सांरें नि्नि्धप मरे मपध नि्धपप | पधमगरेग निंसा
को. . . अनु सरि ये. किं. तुदे. .खकर | निजदो. षों. को
१ ५ + १३ १ ५

रेम रेम ऽ प निसां | पनिसांरें सांनि़धप सांनि़धप मगरेसा ||
०००० ० ००० ०००० ००००
दू. रक्यों. न करि | ये . . . . ||
+ १३ १ ५

राग देश तीन ताल–(मध्यलय)

श्यामा तेरी बन्सरी नेक बजाऊँ ॥
जो तुम तान कहो मुरली में, सोही सोही गाय सुनाऊँ ॥

स्थायी

म रे म प पनि सांरें नि़धप मगरेग निंसा | रेगमरे ||
०० ०० ०० ०००० ००
श्या मा ते री बं . . . सरी. ने . . . क ब | जा . . ऊं ||
५ + १३ १

अंतरा

म प नि नि सां सां सां | रें सां नि़ ध म प निसांरेंरें निनिनिनि
० ० ०० ००
जो . तु म ता न क | हो . . . मु र ली . . मे सोहीसोही
+ १३ १ ५ +

सां सां सां | नि सां रें सां नि़ ध प ||
० ० ० ० ० ०
गा य सु | ना . . . ऊँ . . ||
१३ १

राग देश–तीनताल (मध्यलय)

तराना

तनत तन देरेना तानत तन देरेना नादिर् दिर् दानि तदानि दीम्
तन देरेना तन देरेना दानि उदनित तन तदरे दानि दीम् तदेर्ना ॥
नादिर् दिर् दिर् तुंदिर दिर् दिर् दिर् दिर् दिर् दिर् दिर् दिर् दिर्
दिर्, नि सा रे म ग रे नि सा रे सा नि ध प म ग रे धिं तिरिकिट
धिकिट कत् धिं तरान् धा धिकत् तिट धा धा धिं तिरिकिट धिकिट
कत् धिं तरान् धा धिकत् तिट धा धा धिंतिरिकिट धिकिट कत् धिं
तरान् धाधिकत् तिट धा ॥

स्थायी

म रे रे म प | नि सां ऽ सां ऽ प नि सां रें
त न त त न | दे रे . ना . ता . . .
१३ १ ५

रें सां नि ध म म ग रे | रे नि ध नि प ध म प
न त त न दे रे . ना | ना दिर् दिर् दा नि त दा नी
+ १३ १ ५

प ध नि ध प म ग रे | प म ग रे ग निं सा सा
दी . म त न दे रे ना | त न दे रे ना दा . नि
+ १३ १ ५

पं निं सा रे म रे म प | प नि म प प नि सां रें रें सां नि
उ द नि त त न त द | रे दा . नि दी . . म त दे .
+ १३ १ ५

ध प म ग रे ||
. . नां . . ||
+

अन्तरा

म म म म प प नि नि | सां सां सां सां सां सां सां
ना दिर् दिर् दिर् तुं दिर् दिर् दिर् | दिर् दिर् दिर् दिर् दिर् दिर् दिर्
+ १३ १ ५

सां नि सां रें मं गं रें नि सां | रें सां नि ध प म ग रे रे रेरे
दिर् नि सा रे म ग रे नि सा | रे सा नि ध प म ग रे धिं तिर
+ १३ १ ५ +

रेंरेंरें रेंरेंरेंरें रें रेंरें ऽ रेंरेंरें | रें रेंरें रेंगं नि निनिनिनि
◡◡○ ○○○○ ‾ ○○ ○ ○○○ | ‾ ○○ ‾‾ ○ ◡◡◡◡
किटधि किटकत धिं त रा. नधाधि ! कन् तिट धाधा धिं तिरि किट
१३

नि निनिनिनिनिनिनिऽनिनिनि सां सांसां सांरें | नि् नि्नि्नि्नि्
○ ○ ○○○ ‾ ○○○○○○ ○ ‾ ○○ ‾‾ | ○ ◡◡◡◡
धि किट कत धिंतरा .न्धा धि कन् तिट धाधा | धिं तिरि किट
+ १३

नि् नि्नि्नि्नि्नि् ध ध ऽ ध प प म म ग गे् ||
○ ○○○○ ‾ ○ ○ ○○○○ ‾ ○○ ‾ ||
धि किट कत धिं त रा . न् धाधि कत् तिट धा ||
५

राग तिलङ्ग

यह खमाज थाट का औडव-औडव जाति का राग है। इसमें दोनों निषाद लगते हैं। आरोह में शुद्ध और अवरोह में कोमल निषाद लगता है। आरोहावरोह में ऋषभ और धैवत वर्जित है। तारसप्तक में कभी कभी ऋषभ का प्रयोग अल्प मात्रा में होता है, जैसे :—'गम पनी सां रें सां'। वादी स्वर गंधार और संवादी निषाद है। इस राग में अधिकतर ठुमरी, गीत, भजन आदि गाए जाते हैं। कभी-कभी दोनो निषादों का प्रयोग साथ साथ किया जाता है, जैसे :—'ग म प नि नि॒ प म'। गाने का समय रात का दूसरा प्रहर है।

आरोह :—निं सा ग म प नि सां।
अवरोह :—सां नि॒ पम ग सा।
पकड़ :—गम पनि॒ पम ग।

आलाप

(१) सा, निं सा, निं सा ग, ग सा, सा ग म ग, सा।
(२) सा ग, सा ग म ग, ग म प, म ग, प, म ग, सा ग म प, म ग, सा।
(३) निं सा ग म प, ग म प नि॒, प, प, म ग, सा ग म पनि॒ प, म ग, प नि॒, प म ग, नि॒, प नि प म, ग म ग, ग म, ग म प, म, ग, सा।

(४) निं सा ग म प नि्, प, ग म प नि, सां नि्, प, नि् प सां, नि् प, सां नि् प, नि् प, ग म, ग प, म नि्, प सां, नि् प, नि् नि् प म ग म प नि सां, नि् प, म प ग म, ग म प, म, ग सा ।

(५) ग म प नि्, प सां, सां, नि् प, प नि सां, सां, रें नि सां, नि् प, प नि रें सां नि् प, ग म प नि सां, प नि सां, नि् प, म प नि् प म प, ग म ग, सा ग म प नि सां, नि् प, म ग म ग, सा ।

(६) ग म प नि, नि सां, प नि सां रें, सां, रें नि सां, नि् प, प नि सां गं, सां, नि सां, नि सां रें सां, नि् प, सां, नि् प, ग म प नि् प, प म ग, म ग, सा ।

(७) निं सा ग म प नि् म प, नि सां, नि्, प म ग म प नि सां, प नि सां गं, गं मं, गं, सां, सां गं मं पं, मं, गं सां, नि सां गं, सां, नि् प, प नि सां रें नि सां, नि् प, ग म प नि्, नि्, नि्, प नि सां, नि् प, नि्, प म ग म ग, म ग, सा ग म प, म ग, सा ।

ताने

(१) निं सा ग म ग सा, निं सा ग म प म ग सा, निं सा ग म प नि् प म ग सा, निं सा ग म प नि सां नि् प म ग सा, निं सा ग म प नि सां रें सां नि् प म ग सा, निं सा ग म प नि सां गं सां नि् प म ग सा, निं सा ग म प नि सां गं मं गं सां नि् प म ग सा, निं सा ग म प नि सां गं मं पं मं गं सां नि् प म ग सा ।

(२) निं सा ग म ग म प म ग सा, निं सा ग म ग म प नि् प म ग सा, निं सा ग म प नि् ग म प नि सां नि् प म ग सा, निं सा ग म प नि् ग म प नि सां रें सां नि् प म ग सा, निं

सा ग म प नि॒ ग म प नि सां गं सां नि॒ प म ग सा, निं सा ग म प नि॒ ग म प नि सां गं मं गं सां नि॒ प म ग सा, निं सा ग म प नि॒ ग म प नि सां गं मं पं मं गं सां नि॒ प म ग सा।

(३) सां नि प म ग सा, सां रें सां नि॒ प म ग सा, सां गं सां नि॒ प म ग सा, सां गं मं गं सां नि॒ प म ग सा, सां गं मं पं मं गं सां नि॒ प म ग सा, पं—मं गं सां नि॒ प म ग सा, मं—गं सां नि॒ प म ग सा, गं—सां नि॒ प म ग सा, सां—नि॒ प म ग सा।

(४) निं सा ग म प म ग म प नि॒ प म ग म प नि सां नि॒ प म ग सा, ग म प म ग म प नि॒ प म ग म प नि सां रें सां नि॒ प म ग सा, प नि सां नि॒ प नि सां गं सां नि॒ प नि सां गं मं गं सां नि॒ प म ग सा, निं सा ग म प नि॒ ग म प नि सां गं नि सां गं मं पं मं गं सा नि॒ प म ग सा।

(५) म म ग म ग सा, प प म प म ग सा, नि॒ नि॒ प नि॒ प म ग सा, सां सां नि सां नि॒ प म ग सा, रें रें सां रें सां नि॒ प म ग सा, गं गं सां गं सां नि॒ प म ग सा, मं मं गं मं गं सां नि॒ प म ग सा, पं पं मं पं मं गं सां नि॒ प म ग सा।

(६) ग म म ग म म ग म म ग सा, म प प म प प म प प म ग सा, प नि॒ नि॒ प नि॒ नि॒ प नि॒ नि॒ प म ग सा, नि सां सां नि सां सां नि सां सां नि॒ प म ग सा, सां रें रें सां रें रें सां रें रें सां नि॒ प म ग सा, सां गं गं सां गं गं सां गं गं सां नि॒ प म ग सा, गं मं मं गं मं मं गं मं मं गं सां नि॒ प म ग सा, मं पं पं मं पं पं मं पं पं मं गं सां नि॒ प म ग सा।

(७) निं सा ग म प नि सां नि॒ प म ग सा, निं सा ग म प ग म प नि सां रें सां नि॒ प म ग सा, सां गं सां नि॒ प म ग सा, निं सा ग म ग सा ग म प नि॒ प म प नि सां गं सां नि॒ सां गं मं पं मं गं सां नि॒ प म ग सा; म म ग म ग सा प प म प प म प प म ग सा, नि॒ नि॒ प नि॒ प म ग सा, सां सां नि सां सां नि सां सां नि॒ प म ग सा, गं गं सां गं सां नि॒ प म ग सा, मं मं गं मं मं गं मं मं गं सां नि॒ प म ग सा, निं सा ग म प ग म प नि सां प नि सां गं मं सां गं मं पं मं गं सां नि॒ प म ग सा।

राग तिलंग—तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

गम पनि॒ पनि॒ प ग ऽ म | ग॒ गम गसा ऽ सा निंसा गम
+ १३ १ ५ +

पनि॒ स प | नि सां ऽ प नि॒ प मप ग म ऽ प नि॒प सांनि|
१३ १ ५ + १३

रें सां ऽ सां नि॒प ||
१ ५

अंतरा

गम पप नि॒प नि॒प | नि सां निसां ऽ सां नि सां
+ १३ १ ५

गंमं गं सां निसांगंमं | पं गं ऽ मं गं सां निसां निरें सांनि॒
+ १३ १ ५ +

पसां नि॒प | सां नि ऽ सां नि॒ प ||
१३ १ ५

राग तिलंग—एकताल

राग लक्षण

सब करत तिलंग गान, सम्मत निशि द्वितीय याम ।
सुध सुर युत बुध प्रमान, ओडव रिध हीन मान ॥
ग नि नृप मंत्री समान, निप संगत हरत भान ।
प्रति लोमे मृदुनी जान, सा ग म प नि प लसत तान ॥
अवरोहन रिषभ तार, मधुर परस लसत सान ।
मूर्छना अमान तान, सारे सानि पम प नि पम गम ॥

स्थायी

प
प सां सां नि प म ग म प नि प म ग म | सा ग म नि प
स व क र त ति लं . . . ग गा . न | स म्म त नि शि
१ + ५ + ९ ११ १ + ५

पनि पनि पम गम | ग म प नि प नि सां नि सां सां रेंनि
द्वि. ती. य या . म | सु ध सु र . यु त बु ध प्र मा .
+ ९ ११ १ + ५ + ९

सां सां | प नि सां रें नि सां नि प ग म प नि प म ग म ||
. न | औ . . ड़ व रि ध ही . . . न मा . न ||
११ १ + ५ + ९ ११

अन्तरा १

नि
ग म प नि प नि सां सां सां रें नि सां सां | नि प सां नि प
ग नि नृ प . मं . त्री स मा . . न | नी प सं ग त
१ + ५ + ९ ११ १ + ५

प नि़ प म ग म | ग म प नि़ प नि सां रें सां नि नि सां सां |
ह र त भा . न | प्र ति लो . . में . मृ दु नि जा . न |
+ ९ ११ १ + ५ + ९ ११

म
सा ग म प नि़ प नि़ प म ग म म ||
सा ग म प नि प ल स त ता . न ||
१ + ५ + ९ ११

अन्तरा २

ग म प नि़ प नि सां नि सां नि सां ऽ सां | प नि सां रें सां नि़ प
अ व रो . . ह न रि प भ ता . र | म धु र प र स ल
१ + ५ + ९ ११ १ + ५ +

नि़ प नि़ प म ग म | ग सा ग म म प नि़ प नि सां सां | सां रें
. स . त सा . न | मू र्छ ना . मा . न ता . न | सा रे
९ ११ १ + ५ + ९ ११ १

सां नि़ प म प नि़ प म ग म ||
सा नि प म प नि प म ग म ||
+ ५ + ९ ११

राग तिलंग—धमार ताल

आये जगत के मन हरन ।
जाके चन्द्र मुख पर तेज सोहे, और उर वन माल ।
मही पालन कालि कंदन, दहन खल दल घोर कानन ।
शेष फणि पर करन तांडव, गरब सुरपति हरन ॥

स्थायी

ग म प नि़ प | नि सां सां नि़ प नि़ प म
आ . ये . . | ज ग त के . म न .
११ १ ६

ग
प म ग ग ऽ सा ऽ | निं सा सा ग म नि़ प नि सां
ह र न जा . के . | च . न्द्र मु ख प र ते .
११ १ ६ +

प म
सां नि़ प ग म | प नि़ प नि सां रें सां नि़
ज सो . हे . | औ . र उ र व न मा
११ १ ६ +

प म ||
. ल ||

अंतरा

म ग म प नि़ प प नि सां सां नि सां सां
म ही . पा . ल न का . लि कं . द
१ . ६ + ११

सां | प नि नि सां सां नि सां सां रें सां नि़
न | द ह न ख ल द ल धी . र का
१ ६ + ११

प ग म | गं ऽ सां गं मं गं सां नि़ नि प ग
. न न | शे . प फ णी प र क र न ता
१ ६ + ११

```
म  म  म | प  नि् प  नि सां रें सां नि् प  म ||
. एह  ब | ग  र  ब  मु र  प  ति  ह  र  न ||
          १              ६       —
```

राग तिलंग—तीनताल (मध्यलय)

तुमही मंजुल रसना । तुमही मूर्तिमंत संगीत साधना ॥
अलौकिक माधुरी । सब सुख सुजन की हो तुमही ।
तान ताल आलाप मूर्छना ॥

स्थायी

```
ग म  पनि्मप  पनिसांरेंसांनि्  पनि सांनि्  पगम | ग ऽ  ग म ग सा
तु म  ही...  मं . . . . .  जु. . .  लरस | ना. तु म ही .
५          +                  १३            १  ५

ग सा  गम  पनि्नि्  पमप | पनि सां सांनि्पनि  सांरेंसांनि्  पनि्प
मू .  तिमं . त . सं.. | गी. . त .सा . . . ध . ना..
+       १३              १                ५

मगम  पनिसांनि्  पनि्  सां नि् प ग म | ग ऽ ||
. . . मं . . .  जु . . . ल र स | ना . ||
 +                 १३              १
```

अंतरा

```
नि् नि् ऽ नि् नि् पनि सां नि् | प ऽ  मपनि्प  मगम  पसांनि  सां
अ लौ . कि क मा . . धु | री . स. व. सु.ख सु ज न  की
+          १३             १  ५              +

प पनि सांनि | सां ऽ प नि् प म ग म ऽ ग सा ग  मप  नि्नि्पम
. हो . . तु | म्ही . . . . . . . . ता . न ता . ल.आ.
१३            १     ५               +          १३
```

प	पनि सांरें सांनि़पनि सांरेंसांनि़ पनि़पम गमपनि़ सांनि़पनि़सांनि़
०	०००० ० ०० ०००००० ०० ०० ०००० ० ० ०० ० ०
.	ला . . . प . मू . . . छं . ना . . . . . मं . . . जु . . .
	१ ५ + १३

प ग म	ग ऽ
ल र स	ना .
	१

राग तिलंग—तीनताल (मध्यलय)

कान्ह मुरलि वाले नंद के लाल,
बाँसरी बजाई मन हर लीनो जात ॥
टेर सुनादे मोहनि मूरत,
कदर पिया की अरज ले मान ॥

—राग बोध (देवधर)

स्थायी

सां ऽ नि रें सां नि़ प ग म	ग ऽ ग म प ग म ग
का . न्ह मु . र लि वा .	ले . नं द के ला . ल
+ १३	१ ५

सा सा ग म प प नि सां	गं सां सां नि सां नि़ म प
बां सु रि ब जा ई म न	ह र ली . नो जा . त
+ १३	१ ५

अंतरा

नी रें
ग म प नि सां ऽ सां ऽ | प नि सां रें नि सां नि॒ प
टे . र सु ना . दे . | मो . ह नि मू . र त
\+ १३ १ ५

प सां
सां गं गं मं गं ऽ सां ऽ | प नि सां सां रें नि सां नि॒ म प ||
क द र पि या . की . | अ र ज ले . . . मा . न ||
१३ १ ५

राग तिलंग—दादरा ताल

श्याम सुन्दर मदन मोहन कुबरी संग बात कीन्हो
अब मोसो गोकुल रह्यो न जाय ॥
गोकुल रीत छाँड़ दीन्हों, मथुरा की राह लीन्हो
धाय धाय गाय गाय, अब मोसो गोकुल रह्यो न जाय ॥

स्थायी

सा ऽ सा म ग म | प नि नि सां नि सां | नि नि सां ऽ
श्या . म सु न्द र | म द न मो ह न | कु ब री .
१ + १ + १ +

सां सां | प नि सां रें सां नि॒ प प | ग म प नि॒ ऽ प |
. ग | बा . . . त की . न्हो | अ ब मो सो . गो |
१ + १ +

प नि सां रें सां नि॒ प म | ग म प नि॒ प म ग सा ||
कु . . . ल र ह्यो . | . . . . न जा . य ||
१ + १ +

अंतरा

म	ग	म	प	नि	नि	सां	ऽ	सां	नि	सां	सां
गो	कु	ल	री	.	त	छां	.	ड	दी	.	न्हो
१			+			१			+		

नि	नि	सां	ऽ	सां	ऽ	प	नि	सां	रें	सां	नि	प	प
म	थु	रा	.	की	.	रा	.	.	.	ह	ली	.	न्हो
१			+			१					+		

मं	ऽ	मं	गं	सां	सां	प	नि	सां	रें	सां	नि	प	प
धा	.	य	धा	.	य	गा	.	.	.	य	गा	.	य
१			+			१					+		

ग	म	प	नि	ऽ	प	प	नि	सां	रें	सां	नि	प	म
अ	ब	मो	सो	.	गो	कु	.	.	.	ल	र	ह्यो	.
१			+			१					+		

ग	म	प	नि	प	म	ग	सा
.	.	.	.	न	जा	.	य
१				+			

राग-तिलक कामोद्

यह खमाज थाट का राग है। इस राग में दो निषाद तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में गंधार धैवत वर्जित हैं। इसलिये इसकी जाति ओडव-संपूर्ण मानते हैं। इसमें वादी स्वर षड्ज और संवादी स्वर पंचम है। कुछ लोग पंचम षड्ज संवाद मानते हैं। यह राग रात के दूसरे प्रहर में गाया जाता है।

आरोह—सा रे ग, सा, रेमपध मप, सां।
अवरोह—सांपधमग, सारेग, सानीं, पंनीं सा रे ग सा
पकड़—सा रेप, मग, सारेग, सानीं, पंनीं सारेग, सा।

यह राग गाते हुवे देस, तिलंग और खमाज न होने देने का पूरा ध्यान रखना चाहिये। इस राग में प्रायः कोमल निषाद न लेकर केवल शुद्ध निषाद से ही स्वर प्रसार अधिक किया जाता है। शुद्ध निषाद का उपयोग केवल आरोह में तार सप्तक में जाते समय 'नी सां रें गं' इस प्रकार किया जाता है। कोमल निषाद का उपयोग अवरोह में वक्ररूप से करने का प्रचार है—'सां पनी धप धमग'। जलद तान लेते समय उसे 'सांनी धप' इस प्रकार से भी कभी-कभी लेते है। अवरोह में रिषभ कम है। 'सा-प' और 'पसां' ऐसे स्वर संवाद आरोहावरोह मे मींड से आते हैं। इस राग की गति तीनों सप्तकों में बराबर सी है। इसमें ख्याल गीत नहीं होता, विशेषतया ठुमरी टप्पा आदि शृंगारिक

गायन का प्राधान्य रहता है। परन्तु बहुत लोकप्रिय राग है। राग का चलन विशेष वक्ररूप से ही है। इससे राग का वैचित्र्य प्रकट होकर वह श्रुतिरंजक होता है।

आलाप

(१) सा, निं सा, पं निं सा, पं निं सा रे ग, सा रे ग, सा, सा रे म ग, सा रे ग सा सा निं, पं निं सा रे ग, सा।

(२) सा रे ग, सा, रे प, म ग, सा रे ग, सा, सा रे म प, रे म प, प म ग, सा रे ग सा, निं पं, निं सा।

(३) सा रे म प, रे म प, प ध म ग, रे प म ग, सा रे म ग, रे म रे प, रे म प ध म ग सा रे प, म ग, सा रे ग, सा निं, पं निं सा रे ग, सा।

(४) सा रे म प ध म प, म प ध, म ग, रे म प, म ग रे ग रे प म ग, म प नि सां, प ध म ग, नि सां, प ध म ग, ग रे प म, म ग, सा रे ग सा, निं पं, निं सा।

(५) सा रे म प ध, म प सां, सां, नि सां, प नि सां, म प नि सां, प ध म प सां, सां प, प ध म ग, सा रे म प सां, प ध म ग, रे प म ग, रे म प ध म ग, सा रे ग सा।

(६) म प नि सां, सां नि सां, प नि सां, प नि सां रें नि सां, सां रें गं सां, प नि सां रें गं सां, सां रें नि सां, प ध म प सां प ध म, म ग, सा रे प, म, म ग, रे ग, सा रे ग, सा।

(७) प ध म प सां, प नि सां रें गं, सां, रें मं गं, सां रें गं, सां, रें पं मं गं, सां, रें गं, सां, म प सां, रे म प, सां, सा रे म प सां, प ध, म, सा रे प म, ग, सा रे ग सा, सा निं, पं निं सा रे ग, सा।

तानें

(१) सा रे ग सा, सा रे म प म ग रे ग सा, सा रे म प ध प म ग रे ग सा, सा रे म प सां प ध म ग रे ग सा, सा रे म प नि सां रें सां प ध प म ग रे ग सा, सा रे म प नि सां रें गं रें सां प ध प म ग रे ग सा, सा रे म प नि सां रें गं सां रें मं गं रें सां प ध प म ग रे ग सा, सा रे म प नि सां रें गं रें पं मं गं रें सां प ध प म ग रे ग सा ।

(२) निं सा रे ग सा रे म ग रे सा, निं सा रे ग सा रे म प म ग रे सा, निंसारेग सारेमप धपमगरेगसा, निंसारेग सारेमप सांप धमगरेगसा, निंसारेगसारेमपनिसां रेंसांपधपमगरेगसा, निं सारेग सारेमपनिसांरेंगंरेंसां पधपमगरेगसा, निंसारेग सारेमप निसांरेंगं सांरें मंगं रेंसां पधपम गरेगसा, निंसारेग सारेमप निसां रेंगं रेंपं मंगं रेंसां पध पमगरेगसा ।

(३) सां नि पधपम गरेगसा, सांरेंसांनि पधपमगरेगसा, सांरेंगंरें सांनि पधपमगरेगसा, सांरेंमंगंरेंसांनिपधपमगरेगसा, सांरें-मंपंमंगंरें सांनि पधपमगरेगसा, पं-मंगंरेंसांनिपधपमगरेगसा, मं-गंरेंसांनिपधपमगरेगसा, गं-रेंसांनिपधपमगरेगसा, रें-सांनिपधपमगरेगसा, सां-पधपमगरेगसा ।

(४) निंसारेग रेसा रेमपध पम पनिसांनि पधपम गसारेगसा, सारेमपमग रेमपधपम पनिसांरेंसांनिपधपमगसा रेगसा, रेमपधपम पनिसांरेंसांनि सांरेंगंरें सांनि पधपम गसा रेगसा, मप निसां निप निसां रेंगं रेंसां रेंमं गंरें सांनि पध पम गसा रेगसा, पनिसांरें सांनि सांरेंमंगं रेंसां रेंमंपंमंगंरेंसांनि पध पम गसा रेगसा ।

(५) गग सारेगसा, मम गरेगसा, पपमगसारेगसा, धधपमगसारे गसा, सांसांपधपमगसारेगसा, रेंरेंसांनिपधपमगसारेगसा, गंगंरेंसांनिपधपमगसारेगसा, मंमंगंरेंसांनिपधपमगसारेगसा, पंपंमंगंरेंसांपधपमगसारेगसा ।

(६) रेगग रेगग रेगग रेसा, मपप मपप मपप मग सारेगसा, पधध पधध पधध पमगसारेगसा, निसांसां निसांसां निसांसां पधपमगसारेगसा, सांरेंरें सांरेंरें सांरेंरें सांनि पधपमगसा-रेगसा, रेंगंगं रेंगंगं रेंगंगं रेंसांनि पधपमगसारेगसा, मंपंपं मंपंपं मंपंपं मंगंरेंसांनिपधपमगसारेगसा ।

(७) सारेमपसांपधपमगरेगसा, निसारेगसारेमपनिसांरेंसांपधपम-गसारेगसा, सांरेंगंरें सांनि पधपमगरेगसा, मपनिसांनिप-निसांरेंगंरेंसांरेंगंरेंपंमंगंरेंसांनि पधपमगसारेगसा, गग सारे गसा, पपमपप मपप मगसारेगसा, धधपमगसारेगसा, सांसां निसांसां निसांसां पधपमगसारेगसा, रेंरें सांनिपधपमगसा-रेगसा, गंगंरेंगंगंरेंगंगं रेंसांनि पधपमगसारेगसा, मंमं गंरेंसांनि पधपमगसारेगसा, पंपं मंपंपं मपंपं मंगंरेंसांनि-पधपमगसारेगसा ।

तिलक कामोद्–तीनताल (मध्यलय)

सरगम

स्थायी

पं पं निं सा	रे ग निं सा	ग रे प म	ग रे सा निं |
१	५	+	१३
सा रे म प	ध म ऽ प	सां प ध म	ग रे सा निं |
१	५	+	१३

अन्तरा

प प ऽ ध	म प नि सां	प ऽ नि सां	रें गं सां ऽ
१	५	+	१३
सां नि ऽ सां	प ध म प	सां प ध म	ग रे सा निं
१	५	+	१३

राग तिलक कामोद्–तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

तिलक कामोद् बुध जन गावत, सोरठ अंग समय निस संमत ॥
आरोहन ध-ग हीन कहावत, स-प वादी संवादी सोहत
न्यास नि वक्र रीखभ सुर उतरत ॥

स्थायी

रे प म ग	ऽ सा ऽ निं	पं पं निं सा	रे ग निं सा
ति ल क का	. मो . द्	बु ध ज न	गा . व त
+	१३	१	५
रे म प ध	म प सां सां	प ध म ग	सा रे ग निं सा
सो . र ठ	अं . ग स	म य नि स	सं . . म त
+	१३	१	५

अंतरा

म ऽ म ऽ	प प नि नि	सां ऽ सां सां	नि सां सां सां
आ . रो .	ह न ध ग	ही . न क	हा व त
+	१३	१	५

प नि सां रें सांरें गं नि सां | प ध म ग सारे ग निं सा
स प वा . दी . . सं . | वा . दी . सो . . ह त
+ १३ | १ ५

रे म प सां नि सां प प | प ध म ग सारे ग निं सा |
न्या . स नि व क र रि | ख भ सु र उ . त र त |
+ १३ | १ ५

राग तिलक कामोद—चारताल

ध्रुपद

स्थायी

नवल रंग नवल फूल, नवल शोभा यमुना कूल ।
नवल सघन बेली द्रुम, प्रफुलित चहूँ ओर ॥
ललित नई गुल्म लता, चटकि चटकि खिलत कली ।
विकसे तरु पात नये, नयो नयो बौर ॥

सां ध
सां प प प ध म ग सा रे ग ग सा सा |
न व ल रं . ग न व ल . फू . ल |
१ + ५ + ९ ११

रे
निं पं निं निं सा सा रे म प ध म ग सा |
न व ल शो . भा य मु ना . कू . ल |
१ + ५ + ९ ११

प
म रे म प नि नि सां ऽ प ध म प |
न व ल स घ न बे . ली . द्रु म |
१ + ५ + ९ ११

		ध	प		रे
सां सां	प प	ध म	ग सारे	ग ग	सा सा ‖
प्र फु	. लि	. त	च हुँ .	. ओ	. र ‖
१	+	५	+	९	११

अंतरा

म रें	म प	नि ऽ	सां ऽ	नि सां	सां ऽ |
ल लि	त न	ई .	गु .	ल्म ल	ता . |
१	+	५	+	९	११
प नि	सां रें	मं गं	सां रें	गं गं	सां ऽ |
च ट	कि च	ट कि	खि ल	त क	ली . |
१	+	५	+	९	११
सां रें	सां ऽ	प ध	म ऽ	ग रे ग	सा ऽ |
वि क	से .	त रु	पा .	त . न	ये . |
१	+	५	+	९	११
			ध	प	रे
रे म	प सां	प ऽ	प ध	म ग	सा सा ‖
न यो	. न	यो .	बौ .	. .	. र ‖
१	+	५	+	९	११

राग तिलक कामोद—झपताल

तीरथ को सब करे देव पूजा करे
वासना ना मरे कैसे के भव तरे ॥
काया धुवे पाक़ कबहूँ नहि मन पाक़
मनरंग की आस नित रहे चरणमें ॥

स्थायी

			प
सां नि	सां सां प	ध प	ध म ऽ
ती र	थ को .	स ब	क रे .
१	३	+	८
	रे		रे
म ऽ	म ग सा	रे ऽ	ग सा ऽ
दे .	व पू .	जा .	क रे .
१	३	+	८
		•	प
सा ऽ	रे म ऽ	प ऽ	ध प ऽ
वा .	स ना .	ना .	म रे .
१	३	+	८
			प
प ऽ	पनि सांरें गं सां	सां प	ध म प
कै .	से . . . . के	भ व	त रे .
१	३	+	८

अन्तरा

म ऽ	प नि नि	सां ऽ	सां ऽ सां
का .	या . धु	वे .	पा . क
१	३	+	८
			रें
प नि	सां रें रें	रें सांरेंगं	गं सां सां
क ब	हुँ न हि	म न . .	पा . क
१	३	+	८

सां प	सां प प	प ध	म ग सा
म न	रं . ग	की .	आ . स
१	३	+	८

			प
सा रे	म प नि	सां प	ध म प
नि त	र हे .	च र	ण मे .
१	३	+	८

राग तिलक कामोद्–तीनताल (मध्यलय)

कोयलिया बोले अंबुवा की डालरिया
मोहक सुरसों हुलसावत जिया ॥
झूम झूम कर नाचन लागे,
गान सुनत वन वन के पतवा ॥

स्थायी

ग ग सा सा	रें ग सा रे म प	सां प ऽ ध	म ग सा सा
को य लि या	बो . ले . अम्ब	वा . . की	डा ल री या
+	१३	१	५

पं निं सा सा	रे ग निं सा	रे म प ध	म ग सा सा
मो . ह क	सु र सों .	हु ल सा .	व त जि या
+	१३	१	५

अंतरा

म रे म प	ऽ प नि नि	सां ऽ सां सां	रें गं सां ऽ
झू . म झू	. म क र	ना . च न	ला . गे .
+	१३	१	५

प नि सां रें नि सां प प | सां प ऽ प ध म ग सा ||
गा . न सु न त ब न | व न . के . प त वा ||
+ १३ १ ५

राग तिलक कामोद-तीनताल (मध्यलय)

नीर भरन कैसे जाऊं सखी अब डगर चलत मोसे करत रार अब ॥ ऐसो चंचल चपल हठ नट खट मानत न काहुकी बात विनति करत मैं गई रे हार अब ॥

स्थायी

रे ग रे प म ग सा रे | नि प नि सा रे ग नि सा रे म प ध
नी . र भ र न कै से | जा . ऊं स खी - अ ब ड ग र च
+ १३ १ ५ +

म प सां सां | प ध म म ग रे ग नि सा ||
ल त मो से | क र त रा . . र अ ब ||
१३ १ ५

अन्तरा

म म म म प प नि नि
ऐ सो चं च ल च प ल
१ ५

सां सां नि नि सां सां नि सां | रें रें सां रें गं नि सां सां
ह ठ न ट ख ट मा न | त न का हू की वा . त
+ १३ १ ५

प नि सां रें नि सां प ऽ | प ध म म ग रे ग नि सा ||
वि न ति क र त मैं - | ग ई रे हा - - र अ ब ||
+ १३ १ ५

राग तिलक कामोद—एकताल(द्रुत)

बेग बेग जात ग्वालन सखिन संग
दधि बेचन ॥ श्याम सुन्दर आडोहि
आवत, शिरकी मटकि छीन लेत, चुनरी
सारी भीग जात, सब देख लाज लेत ॥

स्थायी

									प		रे	
निं	ऽ	पं	निं	सा	सा	रेम	प	ध	म	ग	सा	सा
बे	.	ग	बे	.	ग	जा.	.	.	त	ग्वा	ल	न
१		+		५		+			९		११	

									प		रें	
रे	म	प	सां	ऽ	सां	प	ध		म	ग	सा	सा
स	खि	न	सं	.	ग	द	धि		बे	.	च	न
१		+		५		+			९		११	

अन्तरा

म	ऽ	म	प	नि	नि	नि	सां		नि	सां	सां	सां
श्या	.	म	सु	न्द	र	आ	डो		हि	आ	व	त
१		+		५		+			९		११	

प	नि	सां	रें	गं	सां	गं	रें	गं	पं	मं	गं	सां	सां
शि	र	की	म	ट	की	छी	.	.	न	.	ले	.	त
१		+		५		+			९			११	

सां सां	प	सां	प	प	प	ध		म	ग	सा	सा
चु न	री	सा	.	री	भी	.		ग	जा	.	त
१	+		५		+			९		११	

रे	म	प	सां	सांरें निसां	प	ध		म	ग	सा	सा
				००००							
स	ब	दे	.	खे . . .	ला	.		ज	ले	.	त
१	+			५	+			९		११	

राग-काफी

यह काफी थाट का आश्रय राग है। इसमें गंधार और निषाद कोमल लगते हैं। बाकी के सब स्वर शुद्ध लगते हैं। यह राग संपूर्ण जाति का है। कभी कभी शुद्ध गंधार और शुद्ध निषाद का विवादी के नाते प्रयोग होता है। कोमल धैवत का अल्प प्रयोग भी होता है। 'पमग्रे' इस स्वर समुदाय का आलाप के अंत में प्रयोग होता है। सा, प, और रे यह न्यास के स्वर हैं। वादी पंचम और संवादी ऋषभ है। कुछ लोग षड्ज संवादी मानते हैं। इस राग में अधिकतर ठुमरी, टप्पा, होरी आदि गाये जाते हैं। गाने का समय दूसरा प्रहर है, पर कुछ लोग इसे सार्वकालिक मानते हैं।

आरोह :—सारेग्म पधनी़सा।

अवरोह:—सांनि्धप मग्रेसा।

पकड़ :—सा, रेग्मप, पमग्रे, ग्रेसा।

आलाप

(१) सा, रे ग् रे, रे म ग् रे, रे प म प ग् रे, ग् रे, निं सा।

(२) सा रे ग् म प, प म ग् रे, रे ग् म प, ध प, म प म ग् रे, ग् रे सा रे, सा, नि् धं नि् सा।

(३) सा, ग् रे, ग् म प, म प ध प, म ग् रे, नि् ध प, ध प, म प, म ग् रे, रे प मं प म ग् रे, सा रे, म ग् रे, सा नि् धं नि् सा।

(४) सा रे ग् म प ध नि् सां, नि् सां रें सां, नि् ध नि् सां, ध नि् सां रें गं् रें, सां नि् ध नि् सां, नि् ध प, म प नि् प, ग् रे, म प म ग् रे, प म ग् रे, ग् रे, सा नि़् धं नि़् सा।

(५) म, पध नि सां, सां नि् ध नि् सां, सां रें सां, नि् ध नि् सां, सां रें गं् रें, गं मं गं् रें, गं् रें सां, रें पं मं पं गं् रें, मं गं् रें सां, रें सां, नि सां, नि् ध प, प म ग म, नि् प ग् रे, रे ग् म प ध नि्, ध ध् प म ग ग् रे, ग म नी प ग् रे, प ग् रे, सा, नि़् धं नि़् सा।

तानें

(६) सा रे ग् रे सा, सा रे ग् म प म ग् रे सा, रे ग् म प ध नि् ध प म ग् रे सा, सा रे म प ध नि् सां नि् ध प म ग् रे सा।

(७) सा रे ग् रे सा रे ग् म प म ग् रे सा, प म ग् रे सा रे ग् म प ध नि् ध प म ग् रे सा, म प ध नि् ध प म प ध नि् सां नि् ध प म ग् रे सा, प ध नि् सां ध नि् सां रें गं् रें सां नि् ध प म ग् रे सा।

(८) सां नि् ध नि् सां नि् ध प म ग् रे सा, गं् रें सां रें गं् रें सां नि् ध प म ग् रे सा, मं गं् रें गं् मं गं् रें सां नि् ध प म ग् रे सा, पं मं गं् रें सां रें गं् मं पं मं गं् रें सां नि् ध प म ग् रे सा।

(९) रे ग् म प म ग् रे ग् म प ध नि् ध प ध नि् सां रें गं् रें सां नि् ध प म ग् रे सा, ध नि् सां रें सां नि् ध नि् सां रें गं् रें सां नि् ध नि् सां रें मं गं् रें सां नि् ध प म ग् रे सा, सा रे ग् म प रे ग् म प ध म प ध नि् सां ध नि् सां रें गं् सां रें गं् मं पं मं गं् रें सां नि् ध प म ग् रे सा।

(१०) प प म प प म प प म ग॒ रे सा, ध ध प ध ध प ध ध प म ग॒ रे सा, रें रें सां रें रें सां रें रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, मं मं गं॒ मं मं गं॒ मं मं गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, सा रे म प ध नि॒ सां रें गं॒ मं पं मं गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा।

राग काफी—तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

मपसांऽ नीधनीप ऽ म ग॒ ऽ रे सा रे ऽ | रे ऽ रेग॒ रेग॒ म ग॒
१ ५ + १३ १ ५

रेसारेसा नीं ऽ सा ऽ | रेग॒मप ग॒मपध मपधनीपधनीसां |
+ १३ १ ५ + १३

धनी सांरेंनीऽसांरें गं॒ऽरेंसां नीधनीप ||
१ ५ + १३

अंतरा

ममपध सांऽनीसां धनीसांरें गं॒ऽमंगं॒ | रेंसांपंमं गं॒रेंमंगं॒
१ ५ + १३ १ ५

रेंसांनीध नीपऽध ||
+ १३

राग काफी—तीन ताल (मध्यलय)

राग लक्षण

कैसी काफी बनाई कान्हा मोसे तान आलाप सुनाई ।
आरोहन में अवरोहन अरु संपूरन सुरगाई ।
ग-नी सुर द्वय को कोमल करके पंचम वादी बनाई ।
उठी मैं तुरतही धाई सुध बिसराई ॥

—पं० खरे शास्त्री

स्थायी

म प ग रे   रे ग म म | प ऽ प ऽ   नी ध म प
कै ऽ सी ऽ   का ऽ फी ब | ना ऽ ई ऽ   का न्हा मों से
\+   १३ | १   ५

प ध नी सां नी ध प म नी प | ग ऽ रे ऽ   रे ग म प
ता . . . न आला . प सु | ना . ई .   . . . .
\+   १३ | १   ५

म ग रे सा ||
. . . . ||

अन्तरा

रें ऽ रें ऽ   रें रें सां रें ग | रें ग रें सां   रें नी सां सां
आ . रो .   ह न में . . | अ व रो .   ह न अ रु
\+   १३ | १   ५

सां रें नी ऽ ध म प ध | नी ऽ सां ऽ   सां ऽ ऽ ऽ
सं . पू . र न सु र | गा . . .   ई . . .
\+   १३ | १   ५

ध ध ध ध ध ध नी़ प ध | नी़ रे सां रें नी़ ध प ऽ
० ०
ग नी सु र द्ध य को . . | को . म ल क र के.
+ . १३ १ ५

प नी नी सां सां रें नी सां नी़ ध | प ध प ध नी़ ध प ग़ रे
० ० ० ० | ० ०
पं . च म वा . . . दि व | ना . ई . . उ ठी मै .
+ १३ १ ५

रे ग़ म प ग़ रे ग़ रे ऽ | रे प म प ग़ रे नीं सा ||
० ०
तु र त ही धा . . ई . | सु ध वि स रा . ई . ||
+ १३ १ ५

राग काफी—तीनताल (मध्यलय)

मनुवा राम नाम रस पीजै, त्यज कुसंग सतसंग बैठ नित। हरी चरचा सुन लीजै ॥ध्रु०॥ काम क्रोध मद लोभ मोह को, चित से बहाय दीजे। मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, ताहि के रंग में भीजै ॥१॥

स्थायी

म म प ध नी़ सां
० ० ० ०
म नु वा . . .
५

नी़ ध प ग़ रे ग़ सा रे | प ऽ प ऽ ध म प ऽ
रा . म ना . म र स | पी . जै . म नु वा .
+ १३ १ ५

रे ग़ रे ग़ सा रें नीं सा | रें ग़ म प म ध म प
त ज कु सं . ग स त | सं . ग बै . ठ नि त
+ १३ १ ५

म	नी	ध	नी	प	ध	नी	सां	नी	सा	रें	सां	नी	ध	म	म
ह	री	च	र	चा	.	सु	न	ली	.	.	.	जै	.	म	नु
+				१३				१						५	

प	ध	नी	सां
वा	.	.	.

अन्तरा

म	ऽ	प	नी	सां	नी	सां	सां	रें	गं	रें	सां	रें	नी	सां	ऽ
का	.	म	क्रो	.	ध	म	द	ला	.	भ	मो	.	ह	को	.
+				१३				१				५			

नी	नी	नी	ऽ	नी	सां	ऽ	सां	नी	सां	रें	सां	नी	ऽ	ध	ऽ	प	ऽ
चि	त	से	.	ब	हा	.	य	दी	.	.	.	जै	.	.	.	.	.
+				१३				१				५					

रे	ग	रे	ग	सा	रे	नीं	सा	रे	ग	म	प	म	ध	म	प
मी	.	रा	.	के	.	प्र	भु	गि	रि	ध	र	ना	.	ग	र
+				१३				१				५			

म	नी	ध	नी	प	ध	नी	सां	नी	सां	रें	सां	नी	ध	म	म
ता	.	हि	के	रं	.	ग	में	भी	.	.	.	जै	.	म	नु
+				१३				१						५	

प	ध	नी	सां
वा	.	.	.

राग-काफी—तीनताल (मध्यलय)

टेर टेर रसना थकि हारी। विनय करे नितही तिहारी ॥
मन मंदिर मे नाथ विराजो। मिटे बिथा जिय की अति भारी ॥

स्थायी

म प ध प ग् रे ग् म म | प प म पध नि् ध प धधधध
टे . . र टे . र र स | ना थ कि हा. . री . विनयक
\+ १३ | १ ५ +

पध सांनि् धप | रे म पध पमपग् रे ||
रे. . . नित | ही . .तिहा. .री . ||
१३ | १ ५

अंतरा

ममपध सां ध सां | सांरें गं् रें सां नि् ध सां सां सां ऽ रें नि् ध प |
मनमं. दि र मे | ना. .थ वि रा . जो मि टे . बिथाजिय |
\+ १३ | १ ५ + १३

रेम पध नि्धप मपधप ग् रे ||
की. . . अति. भा. . . री . ||
१ ५

राग काफी—तीनताल (मध्यलय)

आज कैसी ब्रिज में धूम मचाई। पिचकारी रंग उडत है सारी ॥
बिंदरावन की सुंदर शोभा। चकित भये सब नारी ॥

राग-बोध (देवधर)

स्थायी

म म म म ध
म ग म ध प ग ग रे ग सा रे म म | प प नी प ध
आ . ज कै सी ब्रि ज मे धू . . म म | चा ई पि च . .
५ + १३ १ ५

प
सां रें नी सां ऽ नी ध गम रे म पध म प | ग रे ||
का. . . . री . रंग उ ड त. है . | सा री ||
+ १२ १

अंतरा

प
म म पध सां नी सां | ध सांरेंगं रेंसां नीसांनी धप धधधंध
बिं द् रा . ब न की | सुं . . . द र शो . . भा . चकितभ
+ . १३ . १ ५ + . .

ध ध म
नी धप | ग ऽ रे ||
ये सब | ना . री ||
१३ १

राग काफी—ताल दीपचंदी

कैसे रहूँ घर आज बजीबन सरस मुरली ॥
ए मुरली तो निकसी बजी है कृष्ण बजावे सुघरिया ।
होवे व्याकुल ब्रिज वनिता सब ।
उठ चली सब हरि की डगरिया ॥

—राग बोध (देवधर)

स्थायी

सारेरे रेग मग रेग ऽ म म | प ऽ प ऽ सारेरे रेग मग रेग ऽ
कैसेर हूँ. . . . . . घ र | आ . ज . कैसेर हूँ. . . . .
+ ११ १ ४ + ११

रे
मम | प प म पधनीसांऽ नीधपम ग रे ऽ ऽ रेपमप | ग रे
घर | आज व जी. . . . व . न . . . . . सरसमु | रली
१ ४ + ११ १

रे ग म प धनीसांनी धपमग रेसा ऽ ||
. . . . ||
४

अंतरा

रें ऽ रेंगं रें रेंगंमंगं रेंगं ऽ ऽ सांरेंसां | प पध धसां
ए . मुरलीं तो. . . . . नीकसी | ब जी. . .
१ ४ + ११ १

सांरें सांरेंगं ऽ नीसांरें नीधम पध | पधनीसांऽनी सां ऽ
है . . . . . कृष्णव जा. . वेसु | घ. . . . री या .
४ + ११ १ ४

धध धनीसांनीधनीऽऽ धपध | नीनी सां रें सांनीधनीऽ धप
होवे व्या. . . . . . . कुल. | त्रिज व नि ता . . . . सब
+ ११ १ ४

नीनीनी सां नी सां नी प | मप ग रे रेग मप धनीसांनीधपमग रेसा ऽ ||
उ ठ च ली . . स ब | हरिकीडग. . . . . . . री. . . या . . ||
+ ११ १ ४

राग बागेश्री

यह काफी थाट का राग है। यह कानडे का प्रकार है। इसमें गंधार और निषाद कोमल लगते हैं। बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में रे और प वर्जित मानते हैं। इसलिए जाति ओडव संपूर्ण है। कुछ लोग इसे षाडव-संपूर्ण राग मानते हैं। पंचम का अल्प प्रयोग है। अधिकतर पंचम का प्रयोग अवरोह में तान के समय किया जाता है। मध्यम धैवत और मध्यम-निषाद की संगति है। अवरोह हमेशा 'म ग॒ रे सा' इस प्रकार होगा, नहीं तो बहार राग की छाया आ जाती है। वादी स्वर मध्यम और संवादी षड्ज। गाने का समय रात का दुसरा प्रहर है।

आरोह :—निं॒ सा ग॒ मध नि॒ सां।
अवरोह :—सां नि॒ धम, पध, मग॒ रे सा।
पकड :—मध, नि॒ध, म, ग॒ रे सा।

आलाप

(१) सा, निं॒ धं, सा, धं निं॒, धं सा, रे, सा, धं निं॒ सा म, ग॒ रे, म, ग॒ रे सा।
(२) धं निं॒ सा म, ग॒ रे, म, म ध, म, ग॒ म, ध म, म प ध, म, सा म ग॒, म ध म, ध म, ग॒ रे सा, निं॒ धं निं॒ सा।
(३) निं॒ सा म, ग॒, म ध म, म ध नि॒ ध म, नि॒ ध, म, म ग॒, ध म ग॒, नि॒ ध, म ग॒, सा म ग॒, म ग॒, रे सा, निं॒ धं निं॒ सा।

(४) सा निं॒ धं, मं धं निं॒ सा, रे सा, धं निं॒ सा म, म ग॒, ग॒ म ध, म ध नि॒ सां, ध नि॒ सां नि॒ ध, सां नि॒ ध, म ध नि॒ ध, म ग॒, नि॒ सां नि॒ ध म ग॒, म नि॒, ध, म ग॒, म प ध, म ग॒, म ग॒ रे सा।

(५) ग॒ म ध, नि॒ ध म ध नि॒ ध, सां, नि॒ ध, म ध नि॒ सां, रें सां, रें नि॒ सां, नि॒ ध, ध नि॒ ध सां, नि॒ ध, म; सां नि॒ ध; म, ध नि॒, ध म, म प ध, म ग॒, म नि॒ ध सां नि॒ ध, म ग॒. म ग॒ रे सा।

(६) ग॒ म ध नि॒ सां, नि॒ ध सां, सां नि॒ रें सां, रें नि॒ सां, नि॒ ध, म ध नि॒ सां ध नि॒ सां, गं॒, रें सां, नि॒ सां रें, सां, नि॒ ध, ध प ध नि॒, ध म, म प, म प ध, म ग॒, रे सा।

(७) म ग॒, म ध नि॒ सां, सां नि॒ ध नि॒ सां, ध नि॒ रें, सां, ध नि॒ सां गं॒, रें सां, सां मं, गं॒, रें सां, मं गं॒ रें सां, नि॒ सां रें सां, नि॒ सां नि॒ ध, रें सां, नि॒ सां नि॒ ध, सां नि॒ ध, म ग॒, नि॒ ध, म ग॒, ध, म ग॒ म प ध, म ग॒, रे, ग॒, रे सा।

तानें

(१) निं॒ सा ग॒ रे सा, निं॒ सा ग॒ म ग॒ रे सा, निं॒ सा ग॒ म ध ध म ग॒ रे सा, निं॒ सा ग॒ म ध नि॒ ध म ग॒ रे सा, निं॒ सा ग॒ म ध नि॒ सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, निं॒ सा ग॒ म ध नि॒ सां रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, निं॒ सा ग॒ म ध नि॒ सां गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, निं॒ सा ग॒ म ध नि॒ सां ग॒ मं गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा।

(२) निं॒ सा म ग॒ म ग॒ रे सा, निं॒ सा म ग॒ म ध म ग॒ रे सा, निं॒ सा म ग॒ म ध नि॒ ध म ग॒ रे सा, निं॒ सा म ग॒ म ध नि॒ सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, निं॒ सा म ग॒ म ध नि॒ सां रें सां

नि़ ध प म ग़ रे सा, निं़ सा म ग़ म ध नि़ सां रें गं़ रें सां
नि़ ध प म ग़ रे सा, निं़ सा म ग़ म ध नि़ सां मं गं़ रें सां
नि़ ध प म ग़ रे सा।

(३) सां नि़ ध प म ग़ रे सा, सां रें सां नि़ ध प म ग़ रे सा,
सां रें गं़ रें सां नि़ ध प म ग़ रे सा. सां गं़ मं गं़ रें सां नि़
ध प म ग़ रे सा, मं–गं़ रें सां नि़ ध प म ग़ रे सा, गं़–रें
सां नि़ ध प म ग़ रे सा, रें–सां नि़ ध प म ग़ रे सा, सां-
नि़ ध प म ग़ रे सा।

(४) निं़ सा म ग़ म ध नि़ ध म ग़ म ध नि़ सां नि़ ध प म ग़
रे सा, ग़ म ध म ग़ म ध नि़ सां नि़ ध म ग़ म ध नि़ सां
रें सां नि़ ध प म ग़ रे सा, म ध नि़ ध म ध नि़ सां नि़ ध
म ध नि़ सां रें सां ध नि़ सां रें गं़ रें सां नि़ ध प म ग़
रे सा, ध नि़ सां नि़ ध नि़ सां रें सां नि़ ध नि़ सां मं
गं़ रें सां नि़ ध प म ग़ रे सा।

(५) म म ग़ म ग़ रे सा, ध ध म ध म ग़ रे सा, नि़ नि़ ध नि़
ध प म ग़ रे सा, सां सां नि़ सां नि़ ध प म ग़ रे सा, रें रें
सां रें सां नि़ ध प म ग़ रे सा, मं मं गं़ मं गं़ रें सां नि़ ध
प म ग़ रे सा।

(६) ग़ म म ग़ म म ग़ म म ग़ रे सा, म ध ध म ध ध म ध
ध म ग़ रे सा, ध नि़ नि़ ध नि़ नि़ ध नि़ नि़ ध प म ग़ रे
सा, नि़ सां सां नि़ सां सां नि़ सां सां नि़ ध प म ग़ रे सा,
सां रें रें सां रें रें सां रें रें सां नि़ ध प म ग़ रे सा, गं़ मं मं
गं़ मं मं गं़ मं मं गं़ रें सां नि़ ध प म ग़ रे सा।

(७) निं़ सा ग़ म ध नि़ सां नि़ ध प म ग़ रे सा, निं़ सा ग़ म ध
ग़ म ध नि़ सां रें सां नि़ ध प म ग़ रे सा, सां गं़ रें सां नि़

ध प म ग् रे सा, नि् सा ग् म ध म ग् म ध नि् सां रें सां नि् ध नि् सां गं् मं गं् रें सां नि् ध प म ग् रे सा, म म ग् म ग् रे सा, ध ध म ध ध म ध ध म ग् रे सा, सां सां नि् सां सां नि् सां सां नि् ध प म ग् रे सा, रें रें सां रें सां नि् ध प म ग् रे सा, मं मं गं् मं मं गं् मं मं गं् रें सां नि् ध प म ग् रे सा, नि सा ग् म ध ग् म ध नि् सां ध नि् सां गं् मं गं् रें सां नि् ध प म ग् रे सा।

राग बागेश्री—तीनताल (मध्यलय)

म ग् रे सा नि् सा ध नि् | सा म ग् म ध म ध नि् सां
\+ १३ | १ ५ +

ध नि् सां | रें सां नि् ध म ग् रे सा ||
१३ | १ ५ ||

अंतरा

ग् मधनि् सांसांसां | नि् सांरेंसां नि् सांनि् ध मंगं् रेंसां रेंसांनि् ध |
\+ १३ | १ ५ + १३ |

सांनि् धम ग् रे सा ||
१ ५ ||

राग बागेश्री—झपताल

राग लक्षण

धन्य बागेसरी, कहत गुनि वैखरी।
समय मध रात मत, करुण रस निर्झरी॥
मेल मृदु गनि जनित, तीव्र सुर रिध वसत।
अल्प पंचम लसत, सम्पूरन सुरपुरी॥

अंश मध्यम वसत, स्वर प्रथम संवदत।
नि-सा-म सुर अनुवदत म ध नि ध म ग म युती ॥
पं० खरे शास्त्री

स्थायी

म ग् रे सा निं धं निं सा सा ऽ | नि् सा म
ध . न्य बा . गे . स री . | क ह त
१ ३ + ८ १ ३

ग् रे रे ग् रे सा ऽ | सा सा ध ध ध
गु नि वै . ख री . | स म य म ध
+ ८ १ ३

नि्
सां नि् ऽ ऽ नि् ध ध | म नि् ध सां नि् ध म प म प ध
रा . . . त म त | क रु . णा र स नि . . . .
+ ८ १ ३ +

म
ग् रे सा ||
झं री . ||
८

अन्तरा (१)

म ऽ म नि् ध ऽ नि् सां सां सां सां सां |
मे . ल मृ . . दु ग नि ज नि त |
१ ३ + ८

सां रें सां
सां नि् ऽ सां रें रें सां नि् सां नि् ध ध | नि्
ती . . . अ सु र रि ध व स त | अ
१ ३ + ८ १

रें
सां मं गं रें सां नि सां नि ध ध | सां नि ध
. ल्य पं . . च म ल स त | सं . पू
३ + ८ १ ३

म
म म म प ऽ म प ध ग रे सा ||
र न सु . . र . . पु री . ||
+ ८

अंतरा (२)

नि नि
म ऽ म ध नि सां सां सां सां सां |
अं . श म . ध्य म व स त |
१ ३ + ८

नि सां रें रें सां नि सां रें सां नि ध ध |
स्व र प्र थ म सं . . . व द त |
१ ३ + ८

नि सां मं गं रें नि सां नि सां रें सां नि ध ध |
नि स म सु र अ . नु . . . व द त |
१ ३ + ८

म ध नि ध म ग म ग रे सा ||
म ध नि ध म ग म यु ति . ||
१ ३ + ८

राग बागेश्री—चारताल

धन धन धन मात गंग, चाहत मुनिजन प्रसंग।
प्रगटी रघुनाथ चरन, करन सुख बिहारी ॥
दीन्ही विधि बूंद डार, और अनंग शीश धार।
आई मृत मध्य लोक, संतन को प्यारी ॥

स्थायी

नि् ध म ग् रे सा धं नि् सा सा ऽ सा
ध न ध न ध न मा . त ग . ग
१ + ५ + ९ ११

निं सा ग् म ध ध ध नि् ध म ऽ म
चा . ह त मु नि ज न प्र सं . ग
१ + ५ + ९ ११

ग् म ध नि् ध नि् सां ऽ सां रें सां नि्
प्र ग टी . र घु ना . थ च र न
१ + ५ + ९ ११

सां नि् ध म ग् रे सा धं नि् सा ग् म ध
क र न सु ख वि . हा . री . . .
१ + ५ + ९ ११

अंतरा

ग् म ध नि् ध नि् सां ऽ सां नि् सां सां
दी . न्ही . वि धि बूं . द डा . र
१ + ५ + ९ ११

नि् सां रें सां नि् सां नि् ध म ग् म म
अ रि अ नं . ग शी . श धा . र
१ + ५ + ९ ११

सां मं ग् रें सां सां रें सां नि् सां नि् ध म
आ . . ई . मृ त म . ध्य लो . क
१ + ५ + ९ ११

ग् म ग् रे सा ऽ धं निं सा ग् म ध ||
स . न्त न को . प्या . री . . . ||
१ + ५ + ९ ११

राग बागेश्री—झूमराताल (ख्याल)

टेर सुनो बृज राज दुलारे ।
दीन मलीन हीन शुभ गुण सों, आय पर्यो हूँ द्वार तिहारे ॥
काम क्रोध अती कपट लोभ मद, सोई माने निज प्रीतम प्यारे ॥
भ्रमत रह्यो इन संग विषयन में, तो पद कमलन मैं उर धारे ॥

स्थायी

म
सां नि ध प ध | सां नि ध प ध ग ऽ ऽ रे सा
टे . र . सु | नो . ब्रि . ज रा . . ज दु
१ ४

रे ऽ ऽ सा ऽ धं निं सा सा | म ऽ ऽ म ध ऽ ध
ला . . रे . दी . न म | ली . . न ही . न
+ ११ १ ४

ध ध ध ध प ध नि ऽ ऽ ध म ग म ध नि |
शु भ गु ण सों . . . . . . आ . य प |
+ ११

सां ऽ ऽ सां नि रें सां नि ध ऽ ध ध प
र्यो . . हूँ . . द्वा . र . ति हा .
१ ४ +

ध नि ध प ध ||
रे . . . . ||
११

अन्तरा

ग म ध नि़ सां नि़ ध नि़ | सां ऽ ऽ नि़ सां
० ० ० ० ० ० ० ० | – – – ० ०
का . म क्रो . ध . अ | ती . . क प
११ १ ४

रें सां नि़ नि़ सां रें सां नि़ ध ऽ ध ध ध ध म
० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० – – ० ० – ० ०
ट लो . भ . . . म द . सो ई मा ने .
\+ ११

ग म ध | ध ध ध प ध नि़ ऽ ध म ऽ ग म
० – ० | ० ० – ‿ ‿ ० – – – – ० ०
नि ज प्री | त म प्या रे . . . . . . भ्र म
१ ४ +

नि़
ध नि़ सां ऽ सां नि़ सां रें सां | नि़ सां
० ० – – – ० ० ० ० | ० ०
त र ह्यो . . इ न सं ग | वि ष
११ १

नि़ सां रें सां नि़ ध सां म ग रें सां नि़ सां
‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ‿ ‿ ० ० ० ०
य . न . में . तो . . प द क म
४

नि़ सां रें सां नि़ ध ध ध ध प ध नि़ ध प ध ||
‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० ० ० ‿ ‿ ०
ल . न . मैं . उ र धा . रे . . . . ||
\+ ११

राग-बागेश्री—तीनताल (मध्यलय)

बेला चमेली हार गूंथ लाई, मन मोहन के कारण सखिया,
जाई जुई मन भाई ॥
कमल केलि कामोदी चंपा, गंध सुहाई, मोतियन मौलसिरी
औ सेवति अनुपम मालति अति सरसाई ॥

स्थायी

ध

सां ऽ नि्ध पध | सां ऽ नि्धपध धमऽम पमपधप |
बे . ला . .च | मे . . . . ली . . हा रग . . थ |
१३ १ ५ + १३

ग् ऽ रे ऽ ग् सा ऽ नि् सा नि् सा रेसा | नि् सारे सा नि् धं धंनि्
ला . . . ई . म न मो . . . | ह . न . के . का .
१ ५ + १३ १ ५

सा म म म म मपध प ग् म | मधनि् सां नि् सांरेंसां नि् धपम ग् रे
र न सखिया जा . . . ई जु | ई . म न भा . . . ई . . . . .
+ १३ १ ५ +

सा नि् सा ||
. . . ||

अन्तरा

नि् सां रें सांनि् धपध | सां ऽ नि् ध पधध मग् म ग् रेसा |
क म ल के . . . लि | का . . मो . . दी . . चं . पा . |
१३ १ ५ + १३

नि् सारेसा नि् सारेसा नि् धं धंनि् साम ममम | मपधप ग् म
गं . ध सु हा . . . ई . मोति यन मौलस | री . . . औ .
१ ५ + १३ १

धनि् धनि् सांसांसांसां धनि् सां गं् रें सां | नि् धपध धनि् सां
से . व ति अ नु प म मा . . . ल ति | अतिसर सा .
५ + १३ १ ५

धनि रेंसां नि धपम ग रे ||
ई . . . . ||
+

राग बागेश्री—तीनताल (मध्यलय)

जमुना तट बंशी बजाई, या मनमोहन गिरधारी ने ॥
मधुर मधुर आलाप अलापत, भक्तन के मन हर लेई ॥
—व्यासकृति

स्थायी

मम सा म म
धप नी सांधनी धप ग ग रेसा | नि सा ग मध ग ममधनि
जमु ना . . . तट बं . सीब | जा ई . . . या मनमो.
+ १३ १ ५ +

सां सांसांसां | नि सांरें सांनि सांनि ध ||
. हनगिरि | धा . . री . . ने . ||
१३ १ ५

अंतरा

मममम धनि धनि | सांसांसां रेंनि सांसां धनि सांमं
मधुरम धुर आ . | लापअ ला . प त भ . क्तन
+ १३ १ ५ +

ग रेंसांनि | धध पधनि ध नि सां ||
के . मन | हर ले . . ई . . ||
१३ १ ५

राग बागेश्री—तीनताल (मध्यलय)

तराना

तनन देरेना तदानी दीम् तदीम् तन देरेना देरेना तदीम् दीम् दीम् ॥ देरेना देरेना दीम् नितान देरेना, तानोम् देरेना तद्रे दानि तन तदानि तद्रेदानि धिं धिं तृक धेत् ता धिं दिधिकिट तक थुंकतात कत गिधि तिटगिधि दिंता तक् क्डधान दिग् गदिगन धा, तक् क्डधान दिग् गदिगन धा, तक् क्डधान दिग् गदिगन धा ॥

स्थायी

रेंसां नि॒ धपध | नि॒ ऽ नि॒ नि॒ ध सां नि॒ ध म ग॒रे मग॒ |
तनन . देरे | ना . त दा . . नि दी . . म् त . |
१३ १ ५ + १३

रेसा ऽसासा साधधध ध धपध | नि॒ ऽ नि॒ ध सां ऽ नि॒ ध ||
दी . म् तन दे रेनादे रे ना . त | दी म् दी . . म् दी म् ||
१ ५ + १३ १ ५ +

अंतरा

मममम नि॒नि॒नि॒ ध | नि॒ सां ऽ सां नि॒ सां सां नि॒सांसां
दे रेनादे रे ना दी म् | नि ता . न दे रे ना ता नोम् दे
+ १३ १ ५ + १३

सांमंग॒ | रेंसां नि॒ध पधनि॒ नि॒ धमग॒म ग॒रे सासा | धध
रे ना . | त द रे दा . नित न तदा . नि त द्रे दा नि | धिं धिं
१ ५ + १३ १

धधध धध धध धधधधध धधध धधधध धधधध | धनि॒
तृकधेत् ताधिंदिधिकिटतकथुं कतात कतगिधि तिटगिधि | दिंता
५ + १३ १

ध नि सां सांसांसां सांसांसांसां मं गं रें रें सां ऽ सांसांसांसां | सांसां
तक्ड धा . नदिग् ग दि ग न धा तक्डधा. नदिग् गदि | ग न
५ + १३ १

गं रें रें सां ऽ सांनि धनि पधनि ऽ ||
धा तक्ड धा . न दिग् गदि | गन धा . ||
५ +

राग सारंग (विंद्रावनी सारंग)

यह काफी थाट का राग है। इस राग में दोनों निषाद लगते हैं। बाकी सब स्वर शुद्ध। आरोहावरोह में गंधार और धैवत वर्जित हैं। जाति ओडव-ओडव। आरोह मे शुद्ध निषाद और अवरोह मे कोमल निषाद का प्रयोग होता है। वादी स्वर ऋषभ और संवादी पंचम है। म-रे और प-रे की स्वर संगतीयाँ हैं। विश्रांति स्थान सा, रे और प हैं। गाने का समय दोपहर का है।

आरोह:—निं सा रे म प निसां

अवरोह :—सां नि॒ प म रे सा।

पकड :—निंसारे, मरे, पमनि॒प, मरे, निं सा

आलाप

(१) सा, निं सा, निं सा रे, रे, म रे, सा रे म रे, निं सा।

(२) सा, निं सा रे, रे, सा रे म, रे, रे म प, म रे, रे म, रे, सा, नि॒ पं, मं पं निं, सा।

(३) निं सा रे म, रे, रे म प, प, म रे, म प नि॒ प, म रे,रे म प नि॒ प, म रे, नि॒ प म रे, प, म रे, म रे, सा रे, निं सा।

(४) निं सा रे म प, प म नि॒ प, प म रे, रे म प नि॒ म प म नि॒ प, म रे, रे, सा रे म, रे म प, म प नि॒ प म रे, निं सा रे म प, म रे, म रे, निं सा।

(५) निं सा रे म प नि॒ प, नि॒ प, म प सां, नि॒ प म प नि सां, नि॒ प, सां, नि॒ प, नि॒, प म रे, रे म प नि॒ प म प नि सां,

नि् प, म प, म नि् प नि्, प नि् प म रे, म रे प म, नि् प, सां, नि् प, म रे, रे म प, म रे निं सा ।

(६) म प नि, सां, सां नि्, म प नि सां, सां, नि सां रें, रें, नि सां, सां रें नि सां, नि् प, म प नि सां रें, सां रें, नि सां, नि् प, म प नि सां रें नि सां, नि् प, म प सां, नि् प, प, म नि् प म रे, निं सा रे म प नि् प म प नि सां, नि्, प म रे, प, म रे, निं सा ।

(७) म प नि, सां, सां, नि सां रें, रें, सां, सां रें मं, रें, पं, मं रें, नि सां, सां रें नि सां, नि् प, म प नि सां रें नि सां रें नि सां, नि् प, सां, नि् प, नि्, नि् प म रे, सा रे म प नि् म प नि सां रें मं, रें पं, मं रें, सां, नि् प, म रे, निं सा ।

तानें

(१) निं सा रे म रे सा, निं सा रे म प म रे सा, निं सा रे म प नि् प म रे सा, निं सा रे म प नि सां नि् प म रे सा, निं सा रे म प नि सां रें सां नि् प म रे सा, निं सा रे म प नि सां रें मं रें सां नि् प म रे सा, निं सा रे म प नि सां रें मं पं मं रें सां नि् प म रे सा ।

(२) निं सा रे म रे म प म रे सा, निं सा रे म रे म प नि् प म रे सा, निं सा रे म प नि् म प नि सां नि् प म रे सा, निं सा रे म प नि् म प नि सां रें सां नि् प म रे सा, निं सा रे म प नि् म प नि सां रें मं रें सां नि् प म रे सा, निं सा रे म प नि् म प नि सां रें मं पं मं रें सां नि् प म रे सा ।

(३) सां नि् प म रे सा, सां रें सां नि् प म रे सा, सां रें मं रें सां नि् प म रे सा, सां रें मं पं मं रें सां नि् प म रे सा,

पं–मं रें सां नि॒ प म रे सा, मं–रें सां नि॒ प म रे सा, रें–सां नि॒ प म रे सा, सां–नि॒ प म रे सा।

(४) नि सा रे म रे सा रे म प नि॒ प म प नि सां नि॒ प म रे सा, रे म प नि॒ प म प नि सां रें सां नि सां रें मं रे सां नि॒ प म रे सा, म प नि सां नि॒ प नि सां रें मं रें सां रें मं पं मं रें सां नि॒ प म रे सा।

(५) म म रे म रे सा, प प म प म रे सा, नि॒ नि॒ प नि॒ प म रे सा, सां सां नि सां नि॒ प म रे सा, रें रें सां रें सां नि॒ प म रे सा, मं मं रें मं रें सां नि॒ प म रे सा, पं पं मं पं मं रें सां नि॒ प म रे सा।

(६) रे म म रे म म रे म म रे सा; म प प म प प म प प म रे सा; प नि॒ नि॒ प नि॒ नि॒ प नि॒ नि॒ प म रे सा; नि सां सां नि सां सां नि सां सां नि॒ प म रे सा; सां रें रें सां रें रें सां रें रें सां नि॒ प म रे सा; रें मं मं रें मं मं रें मं मं रें सां नि॒ प म रे सा; मं पं पं मं पं पं मं पं पं मं रें सां नि॒ प म रे सा।

(७) निं सा रे म प नि सां नि॒ प म रे सा; निं सा रे म प नि सां रें सां नि॒ प म रे सा; सां रे मं रें सां नि॒ प म रे सा; निं सा रे म रे सा रे म प नि॒ प म प नि सां रें सां नि सां रें मं पं मं रें सां नि॒ प म रे सा, म म रें म रे सा, प प म प प म प पं म रे सा, नि॒ नि॒ प नि॒ प म रे सा; सां सां नि सां सां नि सां सां नि॒ प म रे सा; रें रें सां रें सां नि॒ प म रे सा, मं मं रें मं मं रें मं मं रें सां नि॒ प म रेसा, निं सा रे म प रे म प नि सां म प नि सां रें नि सां रें मं पं मं रें सां नि॒ प म रे सा।

राग सारंग—तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

रे म प नी प म रे सा | रे सा ऽ रे सा नि नि नि सा ऽ
\+ १३ | १ ५ + १३
सा नि सा | रे म प नी प म प नि नि नि नि सां सां सां |
| १ ५ + १३
नि सां रें सां नि नि प म प सां नि सां ऽ सां प नि |
१ ५ + १३
प नि ऽ नि प म रे सा ||
१ ५

अंतरा

म म ऽ म प प नि प | नि सां ऽ सां नि सां सां नि नि
\+ १३ | १ ५ +
नि नि सां नि सां | रें मं रें सां नि नि प म प सां नि सां
१३ | १ ५ +
सां प नि | प नि नि प म रे सा |
१३ | १ ५ |

राग सारंग-एक ताल (द्रुतलय)

राग लक्षण

धन धन धुन सारंग, औडव रूप वरजित ध-ग ।
गावत हरि वृन्दावन, संग मुरली अति सुहाग ॥
आरोहन सुध नी लसत, सोही मृदु अवरोही रहत ।
प-रि सुर संवाद करत, नीपमरे संगत सोहत ॥
पं० खरे शास्त्री,

स्थायी

म
म रे प म नि प रे म प म रे ऽ सा | नि सा सा रे म रे सा
ध न ध न धु न सा . . रं . ग | औ ड व रू . प .
१ + ५ + ९ ११ १ + ५

सा
नि सा रे सा नि पं | नि सा रे म प नि प नि प म रे सा सा |
व र जि त ध ग | गा . व त ह रि वृ . . . न्दा व न |
+ ९ ११ १ + ५ + ९ ११

सां सां प नि प रे म प म रे ऽ सा ||
सं ग मु र ली अ ति सु . हा . ग ||
१ + ५ + ९ ११

अंतरा

म प नि नि नि नि सां नि सां सां सां | नि सां रें मं रें सां
आ रो . ह न सु ध नी ल स त | सो ही मृ दु अ व
१ + ५ + ९ ११ १ + ५

नि सां रें सां नि प प | प रें सां रें नि सां नि सां रें सां प
रो . . ही र ह त | प रि सु र सं . वा . . द क
+ ९ ११ १ + ५ + ९

नि प | नि प म रे रे म प नि प म रे ऽ सा सा ||
र त | नी प म रे सं . ग . त सो . ह त ||
११ १ + ५ + ९ ११

राग सारंग—धमार ताल

माया मोहनी मन हरनी।

चपल चाल विशाल लोचन, सबल सारङ्ग धरन। माया०

काम बाण विलोकि मारे, योगिया वश करन॥ माया०

स्थायी

रे म प नि़ प | सां ऽ नि़ प ऽ नि़ प म रे रे सा ||
मा . या . . | मो . ह नी . म न . ह र नी ||
११ १ ६ +

अंतरा

म म म प ऽ प प नि़ ऽ प म प प प | म म म रे म प
च प ल चा . ल वि शा . ल लो . च न | स ब ल सा . रं
१ ६ + ११ १ ६

नि़ प म रे रे सा रे म प ऽ | म ऽ प नि ऽ नि नि सां ऽ
. ग . ध र न मा . या . | का . म बा . ण वि लो .
+ ११ १ ६ +

सां नि सां सां ऽ | मं ऽ रें सां ऽ नि़ प म रे रे सा ||
कि मा . रे . | यो . गि या . व श . क र न ||
११ १ ६ +

राग सारंग–वि० तीन ताल (ख्याल)

बौरे जिन अल्ला कोऊ न जानिये करना था सो कर चुका और जी चाहे सो करे ॥ अन्तरा ॥ अदारङ्ग साची कहत है अत कामन की करीम रीझै झर काहू कीं मन का मति कर सोही देत भरे ॥

स्थायी

म प सां नि़ ऽ ऽ प म रे निं सा | रे म ऽ ऽ प नि़ प ऽ
बौ . रे . . . जि . न अ . | ल्ला . . . को . . .
१३ १ ५

निं

नि नि सां ऽ ऽ नि् प रे ऽ रे रे | सा ऽ सा सा रे ऽ ऽ प
ऊ ना . . . जा नि ये . क र | ना . . था सो . . क
+ १३ १ ५

म प रे ऽ निं सा ऽ ऽ म म प ऽ | निं सा ऽ नि सां रें
र चु का . . . . . औ र जी . | चा . . है . .
+ १३ १

रें
मं ऽ रें सां ऽ सां नि सां नि् म प ऽ ||
. . सो . . क . रे . . . . ||
५ +

अंतरा

नि सां ऽ नि् ऽ प प | रे रे सा रे सा म रे म प म प
अ दा . रं . ग सा | ची क ह त है अ त का म न की
१३ १ ५

सा नि् ऽ नि् नि् म प नि नि सां रें सां | प म प म रे रे
क री . म री . भे भ र का हू की | म न का . म ति
+ १३ १

रें
निं सा ऽ नि सां रें मं रें सां सां सां नि् ऽ म प ||
क र . सो ही दे . . त भ रे . . . . ||
५ +

राग सारंग—झपताल

मधु मद न मन करो प्रभु से तुम ।
साँची कहिये कौन निभावे ॥
जब कोकिला कूँक उठी चहुँ ओर ।
शीतल मंद समीर भावे ॥

स्थायी

नि नि सां सां सां नि प म प ऽ म रे ऽ |
म धु म द न म न . क . . रो . |
१ ३ + ८

रे म रे म प नि म प ऽ ऽ रे ऽ सा ऽ ऽ |
प्र भु से . . . . तु . म . . |
१ ३ + ८

म ऽ म ऽ म प ऽ नि प ऽ | म प
सा . ची . क ही . ये . . | कौ .
१ ३ + ८ १

नि सां रें सां ऽ नि प नि सां |
न . नि भा . . वे . . |
३ + ८

अंतरा

म म प नि प नि सां ऽ नि सां सां | नि सां सां ऽ रें सां
ज ब को . . कि ला . कू . क | ऊ . ठी . च हुँ
१ ३ + ८ १ ३

ऽ प नि प | रें ऽ रें ऽ पं रें ऽ नि सां सां | म प नि सां
. ओ . र | शी . त . ल मं . . . द | स . मी .
८ १ ३ + ८ १ ३

रें सां ऽ नि् प नि सां ||
र भा . . वे . . ||
\+ ८

राग सारंग–तीनताल (मध्यलय)

बनहि बन श्याम चरावत गैया।
सुभग अंग सुखमा को सागर, कर बिच लकुट धरैया।
पीत बसन दमकत दामिनि सम, मुरली अधर बजैया।
धावत इत उत दाउ के संग, खेल करत लरकैया॥

स्थायी

मरेम पनि्मप सां नि् पम रे निंसा | रेसा ऽ सा निंनिंनिंनिं
बनहिब .न. श्या म च. रा व त | गैया . . सु भ ग अं
५ + १३ १ ५ +

सा सा निंसा | रेम पनि्पम रे निंसा मपनिनि निसां सांसां |
. ग सु ख | मा. को... सा ग र करबिच ल कु ट ध |
१३ १ ५ + १३

सांरें सांनि्प ||
रै . . .या ||
१

अन्तरा

ममम पप निनि | सांसांसां निसां सांसांनिनिनि सांसांसांसां |
पीत ब सन द म | क त दा मिनि स म मु रली अ ध र ब |
\+ १३ १ ५ + १३

सांरेंनिसां ऽ पनि् मप मप निसां रेंमंरेंसां | निसां निसांरेंसां
ᴗ○○○ ~ ~~ ᴗ○○○○
जै . . . . या . . . धा. व त इतऽ त | दा ऽ के . . .
१ ५ + १३ १ ५

नि् प ऽ रें सांरें निसां नि्प | पनि सांनि्प ||
ᴗ○ ○○
सं ग . खे ल क र त ल र | कै . . . या ||
+ १३ १

राग भीमपलासी

यह काफी थाट का धनाश्री अंग का राग है। इसमें गंधार और निषाद कोमल लगते हैं। आरोह मे रे और ध वर्जित हैं। अवरोह संपूर्ण है। इसलिये जाति ओडव-संपूर्ण है। इस राग में मध्यम स्वर मुक्त है। आरोह में 'नीं सा म' यह प्रयोग अधिक होता है। सा, म, प यह विश्रांति स्थान हैं। इसका वादी मध्यम और संवादी षड्ज है। गाने का समय दिन का चौथा प्रहर है।

आरोह :—निं सा ग् म प नि् सां।

अवरोह :—सां नि् ध प म ग् रे सा।

पकड :— ग् म प, ग् म, ग् रे सा।

आलाप

(१) सा, निं सा, पं निं सा, निं सा ग्, रे, सा, सा निं, धं पं, मं पं निं, पं निं सा, ।

(२) निं सा, पं निं सा, निं सा ग्, रे सा, निं सा म, म ग् सा म ग्, ग्, रे सा, निं सा, निं धं पं, मं पं निं, पं निं सा।

(३) निं सा म, म ग्, सा ग् म प, प, म प, ग् म, ग् म ग् प, प म, निं सा ग् म प म, प म ग् म, ग् म प, ग् म, निं सा ग् म प ग् म, सा ग् म, ग्, रे सा।

(४) निं सा ग् म प, ग् म ग् प, प, म प ग् म, ग् म प नि्, ध प, ध प म प ग् म, निं सा ग् म प, ग् म प नि्, ध प, म प ग् म, सा ग् म प, ग्, रे सा।

(५) ग् म प नि्, नि् ध प, म प नि् ध प, प नि्, ध, म प नि् ध प, म प नि्, सां नि्, ध प, प नि् ध प ग् म ग् प म नि् प सां, नि्, ध प, सां नि् ध प, नि् ध प, ध प म प, ग् म, नि़् सा ग् म प, ग् म, ग्, रे सा, नि़् धं पं, पं नि़् सा।

(६) ग् म प नि्, नि्, नि्, नि्, प नि् सां, सां नि्, प नि् सां, नि् सां गं्, रें सां, रें सां, नि् सां नि्, प नि् सां, नि् ध प, म प सां, नि् ध प, म प नि्, ध प, ध प, म प ग् म, ग् म प नि् सां, नि्, ध प, म प ग् म, ग् म प, ग्, रे सा, नि़्, नि़् नि़्, पं नि़् सा।

(७) प प, ग् म प नि्, सां, सां नि्, प नि् सां गं्, रें सां, गं्, रें सां, नि् सां मं, गं् रें सां, नि् सां गं् मं पं, गं् मं, गं्, रें सां मं गं् रें सां, गं् रें सां, रें सां, नि्, प नि् सां, नि्, ध प, म प ग् म, प सां, प नि्, ध प, प, म प ध प, ग् म, नि़् सा म, ग् प, म नि्, प सां, नि् सां गं्, सां रें, नि् सां, प नि्, ध प, म प, ग्, सा ग् म प, ग्, रे सा, नि़्, पं नि़् सा।

तानें

(१) नि़् सा ग् रे सा, नि़् सा ग् म ग् रे सा, नि़् सा ग् म प म ग् रे सा, नि़् सा ग् म प नि् ध प म ग् रे सा, नि़् सा ग् म प नि् सां नि् ध प म ग् रे सा, नि़् सा ग् म प नि् सां रें सां नि् ध प म ग् रे सा, नि़् सा ग् म प नि् सां गं् रें सां नि् ध प म ग् रे सा, नि़् सा ग् म प नि् सां गं् मं गं् रें सां नि् ध प म ग् रे सा, नि़् सा ग् म प नि् सां गं् मं पं मं गं् रें सां नि् ध प म ग् रे सा।

(२) नि़् सा ग् म प ग् म प म ग् रे सा, नि़् सा ग् म प ग् म प नि् ध प म ग् रे सा, नि़् सा ग् म प ग् म प नि् सां नि्

ध प म ग॒ रे सा, निं॒ सा ग॒ म प ग॒ म प नि॒ सां रें सां नि॒
ध प म ग॒ रे सा, निं॒ सा ग॒ म प ग॒ म प नि॒ सां गं॒ रें सां
नि॒ ध प म ग॒ रे सा, निं॒ सा ग॒ म प ग॒ म प नि॒ सां गं॒
मं गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, निं॒ सा ग॒ म प ग॒ म प
नि॒ सां गं॒ मं पं मं गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा।

(३) सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, सां रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, सां
गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, सां गं॒ मं गं॒ रें सां नि॒ ध प म
ग॒ रे सा, सां गं॒ मं पं मं गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, पं–
मं गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, मं–गं॒ रें सां नि॒ ध प म
ग॒ रे सा, गं॒–रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, रें–सां नि॒ ध प म
ग॒ रे सा, सां–नि॒ ध प म ग॒ रे सा।

(४) निं सा ग॒ म प म ग॒ म प नि॒ ध प म प ग॒ म प नि॒ सां
नि॒ ध प म प ग॒ म ग॒ रे सा, ग॒ म प म ग॒ म प नि॒ ध प
म प ग॒ म प नि॒ सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, प नि॒ सां नि॒ प
नि॒ सां रें सां नि॒ प नि॒ सां मं गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे
सा, नि॒ सां रें सां नि॒ सां गं॒ रें सां नि॒ सां गं॒ मं पं मं गं॒ रें
सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा

(५) म म ग॒ म ग॒ रे सा, प प म प म ग॒ रे सा, नि॒ नि॒ प नि॒
ध प म ग॒ रे सा, सां सां नि॒ सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, रें रें
सां रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, गं॒ गं॒ सां गं॒ रें सां नि॒ ध प
म ग॒ रे सा, मं मं गं॒ मं गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, पं पं
मं पं मं गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा।

(६) ग॒ म म ग॒ म म ग॒ म म ग॒ रे सा, म प प म प प म प प
म ग॒ रे सा, प नि॒ नि॒ प नि॒ नि॒ प नि॒ नि॒ ध प म ग॒ रे
सा, नि॒ सां सां नि॒ सां सां नि॒ सां सां नि॒ ध प म ग॒ रे

सा, सां रें रें सां रें रें सां रें रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा,
सां गं॒ गं॒ सां गं॒ गं॒ सां गं॒ गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा,
गं॒ मं मं गं॒ मं मं गं॒ मं मं गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा,
मं पं पं मं पं पं मं पं पं मं गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा।

(७) निं॒ सा ग॒ म प नि॒ सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, निं॒ सा ग॒ म प ग॒ म प नि॒ सां रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, सां गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, निं॒ सा ग॒ म प म ग॒ म प नि॒ सां नि॒ प नि॒ सां गं॒ मं गं॒ सां गं॒ मं पं मं गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, म म ग॒ म ग॒ रे सा, प प म प प म प प म ग॒ रे सा, नि॒ नि॒ प नि॒ ध प म ग॒ रे सा, सां सां नि॒ सां सां नि॒ सां सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, गं॒ गं॒ सां गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, मं मं गं॒ मं मं गं॒ मं मं गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा, निं॒ सा ग॒ म प ग॒ म प नि॒ सां प नि॒ सां गं॒ मं सां गं॒ मं पं मं गं॒ रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा।

राग भीमपलासी—तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

नि॒ ध प ग॒ ऽ रे सा रे | निं॒ सा ग॒ म ग॒ म प नि॒ प नि॒
\+ १३ | १ ५ + १३

सां रें | नि॒ सां नि॒ ध प म ग॒ म ||
| १ ५ ||

अंतरा

ग॒ म प ग॒ म प ग॒ म | प नि॒ ऽ प ऽ नि॒ सां नि॒ सां मं गं॒
\+ १३ | १ ५ ५

रें सां नि सां | रें सां नि ध प म ग म ||
१३ | १ ५ ||

राग भीमपलासी—तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

गावत बुध जन सब विधि सुन्दर, रागिनी भीमपलासी को ।।
आरोहन में रि-ध सुर वरजित, सम्पूरन प्रतिलोम कहावत ।
मृदु ग-नि मध्यम अंश सुहावत, अपर अन्ह शुभ सूचक को ।।

पं० खरे शास्त्री

स्थायी

ग मप नि धप ग ग रेसा | निंनि सामग रे सासा निंसा मम
गा . . वत बु ध ज न | स ब विधिसुं . द र रा गि नीभी
\+ १३ १ ५ + १३

मप | ग रेसा ग मप सां || नि धप ग ग रेसा |
मप | लासी . को . . . || गा वत बु ध जन |
१ ५ + १३

अंतरा

प प पनिमप ग म | प प नि नि सां सां सांसां निनि सांसां
आरो ह . न . में . | रि ध सु र व र जित सं पू र न
\+ १३ १ ५ + १३

सांसां | पनि सारें सारें निसां नि धप पप पम ग म मम |
प्र ति | लो . . . म क हा . व . त मृदु ग नि म . ध्यम |
१ ५ + १३

ग॒म नि॒प ग॒ रेसा नि॒नि॒ सा म ऽ म मप | ग॒ममम ग॒म
अं . श सु हा वत अ प र अ . न्ह शुभ : सू . चक को .
१ ५ — १३ १ ५

प सां || नि॒ धप ग॒ग॒ रेसा
. . || गा वत बु ध जन
+ १३

राग भीमपलासी—चारताल

निरख मदन मूरत श्याम,
सुन्दर के छबि देखे, मोपे बरनी न जाय ॥
मोर मुकुट कमल नयन, भौहें धनुष केसर तिलक ।
अलक भाल कुंडल छबि, गले सोहे मुक्त माल छबि छाय ॥

स्थायी

नि॒ सा म ग॒ रे सा | नि॒ सा ग॒ म प प प
नि र ख म द न | मू र त श्या म सु
+ ९ ११ १ + ५ +

ऽ प म प ग॒ म | ग॒ म प नि॒ सां ऽ प म प
. न्द . र के . | छ बि दे . खे . मो .
९ ११ १ + ५ +

ग॒ म म प | ग॒ ऽ म ग॒ रे सा ||
पे . ब र | नी . न जा . य ||
९ ११ १ + ५

अन्तरा

							सां	सां			
प	ऽ	प	प	ग॒	म	प	नि॒	नि॒	सां	सां	सा
मो	.	र	मु	कु	ट	क	म	ल	न	य	न
१		+		५		+		९		११	

सां	ऽ	सां	नि॒	सां	म	ग॒	रें	सां	नि॒	ध	प
भौं	.	हे	ध	नु	ष	के	स	र	ति	ल	क
१		+		५		+		९		११	

प	प	प	ग॒	म	म	प	ग॒	म	ग॒	रे	सा
अ	ल	क	भा	.	ल	कु	.	ड	ल	छ	बि
१		+		५		+		९		११	

							सां	सां	सां		
प	प	ऽ	ग॒	म	म	प	नि॒	नि॒	नि॒	सां	सां
ग	ले	.	सो	.	हे	मु	.	क्त	मा	.	ल
१		+		५		+		९		११	

प	ग॒	म	ग॒	रे	सा
छ	बि	.	छा	.	ये
१		+		५	

राग भीमपलासी—झपताल

राम भज राम भज, राम भज रे मना।
होय जनम सुफल जाय, यम यातना ॥
भव ताप बिनसाय, सब पाप बिलगाय।
सुख सब मिलहिं आय, सहे क्यों वेदना ॥

स्थायी

प म प ग॒ सा ग॒ म ग॒ रे सा | नि॒ नि॒ पं नि॒ सा निं सा
ग . म भ ज रा . म भ ज | रा . म भ ज रे .
१ ३ + ८ १ ३ +

ग॒ रे सा ऽ | प ऽ प नि॒ ध प ध प म ग॒ | म म नि॒
. म ना . | हो . य ज न म सु फ ल जा | . य य
८ १ ३ + ८ १ ३

सा ग॒ रे सा निं॒ सा ग॒ म प ग॒ म ||
म या . त ना . . . . . ||
+ ८

अन्तरा

प प ग॒ म म प नि॒ नि॒ सां सां | नि॒ नि॒ सां ऽ रें नि॒ सां
भ व ता . प बि न सा . थ | स ब पा . प त्रि ल
१ ३ + ८ १ ३ +

नि॒ ध प | प प रें सां रें नि॒ सां नि॒ ध प | नि॒ ध प म प
गा . य | सु ख स ब मि ल हिं आ . य | स हे . क्यों .
८ १ ३ + ८ १ ३

ग॒ म म निं॒ सा ग॒ म ||
वे . द ना . . . ||
+ ८

राग भीमपलासी—(ख्याल) वि० एकताल

अब तो बड़ी बेर भई टेरत हूँ, तुमको मेरे रब साईंयाँ।
भँवर जाल में आन फँसे भवसागरते पार करो मेरे साईंयाँ॥

स्थायी

सा
सा रे निं॒ सा निं॒ सा म | म ऽ ग॒ ऽ ग॒ प ऽ ध म ऽ प
○ ○ — ○ ○ ○ ○ | — ○ ○ — — — — ‿ ‿ ○ —
अ ब तो . . ब ड़ी | वे . . . र . . . . . .
९ ११ | १ — ५ +

म ग॒ ऽ म ग॒ | रे सा ऽ निं॒ ऽ सा रे रे सा ऽ
○ ○ — — — | — — — — ○ ‿ ‿ — — —
. . . भ ई | . . . टे . . . र त .
९ ११ | १ + ५ +

रे निं॒ ऽ सा निं॒ सा रे | निं॒ ऽ धं ऽ पं ऽ निं॒ निं॒ सा निं॒
‿ ‿ ○ — — ○ ○ | — ○ ○ ○ ○ — ○ ○ — —
हे . . . . तु म | को . . . . . मे रे . .
९ ११ | १ + ५ +

सा म म ऽ ग॒ ऽ ग॒ | प ऽ ध म ऽ प
○ ○ — ○ ○ — — | — — ‿ ‿ ○ —
र ब सा . . . ई | . . . . . .
९ ११ | १ +

म ग॒ ऽ ऽ म ग॒ रे सा ||
‿ ‿ ○ — ○ ○ ○ ○ ||
. . . . याँ . . . ||
५ +

अंतरा

म म प सां ऽ ऽ सां सां | सां ऽ रें नि॒ ऽ ऽ सां रें रें सां
‿ ‿ ‿ ‿ — — ○ ○ | — — ‿ ‿ ○ ○ ‿ ‿ ○ ○
भँ व र जा . . . ल | मे . आ . . . . . न .
९ ११ | १ + ५

ऽ नि॒ नि॒ सां ऽ नि॒ ध प प प | म ग॒ म ग॒ रे सा ऽ
○ ○ ○ ○ — — — — ○ ○ | — — ○ ○ — — —
. फ से . . . . . भ व | सा . ग र ते .
+ ९ ११ | १ + ५

रें निं सा सा म म ऽ ग ऽ म ग ऽ | ग प ऽ
पा . . र क रो . . . मे . . | रे . .
— ९ ११ १

ध म ऽ ध प नि ध म प ग म ग रे सा ||
. . . . . . सा . . . ई . या . ||
+ ५ +

राग भीमपलासी—तीनताल (मध्यलय)

ठाढ़ी प्रेम नदी के तीरा।
सुध बुध भूलि विकल मोहन को, गुन गन गावत मीरा ॥
पुनि पुनि चौंकि चौंकि मग हेरत, पल न धरत उर धीरा।
सपना बनी मिलन अभिलाषा, नींद विरह की पीरा ॥

—पं० बालकृष्ण राव

स्वरकार :— स० द० आपटे

स्थायी

म सा
गम गम प गम पनि धप गरेसा | निं सा सा ऽ निं सा ऽ
ठा . ढ़ी . . प्रे . . मन दीके . | ती . रा . . . .
५ + १३ १ ५

म म म
निंनिं सासा ग रेसा | निंसागम पपगम गमपनि पनि सां रें
सुध बुध भू लिवि | कलमो . हनको . गुन गन गा . .
+ १३ १ ५ + १३

नि सां | प नि सांनि धप ||
व त | मी . . . रा . ||
१

अंतरा

पप पप मप ग॒म | पपनि॒नि॒ सांसां नि॒नि॒सांमं ग॒रेंसांसां |
पुनिपुनिचौं . किचौं | . किमग हे र त प ल न ध र त ड र |
+ १३ १ ५ + १३

सां म सां सां
पनि॒सांरें नि॒धप निं॒निं॒ सांम म म ऽ प | ग॒म पप नि॒ नि॒
धी . . रा . . स प ना . बनी . मि | ल न अभि ला .
१ ५ + १३ १ ५

सां पनि॒ सांरें सांरें नि॒सां पनि॒ | म प ग॒म ||
धा नीं . . . दवि र ह की . | पी . रा . ||
+ १३ १

राग भीमपलासी-तीनताल (मध्यलय)

सबसे ऊँची प्रेम सगाई ।
दुर्योधन को मेवा त्यागो, साग विदुर घर पाई ॥
जूठे फल शबरी के खाये, बहु विधि प्रेम लगाई ।
प्रेम के वश नृप सेवा कीन्हीं, आप बने हरिनाई ॥
राजसु यज्ञ युधिष्ठिर कीन्हों, तामे जूठ उठाई ।
प्रेम के वश अर्जुन रथ हाक्यों, भूल गये ठकुराई ॥
ऐसी प्रीत बढ़ी वृन्दावन, गोपिन नाच नचाई ।
सूर क्रूर इस लायक नाहीं, कहँ लगि करौं बड़ाई ॥

स्थायी

ग॒म प सां नि॒ध प म प ग॒ रे निं॒सा | ग॒रे सा ऽ ऽ पं निं॒सा
स ब से . ऊँ . ची . . प्रे . म स | गा . ई . . दु र्यो ध
५ + १३ १ ५ + १३

सा सा | नि़ं सा ग़ रे सा नि़ ध प प प प ध | म प ग़ म ||
न को | में . वा त्या गो सा ग वि दु र घ र | पा . ई . ||
१ ५ + १३ १

अंतरा

प प म प ग़ म | प नि़ प नि़ सां सां नि़ नि़ नि़ नि़ प नि़ सां ग़
जू ठे फ ल श ब | री के खा . . ये ब हु वि धि प्रे . . .
+ १३ १ ५ + १३

रें सां | नि़ सां नि़ ध प प प प म प ग़ म | ग़ म प नि़ म प ग़
म ल | गा . ई . . प्रे म के व श नृ प | से . वा . . . की
१ ५ + १३ १ ५

रे सा नि़ ध प म प ग़ म | प सां नि़ ध प म ||
. न्ही आ प ब ने . ह रि | ना . ई . . . ||
+ १३ १

राग भीमपलासी—तीनताल (मध्यलय)

तराणा

तन तुंद्रे ना तन ना तारे तदरे दानी तदारे दानी तदानी ॥
दिर दिर तन दिर दिर तन तदरे तदरेदानी तन तदारे दानी
नितारे दानी तारे दानी तदरे तदरे दानी ॥

स्थायी

नि़ं सा ग म | प ऽ ऽ नि़ प ग़ म ग़ म प |
त न तुं द्रे | ना . . त न ना . ता रे त |
१३ १ ५ + १३

म ग् रे सा सा म ग् रे सा रे नि् सा ||
द रे दा नी त दा रे दा नि त दा नी ||
१ ५ +

अंतरा

प प प प म प ग् म प नि् नि् नि् सां सां सां सां |
दिर् दिर् त न दिर् दिर् त न त द रे त द रें दा नी |
१ ५ + १३

नि् सां मं गं् रें सां नि् सां रें नि् सां नि् ध प प |
त न त दा . रे दा नी नि ता . रे दा नी ता |
१ ५ + १३

प ग् म म ग् म ग् प म ग् रे सा ||
रे दा . नी त द रे त द रे दा नी ||
१ ५ +

राग पीलू

यह काफी थाट का संकीर्ण प्रकृति का राग है। गंधार, धैवत और निषाद के दोनों रूपों का प्रयोग होता है। कोमल ऋषभ का प्रयोग भी होता है और कुशल गायक तीव्र मध्यम भी कुशलता से लगाते हैं। राग का चलन अधिकतर मंद्र और मध्य सप्तक में है। जाति संपूर्ण मानी जाती है। कुछ लोग जाति ओडव संपूर्ण मानते हैं। रे और ध आरोह मे वक्र हैं। पंचम और गंधार कोमल की संगती है। वादी स्वर गंधार और संवादी निषाद है। इस राग मे ठुमरी, टप्पा, भजन और अन्य गीत गाये जाते हैं। गाने का समय दिन का तिसरा प्रहर है। परन्तु संकीर्ण राग होने से समय अनिश्चित रहता है।

आरोह :—निं सा ग मप नि सां।

अवरोह :—सांनि ध्प, नि् धपमग्, रे सा।

पकड़ :—निं सा ग्, रेसा, पं, धं्, निंसा।

आलाप

(१) सा, निं सा, निं सा ग्, रे सा, ग्, रे ग्, रे सा, निं, सा निं धं् पं, पं धं् निं सा, ग्, रे सा।

(२) निं सा ग्, ग्, म ग् रे सा, निं सा रे्, सा निं धं् पं, पं निं, सा ग्, ग् रे म ग् रे सा, ग म प, ग् रे सा।

(३) ग्, रे सा, सा ग, ग म, ग्, रे सा, निं सा ग म प, ग्, रे सा

ग म ध् प, ग॒, रे ग॒ रे सा, प ग॒, रे सा, ग॒ रे सा, रे॒ निं सा, धं॒ निं सा निं धं॒, मं पं निं, सा, निं सा ग॒, रे सा।

(४) सा निं, धं॒ निं सा निं, धं॒ पं, पं धं॒ निं, मं पं धं॒ निं, धं॒ निं सा, सा रे॒ सा निं, सा ग॒, ग म ग॒, प म ग॒, निं सा, ग म प ग॒, प म प, ग॒, ग॒ रे ग॒, रे, निं, सा रे॒ सा निं धं॒ पं पं निं सा ग॒, निं सा।

(५) निं सा ग म प, ग म ध् प, प ध् म प, ग म ग प, ध् म प नि नि ध् प, प ध नि॒ ध प, नि॒ ध प, म प ध, प, ग म, सा ग म प, ध् प, ग म ग, सां नि॒ ध प, ग म ग, सा ग, म प ग॒ रे सा।

(६) निं सा ग म प नि, ध् प, ध् प ध् नि, ध् प, नि ध् प, ध् म, प नि सां, रें सां, सां, नि॒, ध प, ध नि॒ सां, नि॒ ध प, ध प, ग म ग, सा ग म प ध॒ प, सां प, ग॒, ग॒, रे म ग॒ रे सा निं धं॒ पं, धं॒, निं, सा।

(७) ग म प नि, सां, गं॒, रें सां, सां गं॒ रें गं॒, रें, सां, सां नि, ध॒ प, प नि सां रें॒ सां, नि सां नि, ध॒ प, ग म प ध नि॒ ध् प, नि॒ ध ध् प, प नि॒, प ग॒, सा ग म प नि॒, प ग॒, म ग॒, रे सा निं, सा रे॒ सा निं, धं॒ पं, मं पं निं, सा ग॒, रे सा।

तानें

(१) निं सा ग॒ रे निं सा, निं सा ग म ग॒ रे निं सा, निं सा ग म प म ग॒ रे निं सा, निं सा ग म प ध् प म ग॒ रे सा, निं सा ग म प नि ध् प म ग॒ रे सा, निं सा ग म प नि सां नि ध् प म ग॒ रे सा, निं सा ग म प नि सां रें॒ सां नि ध् प म ग॒ रे सा, निं सा ग म प नि सां रें गं॒ रें सां नि ध॒ प म ग॒ रे सा।

(२) सा निं सा, सा निं धं ॒ निं सा, सा निं धं॒ पं धं॒ निं सा, सा नि धं॒ पं मं पं धं॒ निं सा, धं॒ निं सा निं धं॒ पं मं पं धं॒ निं सा, सा रे सा निं धं॒ पं मं पं धं॒ निं सा, धं॒ निं सा रे॒ सा निं धं॒ पं मं पं धं॒ निं सा, धं॒ पं धं॒ निं सा रे ग॒ रे सा निं सा रे॒ सा निं धं॒ पं मं पं धं॒ निं सा।

(३) सां नि ध् प म ग॒ रे सा, सां नि सां रें॒ सां नि ध् प म ग॒ रे सा, सां रें गं॒ रें सां नि ध् प म ग॒ रे सा, गं॒-रें सां नि ध् प म ग॒ रे सा, रें-सां नि ध् प म ग॒ रे सा, सां-नि ध् प म ग॒ रे सा, नि-ध॒ प म ग॒ रे सा, ध्-प म ग॒ रे सा, प-म ग॒ रे सा।

(४) निं सा ग म सा ग म प म ग् रे सा, निं सा ग म प ग म ध् प म ग् रे सा, निं सा ग म प ग म प ध नि् ध प म ग॒ रे सा, निं सा ग म प ग म प नि् ध॒ प म ग॒ रे सा, निं सा ग म प ग म प नि सां रें सां नि ध् प म ग॒ रे सा, निं सा ग म प ग म प नि सां गं॒ रें सां नि ध् प म ग॒ रे सा।

(५) निं सा ग म प म ग म प ध नि् ध; प म ग म प नि सां नि ध् प म ग॒ रे सा, ग म प ध॒ प म ग म प ध नि् ध प म ग म प नि सां रें सां नि ध् प म ग॒ रे सा, प नि सां नि ध् प म प नि सां रें सां नि सां गं॒ रें सां नि ध् प म ग॒ रे सा।

(६) ग॒ ग॒ रे ग॒ रे सा, म म ग॒ म ग॒ रे सा, प प म प म ग॒ रे सा, ध् ध॒ प ध् प म ग॒ रे सा, नि नि ध॒ नि ध॒ प म ग॒ रे सा, सां सां नि सां नि ध् प म ग॒ रे

सा, रें रें सां रें सां नि ध॒ प म ग॒ रे सा, गं॒ गं॒ रें गं॒ रें सां नि ध॒ प म ग॒ रे सा।

(७) निं सा ग म प नि सां नि ध॒ प म ग॒ रे सा, सां नि सां रें सां नि ध॒ प म ग॒ रे सा, सा निं धं॒ पं मं पं धं॒ निं सा, सां रें गं॒ रें सां नि ध॒ प म ग॒ रे सा निं सा, निं सा ग म प ग म प नि सां रें गं॒ रें सां नि ध॒ प म ग॒ रे सा, निं सा ग म प म ग म प ध नि॒ ध प म ग म प नि सां रें गं॒ रें सां नि ध॒ प म ग॒ रे सा, गं॒ गं॒ रें गं॒ रें सां नि ध॒ प म ग॒ रे सा, मं पं निं सा ग॒ रे निं सा ग म प म ग म प ध नि॒ ध प म प नि सां रें सां रें गं॒ रें सां नि ध॒ प म ग॒ रे सा।

राग पीलू—तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

पंनिं निं सा ऽ निं पं धं॒ | निं सा ग॒ रे सा निं साग॒रे ग॒ ऽ रे सा रे |
\+ १३ १ ५ + १३
निं सारे॒ सा निं धं॒ पं ||
१ ५

अंतरा

निं सा गम पधप | मग मप ग॒रे निं सा साग॒रेम ग॒रे सारे |
\+ १३ १ ५ + १३
निं सारे॒ सानिं धं॒ पं ||
१ ५

राग पीलू—तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

पीलू राग सकल नित गावत । सब सुर तीवर मृदुल लगावत ॥
चढ़त हि तीवर सुर सब होवत । मृदुल सुरन सोहत जब उतरत ॥
ग-नि वादी सम्वादी सम्मत । रूप मनोहर संकीरन अत ॥
पं० खरे शास्त्री

स्थायी

पंधं पंधं सा सासा | ग रे सानि सारे ग ग रे रेपमप गरेसारे |
पी . लू . रा ग स | क ल नि त गा . . व त सबसुर ती . वर |
\+ १३ १ ५ + १३

नि नि सारे सानि धं पं ||
मृ दु लल गा . व त ||
१ ५

अंतरा

म सा
निं सा ग म प प प | ग म पध मप ग रे नि सा सा ग रे म
च ढ़ त हि ती व र | सु र स . ब . हो . व त मृ दु लं सु
\+ १३ १ ५ +

गरे सारे | निंनि सारे सानि धंपं ||
रन सो . | ह त जब उ त र त ||
१३ १ ५

राग पीलू—तीनताल (मध्यलय)

रघुविर तुमको मेरी लाज।
सदा सदा मैं शरण तिहारी, तुम बड़े गरीब निवाज़ ॥
पतित उधारन बिरद तिहारो, श्रवण न सुनी अवाज़ ॥
हौं तो पतित पुरातन कहिये, पार उतारो जहाज ॥
अघ खंडन दुःख भंजन जनके, यही तिहारो काज ॥
तुलसी दास पर किरपा करिये, भक्ति दान देहु आज ॥

स्थायी

नि सा रे ग सा रे प प म ध प ग रे ग रे सा ऽ नि |
र घु वि . र . तु म . . . को . . . मे . री |
५ + १३

सा ऽ ऽ सा ध प ध नि ऽ सा सा ग रे ग | सा रे ग
ला . . ज स दा स दा . मैं श र ण ति | हा . .
१ ५ + १३ | १

रे सा नि सा ऽ ग ग ग ग ऽ सा ग म प ध म प |
. री . . . तु म ब ड़े . ग री . ब . नि . |
५ + १३

ग म ग रे सा नि ||
वा . . . . ज ||
१

अंतरा

नि सा ग म प ध प | ग म प ध म प ग म ग रे
प ति त उ धा र न | बि र द . ति . हा . . .
+ १३ | १ ५

सा नि सा ग ग ग ग ग ग ऽ ग | सा रे ग म ऽ ग
री . . श्र व ण न सु नी . अ | वा . . . . ज
+ १३ १

रे ग सा रे प प म ध प ग रे ग रे नि सा नि |
र घु वि र तु म . . . को . . . मे . री |
५ + १३

सा ऽ सा ||
ला . ज ||
१

राग पीलू—वि० तीनताल (पंजाबी)

पार लगा दे नैया कन्हैया ।
तुम ही ठाकुर तुम परमेश्वर, तुम ही राम रमैया ॥
तुम हो जगत उधारन तारन, बिनती करूँ परूँ पैया ॥
तुम ही तुम दीसत सब ओरे, तुम बिन कौन रखैया ॥
कृष्ण सनेही बलि बलि जाऊँ, भवसागर को पार करैया ॥

स्थायी

ग म नि प ग ऽ रे नि सा | ग सा सा ऽ सा सा रे ग
पा . र ल गा . . दे . | नै . या . क न्है . .
१३ १ ५

ऽ रे रे ग म ऽ ग ग म प ऽ ग प म ग रे ग ऽ ||
. . या . . . . ||
+

अंतरा

ऽ निं सा ऽ ग म प ऽ प प | ऽ ग म ऽ नि प ग
. तु म . ही . ठा . कु र | . तु म . प र मे
+ १३ १ ५

रे ग रे सा ऽ प प ऽ प ऽ ग म प ध सां नि ऽ
. . श्व र . तु म . ही . रा . . . . . .
+ १३

ध प | ग प म ग सा सा निं सा ग म प ध म प
म र | मै . या . . क न्है . . . .
१ ५

ऽ ऽ ग प म ग रे ग ऽ सा ||
. . या . . . . ||
+

राग पीलू–दादरा ताल

डग मग हाले मोरी नैया रे कन्हैया बिना।
गहरी नदिया नाव पुरानी, खेवन हार मतवारो। रे कन्हैया।

स्थायी

निं सा ग म | प ऽ प ऽ नि प | ग प म ग ग म प
ड ग म ग | हा . ले . मो री | नै . . या रे . .
+ १ + १ +

सा
ध प | ग रे ग सा रे निं | सा ऽ ||
. क | न्है . . या . बि | ना . ||
१ + ५

अंतरा

नि सा ग म | प प ऽ प ऽ ऽ | ग ऽ म ग म प ध् प |
ग ह री . | न दि . या . . | ना . . व . . . पु |
— १ + १ +

ग् रे ग् रे सा ऽ | नि् नि नि् नि् ध सां नि् | ध नि् ऽ
रा . . नी . . . | खे व न हा . . . | . . .
१ + १ + १

ध्
प ऽ नि् प | ग प म ग रे ग ग म प ध् प | ग् रे ग् सा
र . म त | वा . रो . . . रे . . . क | न्है . . या
+ १ + १ +

सा
रे नि | सा ऽ ||
. बि | ना . ||
१

राग आसावरी

यह आसावरी थाट का आश्रय राग है। गंधार, धैवत और निषाद कोमल लगते हैं। बाकि के सब स्वर शुद्ध। आरोह में गंधार और निषाद वर्ज्य हैं। इसलिए जाति ओडव-संपूर्ण है। गान समय दिन का दुसरा प्रहर है। वादी स्वर धैवत और संवादी गंधार। उत्तरांग वादी राग होने से उत्तरांग मे स्पष्ट होता है। विश्रांति स्थान सा, ग, प और ध हैं। प-ग और ध-ग की संगती है। अवरोह मे 'रें नी ध् प' इस प्रकार षड्ज को छोड़ देते हैं। कभी कभी तानों मे आरोह मे निषाद का प्रयोग होता है। जौनपूरी इससे मिलता जुलता राग है।

आरोह :—सा, रे म प, ध्, सां।

अवरोह :—सां, नि ध्, प, मप, ग्, रे सा।

पकड़ :—मपध् मप, ग्, रेसा।

आलाप

(१) सा, सा रे, सा, सा रे ग्, रे, सा, सा रे म, रे म प, प ग्, रे, सा, धं् धं् सा।

(२) सा रे म, रे म प, ध् ध्, ध् प, ध् म, म प ध् म प, ग्, सा रे प ग्, सा रे, सा, धं्, धं् सा।

(३) सा रे म प ध्, ध्, प, ध् म, म प, नि् ध्, प, ध् म, म प ध्, सां, नि् ध् प, ध् म, रे म प नि्, ध्, प, ध् म, म प ध् म प, ग्, ग्, रे सा।

(४) सा रे म प ध॒, ध॒, ध॒, सां, रें सां, सां रें, सां रें गं॒, रें,
सां, रें नि॒, ध प, म प सां, नि॒ ध॒ प, म प नि॒, ध॒ प, ध॒
म, म प म प, म प ध॒ म प, ग॒, रे, सा ।

(५) म प ध॒, ध॒, ध॒ सां, नि॒ सां, सां रें, सां, सां रें, पं, गं॒, रें,
सां, रें नि॒ ध॒ प, म प ध॒, ध॒, नि॒, ध॒, प, ध॒ म, रे म प
ध॒ म प, ग॒, सा रे प ग॒, रे, सा ।

तानें

(६) सा रे म ग॒ रे सा, सा रे म प म ग॒ रे सा, सा रे म प ध॒
प म ग॒ रे सा, सा रे म प नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा, सा रे म प
ध॒ सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा ।

(७) सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा, रें सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा, गं॒
रें सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा, सा रे म प ध॒ सां रें गं॒ रें सां
नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा ।

(८) म प नि॒ नि॒ ध॒ प म प ध॒ प म ग॒ रे सा, नि॒ सां रें रें सां
नि॒ ध प म प नि॒ नि॒ ध॒ प म प ध॒ प म ग॒ रे सा, सा रे
म प नि॒ नि॒ ध॒ प म प ध॒ सां रें रें सां नि॒ ध॒ प म प ध॒
सां रें मं गं॒ रें सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा ।

(९) नि॒ नि॒ ध॒ नि॒ नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा, रें रें सां रें सां नि॒ ध॒
प म ग॒ रे सा, मं मं गं॒ मं मं गं॒ रें सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा,
पं पं मं पं पं मं गं॒ रें सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा ।

(१०) सा रे म प ध॒ प म प नि नि॒ ध॒ प म प ध॒ सां सां नि॒ ध॒ प
म प ध॒ सां रें रें सां नि॒ ध॒ प म प ध॒ सां रें मं गं॒ रें सां
नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा ।

राग आसावरी–तेवरा ताल

स्थायी

म प सां ध॒ ध॒ प प | म प ध॒ ग॒ ग॒ रे सा |
१ ४ ६ १ ४ ६
ध॒ ध॒ ध॒ सा सा रे सा | ग॒ ग॒ ग॒ रे रे सा सा |
१ ४ ६ १ ४ ६
सा रे म प प ध॒ ध॒ | ध॒ ग॒ रें सां नी ध॒ प ||
१ ४ ६ १ ४ ६

अंतरा

म म म पप ध॒ ध॒ | सां सा सां नी सां सां सां | ध॒ ग॒ रें
१ ४ ६ १ ४ ६ १
सां सां नी सां | नी सां रें नी ध॒ प प | म प नी ध॒ प
४ ६ १ ४ ६ १ ४
म प म पध॒ ग॒ ग॒ रे सा ||
६ १ ४ ६

राग आसावरी–तीन ताल (मध्यलय)

राग लक्षण

कहत गुनी राग आसावरी, द्वितीय प्रहर दिन बुध जन संमत ।
मेल मधुर अति मृदुल ग-ध-नी युत, सुन्दर विलसत री ।।
पूर्ण थाट रचना मन भावत, ध-ग वादी संवादी संमत ।
आरोहन में ग-नी सुर वरजित, प-ग-ध त्रय रस राग बढ़ावतरी ।।

पं० खरे शास्त्री

स्थायी

नी म सा म म
म प सां ध प | ग रे सा रे म प ऽ सां
क ह त गु नी | रा . ग आ . सा . व
१३ १ ५

नी नी नी
ध प ध म प सां ध प | प सां नी सां ध ध प प
री . . क ह त गु नी | द्वि ती य प्र ह र दि न
+ १३ १ ५

म सा नीं
ग ग ग ग रे ऽ सा सा | धं ऽ धं धं सा सा रे सा
बु ध ज न सं . म त | मे . ल म धु र अ ति
+ १३ १ ५

नी नी
रे रे म म प प ध ध | ध गं रें सां नी सां सां रें नी सां
भृ दु ल ग ध नी यु त | सु . न्द र वि ल स . त .
+ १३ १ ५

नी नी म सा म म
ध प ध म प सां ध प | ग रे सा रे म प ऽ सां ||
री . . क ह त गु नी | रा . ग आ . सा . व ||
+ १३ १ ५

अन्तरा

नी
म ऽ प ध ऽ ध ध ध | सां ऽ सां सां रें नी सां सां
पू . र्ण था . ट र च | ना . म न भा . व त
+ १३ १ ५

नी नी नी
धधधऽ सांऽसांरें | सांरेंगरेंसांनींसांरेंसांधप
धगवा . दी . सं . | वा . . दी . सं . . मत
+ १३ १ ५

मऽमऽ पसांधप | गगगग रेरेसासा
आ . रो . हन में . | गनीसुर वरजित
+ १३ १ ५

सासारेऽ ममपप | धगरेंसांनी सांसांरेंनीसां
पगध . त्रयरस | रा . गवढ़ा . व . त .
+ १३ १ ५

नी नी
धपधम पसांधप ||
री . . क हतगुनी ||
+ १३

राग आसावरी–झपताल

सुमिर हो नाम को मन ही के मन में।
दीजिये दान गुरु साहेब माली ॥
सिंचिये बेल तन भाग मेरे को।
अमृत फल लगे हर हर डारी ॥

स्थायी

नी नी
धम पधसां धपम पमऽ |
सुमि रहो . ना . . मको . |
१ २ + ८

रेम	रेमपध्	मप ग् सारे	म ग्	(सा) रे सा ऽ
म	न . . .	. ही . .	कें म	न मे .
१		३	+	८

सा ऽ	(रे) रे म ऽ	(म) प ऽ	(नी) प ध् ध्
दी .	जिये .	दा .	न गु रु
१	३	+	८

(नी) ध् ऽ सां ऽ रें	सांरेंग् रेंसां	(नी म) नीसांरेंसां ध् प
सा . हे . ब	मा . . .	. . . लीं .
१ ३	+	८

अन्तरा

म ऽ	(नी) प ध् ऽ	(नी) सां ऽ	सां रेंनी सां
सिं .	चि ये .	बे .	ल त . न
१	३	+	८

(नी) ध् ऽ	सां ऽ रें	सांरेंग् ऽ	(सां) रें सां ऽ
भा .	ग . मे	रे . . .	को . .
१	३	+	८

नी नी	नी नी नी	नी सां नी	(नी) सां ध् म
अ मृ	त फ ल	ल गे .	. ह र
१	३	+	८

		नी				नी म
म प		ध् सां रें	सांरेंगं् रेंसां	नीसांरेंसां		ध् प ‖
ह र		डा . .	. . . . .	. . . .		री . ‖
१		३	—	८		

राग आसावरी—त्रि० ख्याल—झूमरा ताल

ख्याल

नेवरिया झांझरी, आन परी मँझधार ॥
ना कोऊ पीर मिले ना कोऊ संग न साथी
नाम लिये कर पार ॥

स्थायी

म सा		म ध्
ध्म पसां ध्प ग्रे मम	प ऽ प .	म ऽप ध् ऽ
नेव रि. या. झां. .झ	री . .	आ .न प .
११	१	४

नी सां		
ध् सां ऽ ऽ ऽ सां परें	रें ऽसां ऽ रेंरेंसां नीसां नीसां	
री . . . . . मंझ	धा	
+ ११	१ ४	

नी
रेंरेंसांनी सां ध् पध्नी ध् म ‖
. . . . . र . . . ने व ‖
+

अन्तरा

नी नी
ऽ म ध ध धसां ऽसां सांसां | सां ऽ ऽ ध सांरें सांरेंग ऽ
.ना कोऊ पी . . . र मि | ले . . ना कोऊ सं . . .
+ ११ १ ४

सां नी नी
रेंऽसां ऽरेंरेंसांनीसां नीसां रेंरेंसांनी सां | ध ऽप ऽ म ऽप धऽ
ग . न . सा . . . . | थी . . . ना . म ली .
+ ११ १ ४

नी नी
ध सां ऽ ऽ ऽ सां प रें | रें ऽ सां ऽ रें रें सां नी सां नी सां
ये . . . . . क र | पा . . . .
+ ११ १ ४

नी
रें रें सां नी सां ध प ध नी ध म ||
ऽ . . . . र . . . ने व ||
+

राग—आसावरी तीनताल (मध्यलय)

भोर भई मिलन भइलवा, मोरे मा पीतम ढिंगवा,
रास मंदिरवा बाजे मंजिरवा ॥ आवो गावो नाचो सब
सखियां सहेली, सदारंग गले लाग रहिलवा ॥

स्थायी

म
प म प सां ध ध प म | पध मप ग ऽ ऽ ऽ रे सा
भो र् भ ई मि ल न भ | ई . ल . वा . . . मो रे
+ १३ १ ५

नी प म
रे ऽ म ऽ प ऽ ध् ऽ | नी ऽ ध् प म प ग् ऽ
मा . . . . | पी . त म ढिं ग वा .
+ १३ १ ५

नी म
ऽ रे रे सा रे रें सा ऽ | सां सां ऽ सां सांनी सां ध् प ||
. रा स् मं दि र वा . | बा जे . मं दि . र वा . ||
+ १३ १ ५

अन्तरा

रें
म म म म प प ध् ध् | ध् ध् सां सां नी सां सां ऽ
आवो गा वो ना चो स ब | स खि यां स हे . ली .
+ १३ १ ५

सां नीम
प ग् ऽ ग् ऽ ग् रें सां | नीसां रेंग् रें सां नी सां ध् प ||
स दा . रं . ग ग ले | ला . . ग र हि ल वा . ||
+ १३ १ ५

राग आसावरी–तराना–तीनताल (मध्यलय)

ना दिर दिर दा नित दानि दीम तननन देरेना तन देरेना
तन देरेना दानि उदन दीम ततन नित्रोम् तोम ततन देरेना ॥
दीम दीम तोम तोम तननन देरेना नादिर दिर दिर तुंदिर दिरदिर
दिर दिर तन देरेना तन देरेना तन देरेना तन देरेना ॥

स्थायी

प सां नी सां नी ध् म प | नी ऽ ध् प ग् ग् सा रे
ना दिर दिर दा नि त दा नी | द्रीम् . त न न न दे .
+ १३ १ ५

म ऽ प ऽ ऽ ऽ ध् म | प नी ध् ऽ प ऽ ध् प
रे . ना . . . त न | दे रे ना . . . त न
+ १३ १ ५

म प ग् ऽ रे ऽ सा ऽ | सा सा सा रे म म प प
दे रे ना . दा . नी . | उ द नदीम् . त त न
+ १३ १ ५

मप ध् ऽ सां ऽ सां सां रें | सां रें गं रें सां नी ध् प म |
नि . त्रोम् . तोम् . त त न . | दे . . रे . ना . . . |
+ १३ १ ५

अन्तरा

म ऽ म ऽ प ऽ ध् ऽ | ध् ध् सां सां नी सां सां ऽ
दीम् . दीम् . तोम् . तोम् . | त न न न दे रे ना .
+ १३ १ ५

ध् ध् ध् ध् सां सां सां रें | रें गं रें सां नी सां ध् प
ना दिर्दिर्दिर्तुं दिर्दिर्दिर् | दिर्दिर् त न दे रे ना .
+ १३ १ ५

पं मं मं गं गं रें रें सां | सां रें मं गं गं रें रें सां
त . न . दे . रे . | ना . त . न . दे .
+ १३ १ ५

सां नी नी सां सां रें रें सां | सां नी नी ध् ध् प ध् म ||
रे . ना . त . न . | दे . रे . ना . . . ||
+ १३ १ ५

राग भैरव

यह भैरव थाट का आश्रय राग है। इसमें ऋषभ और धैवत कोमल लगते हैं। बाकि सब स्वर शुद्ध लगते हैं। जाति संपूर्ण-संपूर्ण। आरोह मे ऋषभ और अवरोह मे निषाद का प्रयोग अल्प है। वादी धैवत और संवादी ऋषभ। धैवत और ऋषभ आंदोलित होने से राग प्रकट होता है और रंजकता बढ़ती है।

ग
म रे॒ की मींड का प्रयोग भी आवश्यक है। राग का चलन मंद्र सप्तक मे अधिक है। कालिंगडा इससे मिलता जुलता राग है। गाने का समय प्रातःकाल का प्रथम प्रहर है।

आरोहः—सा रे॒ ग म प ध॒ नी सां।

अवरोहः—सां नी ध॒ प म ग रे॒ सा।

                                   ग
पकडः—ग म ध॒ ध॒ प, ग म रे॒ रे॒ सा।

आलाप

   निं निं   ग
(१) सा, धं॒, धं॒, सा, धं॒, निं सा रे॒, सा ग, ग म रे॒, रे॒ सा

          ग   ग
(२) सा ग, ग म, रे॒, रे॒, ग म प, म, ग म रे॒, रे॒, ग म प, प, म, म, ग म रे॒, रे॒, रे॒, सा, धं॒ सा।

(३) निं सा ग म प, प, ग म प, ग म ध॒, ध॒, प, प म, ग म ग रे॒, रे॒, ग म प, म ग म, रे॒, ध॒, प ध॒, म प, ग म, रे॒, रे॒ ग, प म, ग म रे॒, रे॒ सा।

(४) ग म ध॒, ध॒, प, ग म ध॒, सां, नि ध॒, प, ध॒ प, म प, ध॒ प, म प, म, ग म प म ग रे॒, रे॒, ग म प, म ग म, ग रे॒, रे॒, सा।

(५) सा रे॒ ग म ध॒, नि सां, ध॒ नि सां रें॒, सां, नि सां रें॒, मं, मं गं रें॒, रें॒, सां, नि सां, सां नि ध॒, ध॒ प, ग म ध॒, नि सां, नि ध॒, प, ग म ध॒, प, म प म, ग म रे॒, सा रे ग म ध॒ नि सां, सां, नि ध॒, प म, ग म, ग रे॒, रे॒, सा, निं सा।

तानें

(६) सा रे॒ सा, सा रे॒ ग रे॒ सा, सा रे॒ ग म ग रे॒ सा, सा रे॒ ग म प म ग रे॒ सा, सा रे॒ ग म प ध॒ प म ग रे॒ सा, सा रे॒ ग म प ध॒ नि सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा।

(७) ग म प म ग रे॒ सा, ग म प ध॒ प म ग म प म ग रे॒ सा ग म प ध॒ नि ध॒ प म ग म प ध॒ प म ग म प म ग रे॒ सा ग म प ध॒ नि सां नि ध॒ प म ग म प ध॒ नि ध॒ प म ग म प ध॒ प म ग म प म ग रे॒ सा।

(८) सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा, सां नि ध॒ नि सां रें॒ सां नि ध॒ नि सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा, गं रें॒ सां रें॒ सां नि ध॒ नि सां नि ध॒ नि ध॒ प म ग रे॒ सा, मं गं रें॒ गं मं गं रें॒ गं रें॒ सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा।

(९) सा रे् ग म प ध् ध् प म ग रे् सा, सा रे् ग म प ध् नि नि ध् प म ग रे् सा, सा रे् ग म प ध् नि सां रें् रें् सां नि ध् प म ग रे् सा, सा रे् ग म प ध् नि सां सां रें् गं गं रें् सां नि ध् प म ग रे् सा, सा रे् ग म प ध् सां सां रें् गं मं पं पं मं गं रें् सां नि ध् प म ग रे् सा।

(१०) प प म प प म ग रे् सा, ध् ध् प ध् ध् प म ग रे् सा, नि नि ध् नि नि ध् प म ग रे् सा, रें् रें् सां रें् रें् सां नि ध् प म ग रे् सा, गं गं रें् गं गं रें् सां नि ध् प म ग रे् सा, पं पं मं पं पं मं गं रें् सां नि ध् प म ग रे् सा, सा रे् ग म प, ग म प ध् नि, प ध् नि सां रें् सां रें् गं मं पं पं मं गं रें् सां नि ध् प म ग रे् सा।

राग भैरव—झपताल

ध् ध् प म प ग म रे् रे् सा | ध् ध् नीं सा सा ग म
१ ३ + ८ १ ३ +

रे् रे् सा | नीं सा ग म प ग म ध् नी सां | सां नी ध्
८ १ ३ + ८ १ ३

प म ग म रे् रे् सा ||
+ ८

अंतरा

ग म ध् ध् नी सां सां रें् रें् सां | ध् ध् नी सां रें् गं
१ ३ + ८ १ ३ +

म॑ रे॒ रे॒ सां | सां नी ध॒ प म ग म ध॒ नी सां | सां नी
८ १ ३ + ८ १

ध॒ प म ग म रे॒ रे॒ सा ||
३ + ८

राग भैरव—तेवरा ताल

राग लक्षण

प्रथम भैरव राग गावत, रि ध मृदुल युत सप्त सुरसों।
प्रात सुसमय गुनिहि सम्मत, रूप रस अनुहार जो॥
वादी धैवत ऋषभ सहचर, अल्प नी अवरोह में।
अरु छिपत संतत नवल सुन्दर रुचिर री आरोह में॥

पं० खरे शास्त्री

स्थायी

नी नी

ध॒ ध॒ प	म प	म ग	म प म	रे॒ ऽ	सा सा
प्र थ म	भै .	र व	रा . ग	गा .	व त
१	४	६	१	४	६

ग

ध॒ ध॒ नीं	सा सा	रे॒ सा	म प म	रे॒ रे॒	सा ऽ
रि ध मृ	दु ल	यु त	स . प्त	सु र	सो .
१	४	६	१	४	६

नीं सा सा	ग म	म म	प प प	ध॒ ध॒	प प
प्रा . त	सु स	म य	गु नी ही	सं .	म त
१	४	६	१	४	६

धु नी सां रें सां नी सां | नी सां नी धु प धु म ||
रू . प र स अ नु | हा . र जो . . . ||
१ ४ ६ १ ४ ६

अन्तरा

नी
म ऽ म धु ऽ धु धु | रें रें सां नी सां सां सां
वा . दी धै . व त | रि ष भ स ह च र
१ ४ ६ १ ४ ६

नी नी
धु ऽ ध नी ऽ सां रें | सां नी सां नी धु ऽ धु धु |
अ . ल्प नी . अ व | रो . . ह मे . अ रु |
१ ४ ६ १ ४ ६

नी
रें रें सां नी सां सां सां | रें सां नी धु ऽ प प |
छि प त सं . त त | न व ल सं . द र |
१ ४ ६ १ ४ ६

ग ग
ग म ग रे ऽ ग म प | म ग रे सा रे ग म प ||
रु चि र री . आ . . | री . . ह मे . . . ||
१ ४ ६ १ ४ ६

राग भैरव—चारताल

प्रथम आद नाद ब्रह्म जो जासो भयो है सब ही विस्तार।
शव्द पवन अग्नि पानि धरत्री माया माई सृष्टी रची करतार॥

स्थायी

म
ग म म प प |
प्र . थ म . |
९ ११

नी नी म प म
ध् ध् प म प म ग ग रे् ग प म | म ऽ ग रे् ऽ सा
आ . . . . द . ना . . . द | अं . . . . म्ह
१ + ५ + ९ ११ १ + ५

नीं नीं नीं
सा रे् ऽ सा सा धं् | धं् सा ऽ ऽ सा सा ऽ रे् ग म प ऽ |
. जो . जा . सो | भ यो . . . है . स ब ही . . |
+ ९ ११ १ + ५ + ९ ११

नीं
म ऽ म रे् ऽ सा सा ||
वी . . स्ता . र . ||
१ + ५ +

अंतरा

नी नी
म धू ऽ नी सां सां सां ऽ सां नी सां सां | सां ध् ध् सां
श ब्द . प व न अ . ग्नि पा . नी | ध र . त्री
१ + ५ + ९ ११ १ +

नी नी नी नी नी नी
ऽ रें ऽ सां सां ध् ध् प | म ऽ प ऽ ध् ध् ध् सां
. मा . या . मा . इ | सृ . ष्टी . र . . ची
५ + ९ ११ १ + ५ +

नी नी   प म   नीं
ऽ ध॒ ध॒ प | ग म ग रे॒ ऽ सा सा ||
. क . र | ता . . . . र .
९ ११ १ + ५ ÷

राग भैरव—तिलवाड़ा (त्रि० ख्याल)

वालमुवा मोरे सैंया सदा रंगीले ॥
हूँ तो तुम विन तरस गई लो दरशन वेग वतावो लेहूँ वलैया ॥

स्थायी

म   म
ग म म प प | ध॒ ऽ ऽ ऽ प ऽ ऽ ऽ
बा . ल मु . | वा . . . .
१३ १ ५

ग
ध॒ ध॒ प म प ऽ म ऽ ग ऽ | म ऽ ऽ ग प म ग रे॒ ऽ ऽ
मो . . . . . रे . . . | सैं . . . .
+ १३ १ ५

नी
सा ऽ ऽ ऽ ग म ध॒ ऽ ध॒ | सां ऽ सां ऽ ध॒ ऽ ऽ ऽ
या . . . स . दा . रं | गी . . . ले . . .
+ १३ १ ५

म
प ऽ प ||
. . . ||
+

अंतरा

								म	ऽ	म	ऽ	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒
								हूँ	.	तो	.	तु	म	वि	न
								१				५			
ध॒	ध॒	सां	सां	नी	सां	सां	ऽ	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	नी	सां	सां	सां
त	र	स	ग	ई	.	ली	.	द	र	श	न	बे	.	ग	व
+				१३				१				५			

									म										
ध॒	नी	सां	रें॒	ध॒	ऽ	ऽ	ऽ	प	प	म	ऽ	ऽ	प	म	म	रे॒	ऽ	ऽ
ता	.	.	.	बो	.	.	.	ले	.	हूँ	.	.	ब	लै	.	.	.	.
+						१३				१				५				

	नीं	
सा	ऽ	सा
या	.	.
+		

राग भैरव—एकताल (द्रुतलय)

जागिये रघुनाथ कुँवर, पन्छी वन बोले ॥
चंद्र किरन सीतल भई, चकई पिय मिलन गई ।
त्रिविध मन्द चलत पवन, पल्लव द्रुम डोले ॥
प्रात भानु प्रगट भयो, रजनी को तिमिर गयो ।
भृंग करत गुंज गान, कमलन दल खोले ॥
ब्रह्मादिक धरत ध्यान, सुर-नर-मुनि करत गान ।
जागन की बेर भई, नयन पलक खोले ॥
तुलसिदास अति अनंद निरखि के मुखारविंद ।
दीनन को देत दान, भूषन बहु मोले ॥

स्थायी

	ग				
मपगम	रे॒ रे॒	सा सा	रे॒ ऽ	रे॒ रे॒	सा सा
जा	गि ये	र घु	ना ·	थ कुं	व र
१	+	५	+	९	११

सा रे॒	ग म	प प	ग म रे॒	ग म	ग म प
पं ·	छी ·	व न	बो · ·	ले ·	· · ·
१	+	५	+	९	११

अन्तरा

	नी				
म ऽ	म ध॒	ध॒ ध॒	नी सां	सां सां	गं सां
चं ·	द्र कि	र न	सी ·	न ल	भ ई
१	+	५	+	९	११

नी					
ध॒ ध॒	नी सां	रें॒ सां	नी सां	रें॒ सां नी	ध॒ प
च क	ई ·	पि य	मि ल	न · ग	ई ·
१	+	५	+	९	११

प ध॒	नी रें॒	सां सां	नी सां	नी ध॒	प प
त्रिवि	ध सं	· द	च ल	त प	व न
१	+	५	+	९	११

म ध॒	प ध॒	म प	ग म रे॒	ग म	ग म प
प ·	ल्लव	द्रुम	डो · ·	ले ·	· · ·
१	+	५	+	९	११

राग भैरव–तीन ताल (मध्यलय)

जागो मोहन प्यारे, साँवली सुरत मोरे मनहिं भावै ।
सुन्दर श्याम हमारे ॥ ध्रु० ॥ प्रात समय उठ भानु उदय भये,
ग्वाल बाल सब भूपति आये तुम्हरे दरस के काज ठाड़े ।
उठि उठि नन्द किशोरे ॥

स्थायी

नी
ग म ध ऽ प ऽ ध म | म प ध प म प म ऽ ग ऽ
जा . गो . मो . ह न | प्या . . . . . रे . . .
+ १३ | १ ५

ग म ग रे ग म प प | म ग म ग रे ऽ सा ऽ
साँव ली सु र त मो रे | म न ही . भा . वै .
+ १३ | १ ५

सा रे ग म प ऽ प ध | प ध नी सां नी सां ध प ध प म ||
सं . द र श्या . म ह | मा . . . . . रे . . . . ||
+ १३ | १ ५

अन्तरा

म ऽ म म प प ध ध | प ध सां नी सां सां सां सां
प्रा . त स म य उ ठ | भा . नु उ द य भ ये
+ १३ | १ ५

ध ऽ ध नी सां सां सां सां | नीसां रें सां नीसां रें सां ध प
ग्वा . ल बा . ल स ब | भू . प ती आ . . . ये .
+ १३ | १ ५

प ध॒ प म ग म ग म प | म ग म ग रे॒ ऽ सा ऽ
तुम्ह रे द र स के . . | का . . ज ठा . डे .
\+ १३ १ ५

नी
सा रे॒ ग म प ऽ प ध॒ | पध॒ नीसां नीसां ध॒ प ध॒ प म ||
ड ठि ड टि नं . द कि | शा . . . . रे . . . . ||
\+ १३ १ ५

राग कालिंगडा

यह राग भैरव थाट का है। इसमें रे और ध कोमल लगते हैं। जाति संपूर्ण है। इस में ऋषभ और धैवत पर आंदोलन नहीं होता है क्योंकि ऐसा करने पर इसे भैरव से बचाना कठिन हो जाता है। इसमें आलाप विलंबित भाव से नहीं किए जाते। आरोहावरोह स्वरूप वक्र रक्खा जाता है। आलाप की समाप्ति पर गंधार पर न्यास करते हैं। "पध्‌ पध्‌ मप ध्‌प मग, रे्‌सा", "ध्‌निसारें निसां निसारें सांनिध्‌प" इन स्वर समुदायों में राग प्रकट होता है। परज इसके बहुत ही निकट का राग है। इन दोनों रागों का मिश्रण करने का प्रचार है। कालिंगड़े में कोमल निषाद और तीव्र मध्यम का विवादी प्रयोग देखा जाता है। इसका वादी स्वर पंचम और संवादी षड्ज है। कुछ लोग धैवत-गंधार संवाद मानते हैं। गाने का समय रात्रि का अंतिम प्रहर है।

आरोह :—सारे्‌गमप, गमपध्‌निसां।
अवरोह:—सांनिध्‌प, मपध्‌पमग, मगरे्‌सा।
पकड :—पध्‌मपगमप, ध्‌प।

आलाप

(१) सारे्‌ग, मगप, ध्‌मप, पध्‌मप, गमग, गम ग, रे्‌सा।

(२) सारे्गमप, गमपध्प, ध्पध्मप, मपध्पमग, रे्म गप, मपमध्प, मपमपध्पमग, रे्मगप मध्प ध्मप, मपध्प मग, रे्गमग, रे्सा ।

म

(३) ध्पध्मप, मपध्पमग, गमपध्प, पध्नीध्प, पध्निसां निध्प, ध्पध्मप, मप मपध्पमग, रे्मगपमध्पध्मप मपध्पमग, रे्गमग, रे्सा, गमपध्प ।

(४) पध्पध्निसां, रें्सांरें्निसां, निध्प, ध्निसांरें्सांनिध्प, मप-ध्प, रे्मगप, मध्पध्मप, पध्निसांरें्निसां, सांनिध्प, मपध्पमग, रे्गमग, रे्सा, गमपध्प ।

(५) पध्पधे्निसां, गमपध्निसां, ध्निरें्सां, रें्सांरें्निसां, सांरें्गं, मंगं, गंमंगंपंमंगं, रें्सां, ध्निसांरें्सां, सांनिध्प पध्मप, मपध्पमग, गमपध्मप, गमगप, मगरे्गरे् गमपध्प ।

तानें

(१) सारे् गरे्सा, सारे्गमपप मगरे्सा, सारे्गमपप ध्पमपध्प म ग रे् सा, सारे् गमपध्नि ध् पपमपध् पमगरे्सा, सारे्-गम पध् निसां निध्पप ध्निध्प मपध्पमगरे्सा, गमपध्प ।

(२) सारे् गमग, गमपध्पमग, गमपध् निध्पपमपध्पमग, गमपध् निसां निध्पप मपध् पमग, गमपध् मप ध्पप ध्प मग गमप गम पमग रे् सा ।

(३) पध् निसां रें्सांरें्निसां, गमपध् निसांरें्गंरें्सां, सांरें् सांनि-ध्प गम पध्नि सां गं मं गंरें् सांनिध्प, पध्निसां निध्पप, मपध्प म ग, गमपध्मप ध्पमग रे्सा, गमपध्पध्मप ।

(४) ध्पमप गमपग मगरे्सा, निध्पप ध्पमप गमपग मगरे्सा,

सारें सांनिध् पप मपध् पप ध् पमग, गमपग मगरे् सा, सारें् गंमं पंगंमंगंरें सां निध्पप मपध् प गम गपपमगरे् सा ।

(५) ध् प मपध् प गप मग रे् गरे् सा, निनिध्प मध्पप गपमग रे् ग रे् सा, सांरें सांनि ध्सांनिध् पनिध्प मध्पम गपमग रे् ग रे् सा, गं गं रें् सां, सांरें् सांनि ध्सांनिध् पनिध्पप मपध्प म ग रे् सा ।

राग कालिंगडा–तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

स्थायी

पध् मप गम प | ध् पध्म ऽपमग गपमग रे् सासारें | गमपध्
\+ १३ १ ५ + १३ १
नि सां निध् ||
५

अंतरा

पंध् पध् नि नि सां | सां रें् गं रें् सां नि सां ध्रें् सां निध्प |
\+ १३ १ ५ + १३
सां नि ध् पम गम ||
१ ५

राग- कालिंगड़ा-तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

मन भावत राग कलिंग सुनी, तुरिय यामसु जो है सुखकर, गावत कोई नित दिन रजनी ॥ उज्वल पंचम रि-ध मृदु सोहत, ध-ग वादी संवादी संमत्त, संपूरन रूप गात गुनी ॥ खरे शास्त्री

स्थायी

प प धृ प म ग ग म प धृ | धृ ऽ धृ धृ प ऽ ग
म न भा ऽ व त रा ऽ ग क | लिं ऽ ग सु नी ऽ तु
+ १३ १ ५ +

ग ग रे ग म प ऽ | ग प म ग रे रे सा सा सा रे
रि य या ऽ म सु ऽ | जौ ऽ है ऽ सु ख क र गा ऽ
१३ १ ५ +

ग म प धृ प धृ | नि सां नि धृ प ऽ ||
व त को ई नि त | दि न र ज नी ऽ ||
१३ १ ५

अंतरा

धृ प धृ नी सां सां सां | नी रें सां रें नी ऽ सां सां
उ ज्व ल पं ऽ च म | रि ध मृ दु सो ऽ ह त
१३ १ ५

प धृ प धृ नी सां सां | नी रें सां रें नी ऽ सां सां
ध ग वा ऽ दी ऽ सं | वा ऽ दी ऽ सं ऽ म त
+ १३ १ ५

धृ धृ प धृ प धृ | प धृ नी सां नी धृ प ||
सं पू र न रु प | गा ऽ ऽ ऽ त गु नी ||
+ १३ १ ५

राग कालिंगडा—एकताल (मध्य)

गावत सखी मधुर गान, उठि सुंदर कुंवर कान्ह, भइ प्रभात मन भावन, जावहू वन लै गैयन ।। तुम बिन नहीं चरत धेनु, जब बाजत मधुर बेनु, हरखत तृण खात हरित, प्रीत हृदय बहुत मान ।।

—व्यास कृति

स्थायी

सां नी ध प ध म प ग म पप | मध पध मप ग पम गरे सासा |
गा व त स खी म धु र गा . न | उ ठि स . द र कु व . र का . न्ह |
१ + ५ + ९ ११ १ + ५ + ९ ११

सासा मम गम पध मपध प मगम | ग म पध नीसां सांरें
भइ प्रभा त मन भा . . . व . न | जा . वहू व न लैं .
१ + ५ + ९ ११ १ + ५ +

सांनी ध नी ध प मगम ||
. . गै . . . य . न ||
९ ११

अंतरा

पध पध नीसां सांरें सांरें नीसां | नीनी सांरें नीसां नीसां
तुम बिन न हि च र त धे . नु | ज ब वा . ज त म धु
१ + ५ + ९ ११ १ + ५ +

नीधपप | मध पध मप गम गरे सासा | गम पध नीसां सांरें
र बे नु | हर खत तृण खा . तह रि त | प्री . त हृ द य मा .
९ ११ १ + ५ + ९ ११ १ + ५ +

सांनी ध नीध प मगम ||
. . नी . . . . . . ||
९ ११

राग कालिंगड़ा—झपताल

काहे सजत अंग, नाही मोहन संग, कैसो केसर रंग, डफ झांज मृदंग ॥ जमुना गवाँलन, गये छाँड़ गौवन, अब कौन मधुबन, येरी रास खेलन ॥

—व्यास कृति

स्थायी

सां नी सां धृ प धृ म प ग म प | म धृ प धृ प
का ॰ ॰ हे ॰ स ज त अं ॰ ग | ना ॰ ही ॰ मो
१ ३ + ८ | १ ३

म प म ग रे सा सा | सा रे ग म प धृ प प |
हे ॰ न ॰ सं ॰ ग | कै ॰ सो के स र रं ग |
+ ८ | १ ३ + ८

प धृ नी सां रें सां रें सां नी धृ प म प धृ ||
ढ फ भां ॰ ज मि ॰ र ॰ ढं ॰ ॰ ग ॰ ||
१ ३ + ८

अन्तरा

प धृ प धृ नी सां सां | सां रें सां रें सां नी सां
ज मु ना ग वाँ ल न | ग ये छां ड़ गौ ॰ ॰
१ ३ + ८ | १ ३ +

धृ प म प | धृ प ग म म प धृ प धृ | सां रें
व ॰ ॰ न | अ ब कौ ॰ न म धु ब न | ये ॰
८ | १ ३ + ८ | १

सां नी धृ प म प धृ सां नी धृ प म ग रे
री ॰ रा ॰ ॰ स ॰ खे ॰ ॰ ॰ ल ॰ ॰
३ + ८

सा नीं सा ||
॰ न ॰ ||
१२

राग कालिंगडा—तीनताल (मध्यलय)

अरे मन मान काहे करे। सुमरि सुमरि हरिनाम ॥
जेहि सुमिरन से पाप नसत है। पावन परम ललाम ॥

श्री विनय चंद्र कृत
(वि० ना० पटवर्धन कृत राग-विज्ञान)

स्थायी

म
प म प ध प ग म | प प ध प म प ध प म ग ऽ
अ रे . . . म न | मा न का . हे . . . क रे
१३ | १ ५ +

प
ग म ग रे | सा सा ग म ग म प ध नी रें सां नी ध
सु मि र सु | मि र ह रि ना . . . . . म . .
१३ | १ ५ +

प म ग रे सा ||
. . . . . ||

अंतरा

नि
म म म म प प ध सां सां सां नी रें सां | सां रें मं गं
जे हि सु मि र न से पा प न स त है | पा . . .
१ ५ + १३ | १

रें सां नी रें सां नी ध प ग प म ग रे सा ||
व न प . र . म ल ला . . . म . ||
५ +

राग–कालिंगडा–तीनताल (मध्यलय)

मूरख छांड वृथा अभिमान । औसर बीत चल्यो है तेरो । दो दिन को मेहमान ॥ भूप अनेक भये पृथवी पर रूप तेज बलवान । कौन बच्यो या काल व्याल ते मिट गये नाम निशान ॥

नारायण स्वामी कृत
(वि० ना० पटवर्धन कृत राग–विज्ञान)

स्थायी

' ध् प म ग मपप | ध् पध् म प म ग ' गम रे ग म प प |
मू . र ख छां . डवृ | था अभि मा . . न औस र वी . त च |
+ १३ | १ ५ + १३

प ग
ग म ग म प म रे सा ' सारे गम प गम | गमपध् नीसां
लो . है . . . ते रो दो . दिन को मेह | मा . . . .
१ ५ + १३ | १

ऽ नी ध्पम ग ||
. . . . . न ||
५

अन्तरा

नी
म म म प ध् ध् | नी सां सां नीरें सांसां ध् ध् नी सांसां
भू प अ ने क भ | ये पृ थ वी . प र रू प ते . ज
+ १३ | १ ५ + १३

नि

सां सां | रें सां नी सां रें सां धप ' धपध मपगम | गम पम ग

ब ल | वा. . . . . न. कोनब च्यो . या . | का . . लव्या

१ ५ + १३ १

म ग रे सा सारे ग म प पप | ग मपध नी सां ऽ नी धपमग ||

. ल से . मिट ग ये नासनि | शा . . . . न ||

५ + १३ १ ५

राग भैरवी

यह भैरवी थाट का आश्रय राग है। इस राग में ऋषभ, गंधार, धैवत और निषाद कोमल लगते हैं। बाकी सब स्वर शुद्ध। जाति संपूर्ण-संपूर्ण। राग की सुंदरता बढ़ाने के लिए कभी कभी रे शुद्ध और तीव्र मध्यम का प्रयोग किया जाता है। वादी स्वर पंचम और संवादी षड्ज। कुछ लोग मध्यम वादी मानते हैं। गाने का समय प्रातःकाल है। कुछ लोग इसे सार्वकालिक मानते हैं। महफिल के समाप्ति के समय इसे गाने का प्रघात है। कुछ कुशल गायक इसमें बारहों स्वरों का प्रयोग राग स्वरूप कायम रखते हुए करते हैं। इस राग में अधिकतर छोटे ख्याल, भजन, होरी, ठुमरी आदि गाये जाते हैं।

आरोह :—नि़् सा ग् म पध्नि़सां, या सारे् ग्मपध् नी् सां।

अवरोह :—सां नि़ध् प मग् रे् सा।

पकड :—ध् प, ग् म ग् रे् सा।

आलाप

(१) सा, निं् सा, धं् निं् सा, सा रे्, सा, ग् रे् सा, सा रे् ग् म, ग्, रे्, सा नि् धं् निं् सा।

(२) निं् सा ग् रे, ग् रे् सा, सा ग् म, म ग्, रे् सा, निं् सा ग् म प, ग् म ग् प, प म, ग् म ग् रे, ग् रे् सा।

(३) निं़ सा ग॒ म प, ग॒ म प ध॒, प, ग॒ म प ध॒ नि॒, ध॒ प, ग॒ प ध॒ नि॒, ध॒ प, ध॒, प म, ग॒ प, म, ग॒ रे॒, ग॒ रे॒, सा ।

(४) निं॒ सा ग॒ म प ध॒ नि॒ सां, ध॒ नि॒ ध॒ सां, सां नि॒ रें॒, सां नी ध॒ सां, ध॒ नी सां रें गं॒, गं॒ रें, गं॒ रें सां, नी सां रें॒ सां, सां नी ध॒ प, ग॒ म, ग॒ प, म ध॒, प नी, ध॒ प, ग॒ म प ध॒, प म, म ग॒, रे॒ सा, धं॒ निं॒ सा ग॒, रे॒, सा ।

(५) ग॒ म ध॒ नि॒ सां, नि॒ रें॒ सां, ध॒ नि॒ सां रें गं॒, गं॒ रें॒, रें॒, रें॒, सां, सां, गं॒ मं, गं॒ मं गं॒ पं, पं मं गं॒ रें, गं॒ रें॒ सां, सां, नि॒ रें॒, सां नि॒ ध॒ प, प ध॒ सां नि॒ ध॒ प, नि॒, ध॒ प, ध॒, प म, प, म ग॒, म, ग॒ रे॒, ग॒, रे॒ सा, धं॒ निं॒ धं॒ सा ।

तानें

(६) निं॒ सा ग॒ रे॒ सा, निं॒ सा ग॒ म ग॒ रे॒ सा, निं सा ग॒ म प म ग॒ रे॒ सा, निं॒ सा ग॒ म प ध॒ प म ग॒ रे॒ सा, निं॒ सा ग॒ म प ध॒ नि॒ ध प म ग॒ रे॒ सा, निं॒ सा ग॒ म प ध॒ नि॒ सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे॒ सा ।

(७) सां, सां नि॒ ध॒ नि॒ सां, सां नि॒ ध॒ नि॒ सां रें॒ सां, सां नि॒, ध॒ नि॒ सां रें॒ गं॒ रें॒ सां, सां रें॒ गं॒ मं गं॒ रें॒ सां नि॒ ध प म ग॒ रे॒ सा ।

(८) निं॒ सा ग॒ म प ग॒ म प ध॒ प म ग॒ रे॒ सा, निं॒ सा ग॒ म प ग॒ म प नि॒ ध॒ प म ग॒ रे॒ सा, निं॒ सा ग॒ म प ध॒ नि॒ सां ध॒ नि॒ सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे॒ सा, निं॒ सा ग॒ म ध॒ नि॒ सां ध॒ नि॒ सां रें॒ सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे॒ सा ।

(९) ग् म प ग् म प ग् म प नि् ध् प म ग् रे् सा, ध् नि् सां ध् नि् सां ध् नि् सां रें्, सां नि् ध् प म ग् रे् सा, सां रें् गं् सां रें् गं् सां रें् गं् मं गं् रें् सां नि् ध् प म ग् रे् सा ।

(१०) प प म प प म ग् रे् सा, नि् नि् ध् नि् नि् ध् प म ग् रे् सा, सां सां नि् सां सां नि् ध् प म ग् रे् सा, गं् गं् सां गं् गं् सां नि् ध् प म ग् रे् सा, मं मं गं् मं मं गं् रें् सां नि् ध् प म ग् रे् सा, पं पं मं पं पं मं गं् रें् सां नि् ध् प म ग् रे् सा, निं् सा ग् म प ध् नि् सां नि् सां गं् मं पं पं मं गं् रें् सां नि् ध् प म ग् रे् सा ।

राग भैरवी—तीनताल

स्थायी

नी्सा ग्म | ध्पऽनी् ध्प मप ग्मध्प नी्ध्सानी् | ध्पमप
१३   १   ५   +   १३   १

ग्म ध्प मग्रे्सा ||
५   +

अंतरा

सां ऽ सां ऽ सांनी्ध्नी् सांरें्सांनी् ध्नी्सांऽ | गं्ऽरें्सां
१   ५   +   १३   १

ऽमंगं्ऽरें्सांऽनी् ध्ऽनी्प | ऽ ध्म ऽ प ग् ऽ म ग् रे् साऽ
५   +   १३   १   ५   +

नी्सा ग्म | पध्नी्सां सांनी्ध्प मग्रे्सा ||
१३   १   ५   +

राग भैरवी—झपताल

राग लक्षण

जयति जय रागिनी, भैरवी नामिनी ।
भक्ति रस पूरिनी, प्रात गुन गावनी ॥
सप्त सुर रूपिनी, सकल मृदु स्वैरिनी ।
षड्ज संवादिनी, पंचम सुवादिनी ॥

पं० खरे शास्त्री

स्थायी

नी म सां
प प | प प प | प ध् प ग् म | प ध् | नी ध् प म ग्
ज य | ति ज य | रा ऽ गी नी ऽ | भै ऽ | र वी ऽ ऽ ऽ
१ ३ + ८ १ ३

ग्
रे ग् | रे् सा ऽ | ग् ऽ | ग् ग् ग् | ग् म प | म ग्
ना ऽ | मी नी ऽ | भ ऽ | क्ति र स | पू ऽ ऽ | रि नी
+ ८ १ ३ + ८

ग् सा ग्
रे ग् | सा रे् | नीं सा सा | सा ग् म प | ध् म रे् सा ||
ऽ ऽ | प्रा ऽ | त गु न | गा ऽ ऽ ऽ | ऽ व नी ऽ ||
१ ३ + ८

अंतरा

ध् ऽ | म ध् नी | ध् नि् सां | रें् सां ऽ | नी नी | नि् सां
स ऽ | प्त सु र | रू ऽ ऽ | पि नी ऽ | स क | ल मृ
१ ३ + ८ १ ३

नी̣ ग॒
सां नी̣ सां नी̣ सां रें॒ सां ध॒ प | ग॒ ग॒ ग॒ ग॒ ऽ सां रें॒
दु स्वै . . . . री नी . | प ड़् ज सं . वा .
+ ८ १ ३ +

नी̣ सां
सां ध॒ प | प ध॒ नी̣ ध॒ प म ग॒ रे॒ ग॒ रे॒ सा ऽ ||
दि नी . | पं . च म सु . वा . . दि नी . ||
८ १ ३ + ८

राग भैरवी—रूपक ताल

मत कर मोह तूं हरि भजन को मान रे ॥
नैन दिये दरसन करने को, श्रवण दिये सुन ग्यान रे ॥
वदन दिया हरि गुण गाने को, हाथ दिये कर दान रे ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो कंचन निपजत खान रे ॥

स्थायी

सां
प प प प प ऽ ध | म प म ध॒ प ध॒ नी̣ | ध॒ प म ग॒
म त क र मो . ह | तू . . . . . . | ह रि . भ
१ ४ ६ १ ४ ६ १

सा रे॒ सा रे॒ ग॒ म | ग॒ रे॒ ग॒ रे॒ सा ऽ ऽ ऽ ||
ज न को . . . | मा . . न ले . . . ||
४ ६ १ ४ ६

अंतरा

ध॒ ऽ म ध॒ ध॒ नी̣ नी | सां सां सां सां नि॒ सां रें॒ सां |
नै . न दि ये द र | श न क र ने . . को |
१ ४ ६ १ ४ ६

नी नी नी सां सां सां सां | नी सां रें सां नी ध ऽ प ऽ ||
श्र व ण दि ये सु न | ग्या . . न . रे . . . ||
१ ४ ६ १ ४ ६

राग भैरवी—तीनताल (मध्यलय)

जोगी मत जा मत जा मत जा, पाँव परूँ मैं तेरी ॥
प्रेम भक्ति को पेडोंहि न्यारो, हमको गैल बता जा ॥
अगर चंदन की चिता रचाऊँ, अपने हाथ जला जा ॥
जल बल भई भस्म की ढेरी, अपने अंग लगा जा ॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, ज्योत में ज्योत मिला जा ॥

स्वरकार—वि० ना० पटवर्धन

स्थायी

नि

गम मग रे सा सा रे ग ऽ म म ध ऽ नी नी |
जो. . . गी . म त जा . म त जा . म त |
५ + १३

सां ऽ ऽ ऽ गं ऽ गं गं गं रें गं रें सां धनी सांरें
जा . . . पाँ . व प रूँ . . मैं . ते. . .
१ ५ + १३

सांनी धप | मग रेसा ||
री . . . | . . . ||
१

अन्तरा

नी

ग ऽ ग म ऽ म ध नी सां ऽ सां सां नीसां रें सां ऽ |
प्रे . म भ . क्ति को . पे . डों ही न्या. . रो . |
१ ५ + १३

गं गं गं ऽ गं रें गं सां रें सां ऽ धनी सांरें
ह म को . गै . . ल ब ता . जा . . .
१ ५ +

गं मं गं रें सांनी ध प | म ग रे सा ||
. . . . | . . . .
१३ १

राग भैरवी—तीन ताल (मध्यलय)

सरस्वती शारदा विद्या दानी दयानी दुःख हरनी जगत
जननी ज्वालामुखी माता ॥ कीजे सुदृष्टी सेवक जान
आपनो इतनो कर वच दीजे तान ताल कर सुहाग
बुध अलंकार ॥

स्थायी

म ग रे सा ऽ नीं सा सा | ध ऽ प ऽ प ऽ पध नीसां
स र स्व ती . शा . र | दा . . . वि . द्या . . .
+ १३ | १ ५

म म
धप ग ऽ म मप धनी ध | प ग ऽ म ग रे सा ऽ
दा.नी . द या. . . नी | . दु . ख ह र नी .
+ १३ | १ ५

म
नीं सा ग म प प पनी धप | ग ऽ ग म ऽ ग रे सा ||
ज ग त ज न नी ज्वा. . . | ला . मु खी . मा . ता ||
+ १३ | १ ५

अंतरा

प ऽ ध ऽ नी सां ऽ सां
की जे सु दृ ष्टी
१ ५

नी नी सां गं ऽ मं गं रें | सां ऽ नी सां नी सां गं
से व क जा न आ प | नो इ त नो
+ १३ १ ५

रें सां प ध प म ग रे सा प ध | प म म म रे ग
क र ब च दी जे ता | न ता ल क र
+ १३ १ ५

म ग रे सा प प ध प ऽ ऽ | प ध नी सां नी ध
सु हा ग बु ध आ लं | का
+ १३ १

प म ग रे सा नीं सा ऽ ||
र
५

राग भैरवी—ताल केहरवा

बीत गये दीना भजन बिनारे ।
बाल अवस्था खेल गवायो । जब जवानी तब मान कियारे ॥१॥
लाहे कारन मूल गवायो अजहुन मिटी तेरी मन की तृष्णारे ॥२॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो पार उतर गये संत जनारे ॥३॥

स्थायी

ग म ग ऽ रे | सा रे सा नीं सा रे ग | ऽ प म
बी त ग ये | दी ना | भ ज
१ २ + ४ १ २ + ४ १ २

ऽ ग़ ऽ रे | सा रे सा ऽ | ऽ ग़ म ग़ ऽ रे ||
ऽ न ऽ बी | ना ऽ रे ऽ | ऽ बी त ग ऽ ये ||
\+ ४ १ २ + ४ १ २ + ४

अन्तरा

सा सां सां सां सां | नी ध नी सां नी ध़ प | प प
बा ले अ व स्था | खे ऽ ल ग वा ऽ यो | ज ब
१ २ + ४ १ २ + ४ १

ध प ऽ प ध़ नी | ध़ प म म म प म प | ध़ प
ज वा ऽ नी त ब | मा ऽ न की या ऽ रे ऽ | ऽ बी
२ + ४ १ २ + ४ १ २

म ग़ ऽ रे ||
त ग ऽ ये ||
\+ ४

राग मालकंस

यह भैरवी थाट का राग है। गंधार, धैवत और निषाद कोमल लगते हैं। रे और प वर्ज्य हैं। इसलिए जाति औडव-औडव है। इसमें मध्यम स्वर मुक्त और महत्त्वपूर्ण है। प्रकृति गंभीर है। गंधार, धैवत और निषाद आंदोलित हैं। वादी मध्यम और संवादी षड्ज है। गाने का समय रात्रि का तीसरा प्रहर है।

आरोह:—नि़् सा, ग् म, ध्, नि् सां।

अवरोह:—सां नि् ध्, म, ग्मग् सा।

पकड:—ग्म, ध् नि् ध् म, ग् सा।

आलाप

(१) सा, धं् निं् सा, निं् सा, धं् निं् सा ग्, सा, सा, धं् निं् धं् मं, धं् निं् सा।

(२) निं् सा, धं् निं् धं् सा, ग् सा, म, ग् सा, धं् निं् सा म, ग् म ग् सा, म ग्, म ग् सा, धं् निं् सा।

(३) सा म, म ग्, म ग् सा, धं् निं् सा म, ग् म ध्, म, ध् म नि् नि् ध् म, ध् म ग्, सा ग् म ध् म ग्, म ग्, निं् सा धं् निं् सा।

(४) धं् निं् सा म, म, ग्, म ध्, म ध् नि्, ध् म, ध् म ग्, म ध् नि् सां, सां नि् ध् नि् सां, सां ध् नि् ध् म, नि् ध्, म ग्, म ध्, म ग्, ग् म ग्, सा ग् म ग्, सा, धं् निं् सा।

(५) मग॒, म ध॒ नि॒ सां, ध॒ नि॒ सां, नि॒ सां, नि॒ ध॒, म ध॒ नि॒ सां, गं॒ सां, नि॒ सां, नि॒ ध॒, म ध॒ नि॒ ध॒, म ग॒, नि॒ ध॒, म ध॒ म ग॒ गं॒, सां नि, ध, म ध॒ सां नि॒ ध॒, म नि॒ ध॒, ध॒, म ग॒ म ग॒, सा, निं॒ निं॒ धं॒ मं धं॒ सा।

(६) निं॒ सा ग॒ म ध॒ नि सां, ध॒ नि॒ ध॒ सा, नि॒ सां, नि, गं॒ सां ध॒ नि॒ सां गं॒, सां नि॒ ध॒ नि॒ सां, ध॒ नि॒ सा, सां नि॒ ध॒, म ध॒ नि॒ सा, ग॒ म ध॒ नि॒ सां, म ग॒, ध॒ म, नि॒ ध॒, सां, ध॒ नि॒ ध॒ म, ग॒ म ग॒ सा।

(७) सां, नि॒ सां, सां नि॒ ध॒ म ध॒ नि॒ सां, ध॒ नि॒ सा, ध॒ नि॒ सां गं॒, सां नि॒ सां गं॒, मं, गं॒ सां, सां मं, गं॒ सां, ध॒ नि॒ सां मं, गं॒, गं॒, मं, गं॒ सां, गं॒ सां, नि॒ सां, ध॒ नि॒ ध॒ सां, म ध॒ नि॒ सां, नि॒ ध॒ म, मं, गं॒ सां, सां, नि॒ ध॒ म ध॒ नि॒ सां, नि॒ ध॒, म ग॒, ग॒ म, ग॒ सा ग॒ म, ग॒ सा, धं॒ निं॒ सा।

तानें

(१) निं॒ सा ग॒ सा, निं॒ सा ग॒ म ग॒ सा, निं॒ सा ग॒ म ध॒ म ग॒ सा, निं॒ सा ग॒ म ध॒ नि॒ ध॒ म ग॒ सा, निं॒ सा ग॒ म ध॒ नि॒ सां नि॒ ध॒ म ग॒ सा, निं॒ सा ग॒ म ध॒ नि॒ सां गं॒ सां नि॒ ध॒ म ग॒ सा, निं॒ सा ग॒ म ध॒ नि॒ सां गं॒ मं गं॒ सां नि॒ ध॒ म ग॒ सा।

(२) निं॒ सा ग॒ सा ग॒ म ग॒ सा, निं॒ सा ग॒ सा ग॒ म ध॒ म ग॒ सा, निं॒ सा ग॒ सा ग॒ म ध॒ नि॒ ध॒ म ग॒ सा, निं॒ सा ग॒ सा ग॒ म ध॒ नि॒ सां नि॒ ध॒ म ग॒ सा, निं॒ सा ग॒ सा ग॒ म ध॒ नि॒ सां गं॒ सां ध॒ नि॒

म ग् सा, नि् सा ग् सा ग् म ध् नि् सां गं् मं गं्
सां नि् ध् म ग् सा।

(३) सां नि् ध् म ग् सा, सां गं् सां नि् ध् म ग् सा,
सां गं् मं गं् सां नि् ध् म ग् सा, मं—गं् सां नि्
ध् म ग् सा, गं्—सां नि् ध् म ग् सा, सां—नि् ध्
म ग् सा।

(४) नि् सा ग् म ग् सा ग् म ध् नि् ध् म ग् म ध् नि्
सां नि् ध् म ग् सा, ग् म ध् म ग् म ध् नि् ध्
म ग् म ध् नि् सां गं् सां नि् ध् म ग् सा, ध् नि् सां
नि् ध् नि् सां गं् सां नि् ध् नि् सां गं् मं गं् सां
नि् ध् म ग् सा।

(५) म म ग् म ग् सा, ध् ध् म ध् म ग् सा, नि् नि्
ध् नि् ध् म ग् सा, सां सां नि् सां नि् ध् म ग् सा,
गं् गं् सां गं् सां नि् ध् म ग् सा, मं मं गं् मं गं्
सां नि् ध म ग् सा।

(६) ग् म म ग् म म ग् म म ग् सा, म ध् ध् म ध् ध्
म ध् ध् म ग् सा, ध् नि् नि् ध् नि् नि् ध् नि् नि् ध् म ग्
सा, नि् सां सां नि् सां सां नि् सां सां नि् ध् म ग् सा, सां
गं् गं् सां गं् गं् सां गं् गं् सां नि् ध् म ग् सा, गं् मं मं
गं् मं मं गं् मं मं गं् सां नि् ध् म ग् सा।

(७) नि् सा ग् म ध् नि् सां नि् ध् म ग् सा, नि् सा ग् सा ग् म
ध् नि् सां गं् सां नि् ध् म ग् सा, सां गं् मं गं् सां नि् ध् म ग्
सा, नि् सा ग् म ध् म ग् म ध् नि् सां नि् ध् नि् सां गं् मं
गं सां नि् ध् म ग् सा, म म ग् म ग् सा, ध् ध् म ध् ध्

म ध॒ ध॒ म ग॒ सा, सां सां नि॒ सां नि॒ ध॒ म ग॒ सा, गं॒ गं॒ सां
गं॒ गं॒ सां गं॒ गं॒ सां नि॒ ध॒ म ग॒ सा, मं मं गं॒ मं गं॒ सां नि॒ ध॒
म ग॒ सा, नि॒ सा ग॒ म ध॒ ग॒ म ध॒ नि॒ सां ध॒ नि॒ सां गं॒ मं
गं॒ सां नि॒ ध॒ म ग॒ सा ।

राग—मालकंस—झपताल

स्थायी

सां ऽ सां नि॒ ध॒ मध॒ नि॒ ध॒ म | ग॒ ग॒ म ध॒ म ग॒म निसा सा |
१ ३ + ८ १ ३ + ८
निसा धं॒ नि॒ सा म ग॒ मध॒ म | ग॒ म ध॒ नि॒ सां गं॒ सां नि॒ धम ||
१ ३ + ८ १ ३ + ८

अंतरा

ग॒ ग॒ मधम सां ऽ नि॒ सां सां | नि॒ सां ध॒नि॒ सां मंगं॒ मं गं॒ सां |
१ ३ + ८ १ ३ + ८
गं॒ गं॒ नि॒ सांनि॒ ध॒ध॒नि॒ ध॒म | ग॒ ग॒ मग॒सा निसागम धनि॒ सां
१ ३ + ८ १ ३ + ८
ध॒ नि॒ ||

राग मालकंस—तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

मालकंस को रूप बखानत, सब सुर कोमल मधुर लगावत ॥
औडव जाति हीन रिप भाखत, सम वादी संवादी संमत ।
गान-समय उत्तर नित संमत, गमधनिसांनिधमगमधमगमगसा ॥

पं० खरे शास्त्री

स्थायी

ग मग सानिंसाधं निं	सा म म म ग म मम ग ग ग ग मध नि
मा . लकं . सको .	रु . प ब खा . नत स ब सु रकोम ल
+ १३	१ ५ + १३

सां सां सां सां ध नि ध म
म धु र ल गा . ब त
१ ५

अंतरा

म ग ग म ध नि	सां सां सां सां ग निसां सांसां निनिनि
औ ड व जा ति ही	. न रि प भा . . ख त स म वा
+ . १३	१ ५ +

सां सां नि	ध नि ध म ग म म म निसां मं गं सां सां
दी सं .	वा . दी . स . म्म त गा न स म य उ
१३	१ ५ + १३

गं सांनि ध नि ध मम ग मध नि सांनिधम	गमधम गमगसा
त्त र नि स सं . मत ग म धनि सा नि धम	ग मधम गमगसा
१ ५ + १३	१ ५

राग मालकंस—चारताल (ध्रुपद)

आये रघुवीर धीर लंकधीश अवध मान।
संग सखा अंगद सुग्रीव और हनुमान॥
रहस रहस गावत युवती जग बंधन विधान।
देव कुसुम बरसत घन जाके रहे नभ विमान॥

स्थायी

सा ऽ सा ऽ ध़ नि़ सा म म ग़ म म | म ऽ
आ · ये · र घु वी · र धी · र | लं ·
१ + ५ + ९ ११ १

म म ऽ म ध़ म म ग़ ऽ ग़ | ग़ ऽ म ध़
क धी · श अ व ध मा · न | सं · ग स
+ ५ + ९ ११ १ +

नि़ सां सां ऽ ग़ सां नि़ ध़ | म ध़ नि़ ध़ म ऽ
खा · अ · ग द सु ग | री · · व श्रो ·
५ + ९ ११ १ + ५

म ग़ ग़ म ग़ सा सा ||
र ह नु · मा · न ||
+ ९ ११

अन्तरा

ग़ ग़ म ध़ ध़ नि़ सां ऽ सां सां नि़ नि़ |
र ह स र ह स गा · व त यु व |
१ + ५ + ९ ११

सां ऽ सां सां सां ऽ नि़ ध़ नि़ ध़ म म |
ती · ज ग वं · ध न वि धा · न |
१ + ५ + ९ ११

सां ऽ म ग़ सां सां नि़ सां ग़ सां नि़ ध़ | म ध़ म ध़ नि़
दे · व कु सु म ब र स त घ न | जा . के · ·
१ + ५ + ९ ११ १ +

ध़ म ग़ ग़ म ग़ सा सा ||
र हे न भ वि सा . न ||
५ + ९ ११

राग मालकंस—सुरफाक ताल

ॐकार हर हर शंकर महादेव ।
सकल-कला पूरन पूरन करत आस ॥
सब दुख हरत द्वन्द्व सोहत जटा गंग ।
राजत गले मुण्ड माल संग फणिधर ॥

स्थायी

सा सां ऽ नि़ ध़ म ग़ ग़ नि़ सा | सा नि़ ध़ नि़ सा
ॐ . . का . र ह र ह र | शं . क र म
१ + ५ ७ + १ + ५

नि़ नि़
म ऽ ग़ म म | ग़ ग़ म ध़ नि़ सां सां ऽ सां सां | सां ऽ
हा . दे . व | स क ल क ला . पू . र न | पू .
७ + १ + ५ ७ + १

नि़ ध़ ग़ ग़ म नि़ सा सा ||
र न क र त आ . स ||
+ ५ ७ +

अंतरा

नि़
ग़ ग़ म ध़ नि़ सां सां नि़ सां सां | सां ऽ
स व दु ख ह र त द्व . न्द्व | सो .
१ + ५ ७ + १

मं
सां नि॒ ध॒ ध॒ नि॒ ध॒ म म | सां नि॒ ऽ ऽ सां ग॒
ह त ज टा . गं . ग | गा . . . ज त
\+ ५ ७ + १ +

मं मं
ग॒ ग॒ म ग॒ सां सां | सां ऽ नि॒ ध॒ ऽ म
ग ले . मु . एड | मा . ल सं . न
५ ७ + १ + ५

ग॒ म ग॒ सा ||
फ णी ध र ||
७ +

राग मालकंस—झपताल

सा सुन्दर वदन के मंदर दीपन।
मनरंजन कहे जात छिपेरे॥
नख शिख सुन्दरता कहे लाजत।
अभ्र ही में मुखचन्द्र चकेरें॥

स्थायी

नि॒
नि॒ सा ग॒ म ध॒ नि॒ सां ध॒ नि॒ सां सां सां नि॒ ध॒ ऽ
सा . . . . सु न्द र व . .
१ ३ + ८

नि॒
नि॒ ध॒ ऽ म | नि॒ ऽ ध॒ नि॒ सां ऽ ऽ ध॒ म ग॒ म
द . . न | के . . मं . . . द र दी .
१ ३ + ८

नि॒
ग॒ सा सा | ध॒ नि॒ सां मं गं॒ ऽ सां गं॒ मं गं॒ मं
प . न | म न रं . . . . . ज . .
१ ३ +

गं॒ सां नि॒ सां नि॒ ध॒ म | ध॒ नि॒ ऽ ध॒ नि॒ सां ऽ ऽ
न . क . . हं . | जा . . . त . . .
८ १ ३

सां सां गं॒ सां नि॒ सां नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ म ध॒ म ग॒ म ग॒
छि पे . . . रे . . . .
+ ८

सा ग॒ सा नि॒ सा ||
. . . . . ||

अंतरा

म नि
ग॒ म ध॒ नि॒ ध॒ नि॒ सां ऽ ऽ नि॒ सां ऽ सां सां |
न ख शि . ख सु . . . . . . न्द र |
१ ३ + ८

नि॒ नि॒
नि॒ सां ऽ नि॒ गं॒ सां ऽ ध॒ म ध॒ नि॒ ध॒ म ऽ |
ता . . . क . . हे . ला . ज त . |
१ ३ + ८

सां नि॒ ऽ सां मं गं॒ सां गं॒ सां गं॒ मं गं॒ सां
अ . . भ्र . . ही . . . . में .
१ ३ +

नि सां ऽ ध म | ध नि ऽ ध नि सां ऽ ऽ सां
मु . . ख . | चं . . . द्र . . . च
८ १ ३

सां गं सां नि सां नि ध नि ध म ध म ग म ग सा
कं . . . रे . . . .
+ ८

ग सा नि सा ||
. . . . ||

राग मालकंस—तिलवाडा (ख्याल)

कबहो कपी राघो आवेंगे।
मेरे नैना चकोर पीति बसे, राका शशी मुख देखे न आवेंगे॥

स्थाई

, , ग सा ध ध नीं सा | म ऽ ऽ ग म ध म ध नी
. . क ब हो . . क | पी . . रा घो . . . .
१३ १ ५

ध म ग ऽ ग म नीं सा सा नीं सा ऽ ||
आ . . . वें . . . गे . . . ||
+ १३

अंतरा

, , , ग म नी ध नी सां ऽ ऽ ऽ ऽ नी सां ऽ | सां ऽ
. . . मे रे . . नै . . . . | ना .
+ १३ १

म म
नी नी सां सां नी सां ऽ ऽ ऽ ध॒ नी ध॒ म ग॒ ग॒ नी सां
च को . र प्री . . . ती . ब से . . रा .
५ +

ग॒ मं ग॒ सां ध॒ नी ध॒ | म ग॒ धं नीं सा ग॒ म ध॒ नी नी
. . का . शशि मु | ख . दे . खे . . न . आ
१३ १ ५

ध॒ म ग॒ ध॒ नी ध॒ म ग॒ ग॒ म नीं सा सा नीं सा ऽ ||
. . . आ . . . . वें . . . गे . . .. . ||
+ १३

राग मालकंस—तीनताल (मध्यलय)

हम खोज-खोज गये हार हार । गिरिवन निकुंज घर बार बार ॥
कौनसी नगरी बसे हो मेरे मोहन । आऊँ कहां मेरे प्रेम निकेतन ।
हुई देर अब खोल द्वार ॥

पं० रामनरेश त्रिपाठी

स्थायी

मम मग॒ म ग॒ सा निं॒साधं॒निं॒ | सा मम धग॒ मम ग॒ग॒ मध॒
हम खो. . ज खो . जग ये | हा . र हा. . र गिरि वन
+ १३ . १ ५ +

नि॒ ध॒नि॒ सांनि॒ सांसां | ध॒नि॒ ध॒ ग॒मम ||
नि कुं. . ज घ र | बा. र बा. र ||
१३ १ ५

अंतरा

ग ग ग ग	ममध नि	सां सां सां गं नि	सांसांसां	निनिनि	सांसां
कौनसीन	गरीव से	हो मे रे मो.	. ह न	आऊँक	हा मे
+	१३	१ ५		+	१३

सां	धनि धम ग मम म सां मं ऽ गं सांसांसांसां	धनिध ग मम
रे	प्रे. मनिके .तन हु ई . दे . र अ व	खो. लोहा . र
	१ ५ + १३	१ ५

राग मालकंस—तीनताल (मध्यलय)

तराना

तोम् तनन तन देरेना तक्धारे तारे दानि, तदानि नाद्रे तुंद्रे तदरे दानि ॥ यारे मो यलि यला यला लाले तन देरेना तन देरेना तदानि धा किटतक धुमकिट धेत्ता क्डान् धा क्डान् धा क्डान् धा ॥

स्थायी

सां	सां	नि	ध	म	ग	सा	सा	सा	सा	म	ऽ	म	म	म	म	म
तों	त	न	न	त	न	दे	रे	ना	त	क्धा	·	रे	ता	रे	दा	नि
	+				१३				१				५			

ध	म	ग	ग	ग	म	ध	नि	सां	सां	सां	ध	ऽ	नि
त	दा	·	नि	ना	द्रे	तुं	द्रे	त	द	रे	दा	.	नि
+				१३				१			५		

अंतरा

सां सां सां ध् नि् ध् म ऽ म | सां सां सां नि् नि् सां
या रे मो य लि य ला . य | ला ला ले त न दे
५ + १३ १ +

सां गं् सां सां सां सां ध् नि् | ध् म ऽ म सा सा सा सा
रे ना त न दे रे ना . | त दा . नि धा कि ट त
+ १३ १ ५

सा म म म म म म म म सां सां सां | ऽ सां
क धु म कि ट त क धे त्ता क्डान् धा क्डान | ऽ धा
+ १३ १

ध् नि् सां ||
क्डान् ऽ धा ||
५

ईश-प्रार्थना

जय जगदीश हरे।
भक्त जनों का संकट छिन में दूर करे।
जो ध्यावे फल पावे दुख विनसे मन का ॥धृ॥
सुख संपत्ति गृह आवे कष्ट मिटे तन का।
मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी।
तुम विन और न दूजा आस करूं जिसकी ॥१॥
तुम पूरण परमात्मा तुम अंतर्यामी।
पार ब्रम्ह परमेश्वर तुम सब के स्वामी।
तुम कृपा करुणा के सागर तुम पालन करता।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भरता ॥२॥
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपती।
किस विध मिलूं गुसाईं तुमको मैं कुमती।
दीन बंधु दुख हरता ठाकुर तुम मेरो।
आपने हाथ उठावो द्वार पर्‍यो तेरो।
विषय विकार मिटावो पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ावो संतन की सेवा ॥३॥

स्थायी

म प ध नि सां नि् ध प म ग रे ग प | म ऽ रे ग रे
जय . . . ज ग दी . . . श ह | रे . . . .
+ १३ १ ५

सा ऽ , सा ग म प ध म प | ' म ध नि प ध म प ऽ
. . . भ क्त ज नों का . . | . सं क ट छि न में . .
+ १३ १ ५

म ग रे ग प म ऽ | प ग सा ग म प ध म प ग म
दू . . र क रे . | जो ध्या वे फ ल पा वे . . दु ख
+ १३ १ ५ + १३

प ध | सां रें गं रें सां नि सां नि ध प म ग म ||
बि न | सं . . म न का . . . . ||
१ ५

अंतरा (१)

' सां सां सां नि ऽ ध प | म ग रे ग पधसां ऽ ऽ ध सां सां सां
सु ख सं . . प ति | गृ ह . आ . वे . . . क ष्ट मि टे
+ १३ १ ५ + १३

रें गं | रें सां नि सां नि ध प ध सां नि धप पध मम गरेग | सा ऽ
. . | त न का . . . . मा . . तपिता . तुम मे . . | रे .
१ ५ + १३ १

सा सा गम प पप धम प ऽ | ग म धध सांनि ऽ धनि धप धप ग
श र णागहूँ किसकी . . . | तु म बिनऔ . . रन दू . . जाआ
५ + १३ १ ५ + १३

पध | सां रें गंरें सां नि सां निध पम गम ||
सक | रूँ . . जिस की . . . . . . ||
१ ५

अंतरा (२)

सा सा ग गम पप | पध पध नि ऽ धप पप ध सां सां सां सां रें गं |
तु म पू रणपर | मा त्मा . . . . तुम अं . त र या . . |
+ १३ १ ५ + १३

ऽ रेंसां ऽ सां धनि ऽ ध पधपग म ग रे | सारे गप मग रेग सा ऽ
. मी . . पा र ब्र . म्ह पर मे . . श्वर | तुम सब के . स्वा . मी .
१ ५ + १३ १ ५ +

सा सा रे म | ऽ पप पप पधनि ध प ऽ ऽ | प प ध सां सां
तु म कृ पा | . करु णाकेसा . . ग र . . | तु म पा . ल
१३ १ ५ + १३ १ ५

सां सां सां सां रें गं ऽ रेंमं गंरें सां ऽ | रेंनिसां नि ध प म ग
न क र ता . . . . | मैं . . मू र ख ख ल
+ १३ १ ५

रे ग सा ग प ध | सां रें गं रें सां नि सां नि ध प
का . मी कृ पा क | री . . भ र ता . . . .
+ १३ १ ५

म ग म ||
. . . ||

अंतरा (३)

सा सा ग ग म रे | ग म प ध ग प म ग रे ग
तु म हो ए क अ | गो . च र स व के प्रा ण प
+ १३ १ ५ +

सा ऽ | ग म प प प प प प ध नि नि प प ध रें |
ती . | कि स वि ध मि लूं गु सां . . ई तु म को . |
१३ १ ५ + १३